BLM Academy

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

Wish You all a Very Happy New Year

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तद् लक्ष्यम्

Admission Open
For The Academic Session 2025-26
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Streams: Science, Commerce & Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com

Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand

blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्मुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

मई 2025

उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

₹:40

किस्सा कश्मीर का

थर थर कांपी एटमी पावर

अब पाकिस्तान एटमी पावर के नाम पर दुनिया को ब्लैकमेल नहीं कर पाएगा, ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है, आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी, वैसे भी ये युद्ध नही था सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर था, पाकिस्तान पर जो भी प्रतिबंध लगाए गए हैं वो जारी रहेंगे।

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com

Web: uttaranchaldeep.com

मासिक
उत्तरांचल दीप पत्रिका
वर्ष:8, अंक 1, मई 2025

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
लखनऊ : पारस अमरोही
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थत्यूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आरएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीताल-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

पाकिस्तान में रहने वाला सैफुल्लाह खालिद जम्मू-कश्मीर में लश्कर और टीआरएफ की आतंकवादी गतिविधियों का मेन ऑपरेटर है, सैफुल्लाह को सैफुल्लाह कसूरी नाम से भी जाना जाता है, वह लश्कर-ए-तैयबा का डिप्टी चीफ है और खुंखार आतंकी हाफिज सईद का बेहद करीबी है।

पर्यटन
स्वर्ग से सुंदर गोरसन बुग्याल
औली से सिर्फ तीन किलोमीटर के फासले पर हरे-भरे चरागाहों की बड़ी भूमि है जो शंकुधारी जंगल और ओक के वृक्षों से घिरी हुई है ...

ऑपरेशन सिंदूर
आतंक के ठिकाने तबाह
देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला किया है, निहत्थे लोगों पर हमला किया है ...

आतंकवाद
निहत्थे हिंदुओं पर कायराना हमला
खूबसूरत बैसरन में वो हुआ जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी, कुछ ही पलों में बैसरन लाशों ...

पाकिस्तान

पाक सेना की बगावत
पाक सेना के अधिकारी का कहना है कि आर्मी चीफ असीम मुनीर के बयान की वजह से ही पहलगाम में आतंकी हमला हुआ ...

साकेत अग्रवाल

हमला पाक में सदमा कांग्रेस में

भारतीय सशस्त्र सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' चलाकर पाकिस्तान और पीओके में स्ट्राइक कर नौ आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर पहलगाम हमले का बदला ले लिया है। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि उनकी पार्टी सरकार और सेना के साथ है। उनके हर कदम का समर्थन करती है। खड़गे ने कहा कि इस मुद्दे पर हमारा कोई मतभेद नहीं है, सब एकजुट होकर लड़ेंगे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सेना की कार्रवाई की सराहना करते हुए कहा कि पूरे देश को भारतीय सेना पर गर्व है। हम अपने जांबाज सैनिकों के साहस, दृढ़ संकल्प और राष्ट्रभक्ति को सलाम करते हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बड़े बेमन से कहा कि सशस्त्र बलों पर उन्हें बहुत गर्व है और वह उनके साथ खड़े है। उन्होंने कहा 'सरकार जो कदम उठा रही है, उसका हम समर्थन करते हैं। हम अपने जवानों की राष्ट्रभक्ति को सलाम करते हैं।' जिस समय राहुल गांधी ने टीवी चैनलों पर ये चंद लाइनें बोली उस वक्त उनके चेहरे की हवाइयां उड़ी हुई थी। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के हाव-भाव और बॉडी लैंगुएज देख कर ऐसा नहीं लग रहा था कि वो सेना के पराक्रम की किसी दबाव में प्रसंशा कर रहे हैं। क्योंकि ये वही कांग्रेस है जिसने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के सबूत सेना से मांगे थे। इसी कांग्रेस के नेताओं ने कहा था कि एयर स्ट्राइक में सेना कुछ पेड़ गिरा कर लौट आई है, यह वही पार्टी है जिसके उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय राफेल के खिलौने पर नीबू मिर्च बांध कर सरकार और सेना की मजाक बना रहे थे। ये वही कांग्रेस है जिसके नेता राशिद अल्वी ऑपरेशन सिंदूर का स्वागत करते हुए सेना पर तंज कसते हैं कि हमें उम्मीद थी कि सेना पीओके पर हमला कर उसे वापस ले लेती। हम चाहते थे कि पाकिस्तान के आर्मी चीफ को भी जंजीरों में बांधकर दिल्ली लाती। इसी कांग्रेस के कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया और उनके मंत्री आरबी तिम्मापुर ने पहलगाम हमले को लेकर बयान दिया था कि उन्हें नहीं लगता कि आतंकियों ने गोली मारने से पहले धर्म पूछा होगा। सीएम सिद्धारमैया ने तो यहां तक कहा था कि वो पाकिस्तान के साथ युद्ध के पक्ष में नहीं है। सीद्धारमैया को शायद ये नहीं पता कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर उनकी कैबिनेट के किसी मंत्री ने पाकिस्तान से युद्ध का जिक्र तक नहीं किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह ने सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी थी। पीएम मोदी ने कहा था कि आतंकवाद की बची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। आतंकवाद का पालने वालों को पाताल से भी खोज कर लाएंगे। फिर कर्नाटक के कांग्रेसी सीएम सिद्धारमैया को पाकिस्तान से युद्ध ख्वाब कहां से दिखाई दे गया। 11 जून 2017 को वरिष्ठ कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने भारत के सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत को सड़क का गुंडा कहा था। ये वही बेशर्म कांग्रेस है जिसने थाली में सजाकर पीओके पाकिस्तान को दे दिया था। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ा और संघर्ष की स्थिति पैदा हुई तो एक बार फिर सबूत मांगने वाला गैंग सक्रिय हो गया। भारतीय सेना के संयुक्त ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने मीडिया से बातचीत में कबूला कि पाकिस्तान के हिस्से वाले पंजाब और पीओके के शहरों पर मिसाइल हमलों में कम से कम 26 लोगों की मौत हुई है और 46 लोग घायल हुए हैं। यदि पाकिस्तान सेना का प्रवक्ता हमलों नकार देता तो निश्चित ही कांग्रेस अपनी फितरत के मुताबित एक बार फिर सेना और सरकार से हमलों के सबूत मांग रही होती। खैर इस बार कांग्रेस के सबूत मांगने की मंशा पर पाकिस्तान ने पानी फेर दिया। 7 मई को कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के बाद जब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और संसद में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी मीडिया के सामने आए तो उनकी बॉडी लैंगुएज बता रही थी इस बार भारत की फौज पर सवाल उठाने का मौका उनके हाथ से निकल गया।

ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी और पाकिस्तान के खुद कबूलनामे के बाद कांग्रेस मजबूरी अथवा दबाव में भारतीय सेना और सरकार का समर्थन कर रही है। भारतीय सेना के पराक्रम पर गर्व कर रही है। भारतीय सेना की पाकिस्तान पर की गई कार्रवाई की सराहना कर रही है। ये वही कांग्रेस है जिसके नेता सवाल उठा रहे थे कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पाकिस्तान से बदला लेने के बजाये उद्घाटन और चुनावी सभाएं कर रहे हैं। भला जिस कांग्रेस के सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाते हुए पूछते हैं कि कहां स्ट्राइक हुई थी? कहां बंदे मारे गए थे? पहलगाम हमले के बाद चरणजीत सिंह चन्नी का यह बयान आया था। जिस कांग्रेस के नेता आर्मी चीफ को सड़क का गुंडा बताते हों उस कांग्रेस से सेना के लिए सराहना, समर्थन, पराक्रम पर गर्व जैसे शब्द सुनकर अजीब लग रहा है, यकीन नहीं हो रहा कि कांग्रेस के शब्द कोष में ऐसे शब्द भी हैं, क्योंकि 11 साल से सत्ता से बाहर बैठी कांग्रेस के अधिकांश नेता बोखलाए रहते हैं, इसलिए सरकार का विरोध करते-करते वो भारत का विरोध करने लगते हैं। कांग्रेस का यह पुरानी फितरत है। इस तरह के बयान न केवल सेना का मनोबल तोड़ते हैं, बल्कि पाकिस्तान जैसे आतंक परस्त देशों को फायदा पहुंचाते हैं। कांग्रेस की एक और फितरत है कि उसके नेता पहले आपत्तिजनक बयान देते हैं और विवाद होने पर कांग्रेस नेता की निजी राय बताकर पल्ला झाड़ लेते हैं।

राष्ट्रपति से ऊपर है क्या न्यायपालिका ?

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने न्यायिक अतिक्रमण के प्रति चेतावनी दी और कहा हमारे पास ऐसे जज हैं जो कानून बनाएंगे, कार्यपालिका की तरह काम करेंगे, सुपर संसद के रूप में काम करेंगे और उनकी कोई जवाबदेही नहीं होगी, क्योंकि देश का कानून उन पर लागू नहीं होता है।

होली के दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस वर्मा के आवास में आग लगने के बाद जले हुए नोटों से भरे बोरे सामने आने और संशोधित वक्फ कानून को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दिए जाने के बाद से न्यायपालिका सवालों के घेरे में हैं। 8 अप्रैल को जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की बेंच ने तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल केस की सुनवाई के दौरान कहा कि राज्यपाल को विधानसभा से पारित हो चुके किसी भी बिल को मंजूर करने, रोकने या फिर राष्ट्रपति को भेजने का फैसला डेडलाइन के भीतर करना होगा। अदालत ने कहा कि राष्ट्रपति किसी बिल को राज्य विधानसभा को संशोधन या पुनर्विचार के लिए वापस भेजते हैं। विधानसभा उसे फिर से पास करती है, तो राष्ट्रपति को उस बिल पर फाइनल डिसीजन लेना होगा और बार-बार बिल को लौटाने की प्रक्रिया रोकनी होगी। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रपति को बिल मिलने के 3 महीने के भीतर फैसला लेना अनिवार्य होगा। यदि देरी होती है, तो देरी के कारण बताने होंगे। शीर्ष अदालत ने तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि अगर राज्यपाल डेडलाइन का पालन नहीं करते हैं तो उनका फैसला न्यायिक समीक्षा के दायरे में आ जाएगा। राज्यपाल संविधान की शपथ लेते हैं लिहाजा उन्हें किसी राजनीतिक दल की तरह काम नहीं करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट की खंडपीठ ने राज्यपाल की ओर से 10 विधेयकों को रोकने के फैसले को खारिज कर दिया। 415 पृष्ठों का फैसला सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

शीर्ष अदालत के इस फैसले के बाद उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट की कड़ी आलोचना की उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत में कभी भी ऐसा लोकतंत्र नहीं रहा, जहां न्यायाधीश किसी लॉ मेकर, कार्यपालिका और यहां तक कि सुपर संसद के रूप में काम करें। सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसले में राष्ट्रपति को निर्देश दिया है, जरा सोचिए हम कहां जा रहे हैं? देश में क्या हो रहा है? संवैधानिक सीमाओं के उल्लंघन पर चिंता जताते हुए उपराष्ट्रपति ने राष्ट्रपति की शपथ की याद दिलाई और इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्रपति का स्थान बहुत ऊंचा है, जबकि अन्य लोग सिर्फ संविधान का पालन करने की शपथ लेते हैं। 'हम ऐसी स्थिति नहीं बना सकते जहां आप भारत के राष्ट्रपति को निर्देश दें वो भी किस आधार पर?' संवैधानिक प्रावधानों में ऐसे मामलों में न्यायपालिका के पास एकमात्र अधिकार 'अनुच्छेद 145(3) के तहत संविधान की व्याख्या करना' है और वह भी पांच या उससे ज्यादा जजों की बेंच द्वारा। अनुच्छेद 142 लोकतांत्रिक ताकतों के खिलाफ एक परमाणु मिसाइल बन गया है, जो न्यायपालिका के लिए 24×7 उपलब्ध है। भारत ने इस दिन के लिए लोकतंत्र की कभी कल्पना नहीं की थी, जहां राष्ट्रपति से डेडलाइन के तहत फैसले लेने के लिए कहा जा रहा है। जगदीप धनखड़ ने न्यायिक अतिक्रमण के प्रति चेतावनी दी और कहा हमारे पास ऐसे जज हैं जो कानून बनाएंगे, कार्यपालिका की तरह काम करेंगे, सुपर संसद के रूप में काम करेंगे और उनकी कोई जवाबदेही नहीं होगी, क्योंकि देश का कानून उन पर लागू नहीं होता है। उपराष्ट्रपति ने जस्टिस यशवंत वर्मा के घर कैश मिलने का मामला उठाते हुए कहा कि नई दिल्ली में एक जज के घर पर एक घटना घटी, सात दिन तक किसी को इस बारे में पता नहीं चला, हमें खुद से सवाल पूछना चाहिए, क्या इस देरी को समझा जा सकता है? क्या इसे माफ किया जा सकता है? क्या इससे कुछ बुनियादी सवाल नहीं उठते? इस मामले की जांच तीन जजों की कमेटी कर रही है, लेकिन क्या यह कमेटी भारत के संविधान के अधीन है? क्या तीन जजों की इस कमेटी को संसद से पारित किसी कानून के तहत कोई मंजूरी मिली हुई है? कमेटी ज्यादा से ज्यादा सिफारिश कर सकती है।

सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश के बाद वरिष्ठ वकील अश्वनी उपाध्याय और विष्णु शंकर जैन ने न्यायपालिका पर सवाल उठाते हुए कहा कि राष्ट्रपति की डेड लाइन तय करने वाली न्यायपालिका क्या तीन महीने में न्याय देती हैं। पहले न्यायपालिका तय करे कि वो निचली अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक तीन महीने में मुकदमों की सुनवाई पूरी कर फैसला सुनाएंगी। वरिष्ठ वकीलों का कहना है कि अदालतों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए, जो अदालत तीन महीने में फैसला न सुनाए उसके खिलाफ भी विभागीय कार्रवाई होनी चाहिए। क्योंकि न्यायपालिका की मनमानी से देश भर की अदालतों में सवा पांच करोड़ से ज्यादा मुकदमे निचली अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में लंबित हैं। सुप्रीम कोर्ट में 60 हजार, हाईकोर्ट्स में 58 लाख और बाकी निचली अदालतों में हैं। दो हाईकोर्ट में तीन मामले तो 72 साल से लंबित हैं। इनमें दो मामले कोलकाता हाई कोर्ट में दो और एक मद्रास हाई कोर्ट में लंबित है। यानी इस अवधि में कितने ही न्यायाधीश रिटायर हो गए, कितने ही वादी और प्रतिवादी दिवंगत हो चुके हैं, लेकिन न्यायपालिका से न्याय नहीं मिला है। विधि और न्याय मंत्रालय के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक सवा पांच करोड़ लंबित मामलों में साढ़े चार करोड़ यानी 85 फीसद तो जिला अदालतों में हैं। लंबित मामलों में आधे से ज्यादा मुकदमों में मुद्दई यानी वादी सरकार ही है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में ऐसा ही एक मामला 41 साल से लंबित है। एसके त्यागी और उनके साथियों पर 1984-85 में पंजाब और सिंध बैंक को धोखाधड़ी और जालसाजी कर 32 लाख रुपये का चूना लगाया था। इन 41 सालों में 11 जजों की अदालत में इस मामले की तारीख दर तारीख सुनवाई चलती और टलती रही आरोप-पत्र में शामिल 13 अभियुक्तों में से दो की मृत्यु हो चुकी हैं। धोखाधड़ी के इस मुकदमे में फैसला सुनाने वाले जज दीपक कुमार 1984 में दो वर्ष के थे जब ये मुकदमा दर्ज हुआ था। अब 41 साल की उम्र में उन्होंने इस मामले की सुनवाई की। 78 साल की उम्र में मुख्य अभियुक्त एसके त्यागी ने अपना अपराध अदालत में स्वीकार कर मामूली सजा देने की गुहार लगाई थी। लिहाजा जज दीपक कुमार ने दिन भर अदालत में खड़े रहने की सजा के साथ हरेक अपराध के लिए दस-दस हजार रुपये जुर्माना लगाकर 41 वर्ष तक चले मुकदमे का अंत किया।

सुर्खियां

विराट कोहली का टेस्ट से सन्यास

भारतीय क्रिकेट के दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी है। इस चौंकाने वाले फैसले की जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के माध्यम से दी। कोहली ने अपने भावुक पोस्ट में टेस्ट क्रिकेट के प्रति अपने जुनून, इस प्रारूप से मिली सीख और अपने 14 साल के शानदार सफर को साझा किया। विराट कोहली उन खिलाड़ियों में शामिल हैं जिनके नाम टेस्ट मैच में 5000 रन और फील्डिंग करते हुए 50 से ज्यादा कैच लेने का रिकार्ड है। कोहली एक टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले बल्लेबाज भी हैं। कोहली ने साल 2014 में एडिलेड टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने में सफलता हासिल की थी। विराट कोहली ने पहली पारी में 115 और दूसरी पारी में 141 रन बनाए थे। इस लिस्ट में कोहली के साथ विजय हजारे, सुनील गावस्कर, राहुल द्रविड़, अजिंक्य रहाणे और रोहित शर्मा का नाम भी शामिल है। कोहली के नाम टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा शतक लगाने का भी रिकॉर्ड दर्ज है। ऐसा कर कोहली ने महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर की बराबरी है। विराट ने 2014-15 में ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान चार मैचों की आठ पारियों में 4 शतक लगाए थे। जबकि सुनील गावस्कर ने ऐसा 1970-71 में वेस्टइंडीज दौरे पर किया था। वहां गावस्कर ने भी एक टेस्ट सीरीज में 4 शतक लगाए थे। विराट कोहली के एक टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा दोहरा शतक लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज हैं। कोहली ने साल 2017-18 में श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में पांच पारियों में दो दोहरे शतक लगाए थे। कोहली ने इस सीरीज में 610 रन बनाने का कमाल भी किया था। एक टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा दोहरा शतक लगाने का रिकॉर्ड ब्रैडमैन के नाम है। ब्रैडमैन ने एक टेस्ट सीरीज में तीन दोहरे शतक लगाए थे।

पाक फौज की ताकत तार-तार

भारत ने जब पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) और पाकिस्तान में प्रमुख आतंकी ठिकानों पर बमबारी की, तो पाकिस्तान ने अपनी साख बचाने के लिए झूठे प्रचार का सहारा लिया। हालांकि पाकिस्तान के ही कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बिना हिचक के पूरी बेबाकी के साथ अपनी सेना की कमजोरी बेबाकी से बता रहे थे। सोशल मीडिया पर एक पाकिस्तानी नागरिक का वीडियो वायरल हो गया, जिसमें उसने पाकिस्तानी सेना की ताकत तार-तार कर दी। वीडियो में पाकिस्तानी नागरिक कह रहा है, आधी रात को भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ 24 मिसाइल हमले किए और हैरानी की बात है सारे टारगेट पर जाकर लगे। इंडिया ने अपना टारगेट हासिल कर लिया और हम एक भी मिसाइल रोक नहीं सके। हम पूरी तरह नाकाम रहे और भारत ने अपने लक्ष्य को हासिल कर लिया। कहावत है 'घर में घुसकर मारना', और भारत ने यही काम करके दिखाया। हम भारत को रोक नहीं सके। उसने आगे कहा, आप लोग यह मत सोचें कि मैं भारत की तारीफ कर रहा हूं। आप सुनते आ रहे हैं कि ईरान ने इजरायल की ओर लक्ष्य करके हजारों मिसाइल दाग दी। लेकिन वास्तव में इजरायल में एक भी मिसाइल नहीं गिरती क्योंकि उनका डिफेंस सिस्टम बहुत मजबूत है। ईरान की केवल एक-दो मिसाइल ही मुश्किल से इजरायल में जाकर गिर पाती हैं। इजरायल के डिफेंस सिस्टम की तुलना में हमारा हाल बुरा है। हम भारत की 24 मिसाइल में से एक को भी गिरा नहीं पाए। वीडियो में पाकिस्तानी नागरिक ने अपने देश की सुरक्षा तैयारियों पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा, गनीमत यह रही कि भारत ने हमारे सैन्य ठिकानों या रिहायशी इलाकों पर हमला नहीं किया। भारत ऐसा करता तब भी हम उन मिसाइलों को रोक नहीं पाते। भारत की एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान में रात भर अफवाहों का दौर चलता रहा कि हमने भारत के विमान गिरा दिए। कई तस्वीरें वायरल होने लगीं, लेकिन मैंने खुद चेक किया तो पता चला कि सभी फोटो महीनों पुराने हैं। अंत में हमारी ओर से भारतीय विमानों को गिराने के दावे फेक न्यूज ही साबित हुए। इतनी स्पष्टता के साथ पाकिस्तानी रक्षा तंत्र की कमियों को स्वीकारने के बाद यह पाकिस्तानी व्यक्ति सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है, और उसका वीडियो काफी शेयर किया गया, क्योंकि यह पाकिस्तान के खोखले दावों और बयानबाजी की कलई खोलता है।

बेटियों का नाम सिंदूर रख दिया

पहलगाम में 22 अप्रैल को पाकिस्तान परस्त आतंकियों ने 26 निर्दोष लोगों का नरसंहार किया। आतंकियों ने चुन-चुन कर पुरुषों पर गोलियां चलाई। इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इस घटना के 15 दिन बाद भारत ने बदले की कार्रवाई के लिए ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया और पाकिस्तान व पीओके के 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। इसके बाद 'सिंदूर' शब्द नहीं, बल्कि लोगों की भावना से जुड़ गया। इसकी अनोखी मिसाल यूपी के कुशीनगर जिले में देखने को मिली। इस जिले में सिर्फ दो दिनों में जन्म लेने वाली 17 नवजात लड़कियों का नाम उनके परिजनों ने 'सिंदूर' रखा है। इन परिवारों के लिए 'सिंदूर' अब केवल एक शब्द नहीं, बल्कि गहरी भावना और देश के प्रति सम्मान का प्रतीक बन गया है। कुशीनगर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आरके शाही ने मीडिया को बताया कि उनके कॉलेज में दो दिनों में जन्मी 17 नवजात लड़कियों का नाम उनके परिजनों ने 'सिंदूर' रखा है।

कुशीनगर के भेड़िहारी गांव निवासी अर्चना शाही ने बेटी को जन्म दिया। उन्होंने और उनके परिवार ने पहले से ही अपनी बेटी का नाम 'सिंदूर' रखने का फैसला कर लिया था। उनके पति अजीत शाही ने कहा, 'सिंदूर' शब्द हमारे लिए प्रेरणा है। अर्चना शाही ने कहा कि पहलगाम हमले में कई महिलाओं ने अपने पति खो दिए। उसके बाद भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। हमे इस पर गर्व है। लिहाजा हमारे लिए अब 'सिंदूर' एक शब्द नहीं, बल्कि एक भावना है।

इसी जिले के पडरौना क्षेत्र के मदन गुप्ता के परिवार में भी इसी तरह की भावना देखने को मिला। उनकी बहू काजल गुप्ता ने बेटी को जन्म दिया और उसका नाम 'सिंदूर' रखा गया। मदन गुप्ता ने मीडिया को बताया कि जब से सेना ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया और पहलगाम में मारे गए लोगों की मौत का बदला लिया, तब से उनकी बहू की इच्छा नवजात बच्ची का नाम 'सिंदूर' रखने की थी। लिहाजा हमने नवजात बच्ची का नाम 'सिंदूर' रखा, ताकि हम न सिर्फ सेना के इस ऑपरेशन को याद रखें, बल्कि हम इस दिन को उत्साह के साथ मनाएं। पडरौना की ही प्रियंका देवी भी उन माता-पिता में शामिल हैं जिन्होंने अपनी बेटी का नाम 'सिंदूर' रखा है। उनका कहना है कि ऑपरेशन सिंदूर के प्रति उनके मन में बहुत सम्मान है इसलिए उन्होंने अपनी बेटी को यह नाम देने का निर्णय लिया। कुशीनगर जिले के ही भठही बाबू गांव के व्यासमुनि की पत्नी अपनी नवजात बेटी का नाम 'सिंदूर' रखकर गर्व महसूस कर रही हैं। उनका मानना है कि जब उनकी बेटी बड़ी होगी, तो वह इस शब्द का सही मतलब समझेगी और खुद को भारत माता के लिए कर्तव्य परायण नागरिक के रूप में प्रस्तुत करेगी।

नेपाल सीमा के मदरसों पर एक्शन

उत्तर प्रदेश में नेपाल सीमा पर बनाए गए अवैध धार्मिक स्थलों पर यूपी सरकार ने बड़ा एक्शन लिया है। यूपी सरकार ने इसे लेकर बयान भी जारी किया है। इसमें नेपाल सीमा से सटे जिलों में सरकारी और निजी जमीनों पर अवैध रूप से बने धार्मिक स्थलों पर कार्रवाई की है। इसमें पिछले कुछ दिनों के अंदर सैकड़ों मदरसों, मस्जिदों, मजारों और ईदगाह को चिह्नित कर उन्हें सील करने अथवा ध्वस्थ करने की कार्रवाई की गई है। राज्य सरकार की ओर से जारी किए गए बयान के मुताबिक सीएम योगी के निर्देश पर यह एक्शन लिया गया है। राज्य सरकार द्वारा जारी बयान के अनुसार, प्रदेश के पीलीभीत, श्रावस्ती, बलरामपुर, बहराइच, सिद्धार्थनगर और महराजगंज जिलों में प्रशासन द्वारा अवैध धार्मिक स्थलों को चिह्नित कर उन पर कार्रवाई की है। यूपी के ये सभी जिले नेपाल की सीमा से सटे हुए हैं। बयान में कहा गया है कि सीएम योगी आदित्यनाथ के साफ निर्देश दिए हैं कि किसी भी धर्म के नाम पर अवैध रूप से जमीन का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके अलावा नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ सख्त एक्शन किया जाएगा। सरकारी बयान के मुताबिक श्रावस्ती में 10 व 11 मई को सार्वजनिक और निजी भूमि पर अवैध रूप से निर्मित 104 मदरसों, एक मस्जिद, पांच मजारों और दो ईदगाहों को चिह्नित किया गया। इन सभी को नोटिस देने के साथ ही सील कर दिया गया। इसके अलावा सार्वजनिक भूमि पर स्थित एक अवैध मदरसे को ध्वस्त कर दिया गया जबकि निजी भूमि पर बने दो गैर मान्यता प्राप्त मदरसों को सील कर दिया गया। बहराइच जिले की तहसील नानपारा और मिहींपुरवा में अब तक 117 अवैध कब्जों को हटाया जा चुका है। मोतीपुर क्षेत्र में दारूल उलूम अजीजिया हदीकतुल नोमान नामक मदरसे को सील किया गया। इससे पहले 28 अप्रैल को चार अन्य मदरसों पर भी कार्रवाई हो चुकी है। महाराजगंज के नौतनवां, फरेंदा और निचलौल क्षेत्रों में 29 अवैध अतिक्रमण चिह्नित किए गए हैं। बलरामपुर में जिला अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की जांच में 20 मदरसे मानकों पर खरे नहीं उतरे। इनमें से कुछ के पास मान्यता के दस्तावेज नहीं थे, तो कुछ में निर्धारित पाठ्यक्रम तक नहीं पढ़ाया जा रहा था। इन सभी 20 मदरसों को बंद कर दिया गया है, जबकि दो अन्य मदरसों को नोटिस जारी किया गया है। सिद्धार्थनगर, लखीमपुर खीरी, बलरामपुर और पीलीभीत में अब तक सार्वजनिक भूमि पर बनी अवैध मस्जिदों को चिह्नित कर नोटिस जारी किया गया है। वहीं इसमें यह भी बताया गया है कि नेपाल सीमा के पास 350 से अधिक अवैध धार्मिक स्थलों पर कार्रवाई की गई है।

थर थर कांपी एटमी पावर

अब पाकिस्तान एटमी पावर के नाम पर दुनिया को ब्लैकमेल नहीं कर पाएगा, ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है, आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी, वैसे भी ये युद्ध नही था सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर था, पाकिस्तान पर जो भी प्रतिबंध लगाए गए हैं वो जारी रहेंगे।

केके चौहान

भारतीय सेना क्या पाकिस्तान के परमाणु ठिकाने तक पहुंच गई थी? यह सवाल इसलिए क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई को जब देश को संबोधित किया तब एक महत्वपूर्ण बात ये कही कि अब पाकिस्तान एटमी पावर के नाम पर दुनिया को ब्लैकमेल नहीं कर पाएगा। दूसरी बड़ी बात ये कही कि ऑपरेशन सिंदूर समाप्त नहीं हुआ है। आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी। वैसे भी ये युद्ध नहीं था सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर था। पाकिस्तान पर जो भी प्रतिबंध लगाए गए हैं वो जारी रहेंगे। ये वही पाकिस्तान है जमाने में ढोल पीटता था कि वो एटमी पावर है, पहलगाम हमले के बाद जब पीएम मोदी ने संकल्प लिया था कि पाक परस्त आतंकवादियों और उसके पालने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी, तब पाकिस्तान के मंत्री परमाणु बम का नाम लेकर काफी उछल रहे थे। लेकिन जैसे ही पीओके व पाकिस्तान के नौ आतंकी ठिकानों पर भारत ने विध्वंसक कार्रवाई की तो पाकिस्तान ने रिएक्ट करते हुए सात मई को भारतीय सीमा में ड्रोन, मिसाइल और फाइटर जेट से हमले करने की नाकाम कोशिश की। इसके बाद भारतीय सेना ने बिना सीमा पार किए ब्रह्मोस मिसाइल से पाकिस्तान में चार दिन जो तांडव किया उससे एटमी पावर थर-थर कांप उठी। इसके पीछे जो बड़ी वजह थी वो ये कि भारतीय ब्रह्मोस मिसाइल की जद में पाकिस्तान के परमाणु ठिकाने आ गए थे। इसलिए अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी बैंस ने भी कहा था कि भारत-पाक संघर्ष परमाणु हमलों तक नहीं जाना चाहिए। पाकिस्तान ने जब अपने परमाणु ठिकाने पर खतरा देखा तब वो गिड़गिड़ाते हुए अमेरिका की शरण में गया और सीजफायर कराकर भारत को रोकने की गुहार लगाई। क्योंकि 10 मई को पाकिस्तान के हमलों का जबाव देते हुए भारतीय सेना ने पाकिस्तान में जो तबाही मचाई उसके बाद अमेरिका ने सीजफायर के लिए भारत और पाकिस्तान से बातचीत का दौर शुरू किया, लेकिन भारत ने साफ कह दिया कि सीजफायर के लिए पाकिस्तान के डीजीएमओ को भारत के डीजीएमओ से बात करनी होगी। भारत वैसे भी पाकिस्तान से युद्ध नहीं चाहता था, भारत सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई कर रहा था। खैर 10 मई की शाम से सीजफायर लागू हो गया। काश सही समय पर सीजफायर न हुआ होता तो संभव था कि भारत के परमाणु ठिकाने तबाह हो गए होते। इसलिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि हमने सीजफायर कराकर लाखों लोगों की जान बचाई है। हमे उम्मीद है कि यह सीजफायर टिकाउ होगा।

एनएसए अजीत डोभाल का कमाल

भारतीय सेना ने 6 मई की रात पाकिस्तान के नौ आतंकी ठिकानों पर मिसाइल अटैक कर पहलगाम में आंतकियों द्वारा किए गए नरसंहार का बदला लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विश्वासपात्र एनएसए अजीत डोभाल को चुना था। पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई को ऑपरेशन सिंदूर का नाम दिया गया। ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम तक पहुंचाने की कमान एनएसए अजीत डोभाल ने संभालते हुए एक विशेष टीम बनाई। ऑपरेशन के पहले चरण में पाकिस्तान के भीतर चल रही गतिविधियों के बारे में इंटेलिजेंस इनपुट इकट्ठा किया गया। इंटेलिजेंस ने उन सभी 21 ठिकानों की सिलसिलेवार तरीके से पहचान की गई, जहां आतंकियों के ठिकाने थे। इन 21 आतंकी ठिकानों में से मसूद अजहर के जैश-ए-मोहम्मद, सैयद सलाहुद्दीन के हिजबुल मुजाहिद्दीन और हाफिज सईद के लशकरे-ए-तैयबा के हेडक्वाटर तथा ट्रेनिंग कैम्पों सहित 9 ठिकानों को चुना गया, जहां हमले किए जाने थे। भारतीय इंटेलिजेंस ने इन सभी ठिकानों पर पैनी निगाह बनाए रखी। हमले का पुख्ता प्लान तैयार करने के बाद एनएसए अजीत डोभाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। पीएम नरेंद्र मोदी से हमले को लेकर गहन मंत्रणा के बाद तय किया गया कि इस हमले में सिर्फ आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया जाएगा। पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद एनएसए अजीत डोभाल ने एक बार फिर अपने कोर टीम के साथ मीटिंग की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से निर्देश मिलने पर प्लान को एक बार फिर अंतिम रूप दिया गया। हमले के लिए राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (एनटीआरओ) को महत्वपूर्ण भूमिका दी गई।

पाकिस्तान को सबसे बड़ा झटका 10 मई की सुबह लगा, जब भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के आठ सैन्य ठिकानों रफीकी, मुरीद, चकलाला, रहीम यार खान, सुक्कुर, चुनियन, पसरूर और सियालकोट पर हवाई हमले किए, जिनमें हवाई अड्डे, रडार और गोला-बारूद के भंडार शामिल थे।

हमले के अंतिम प्लान के साथ एनएसए अजीत डोभाल एक बार फिर पीएम नरेंद्र मोदी से मिले। पीएम मोदी ने हमले की हरी झंडी देते हुए एनएसए को आगे बढ़ने के लिए कह दिया। इसके बाद, एक बेहद छोटे समूह को हमले के बारे में जानकारी दी गई और कंट्रोल रूम स्थापित किया गया। इस कंट्रोल रूप की कमान पूरी तरह से एनएसए अजीत डोभाल के हाथ में थी। सिग्नल मिलते ही भारतीय फाइटर जेट्स ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम तक पहुंचाने के लिए आमसान में उड़ गए। 6 मई की रात 12.37 बजे भारत ने पाकिस्तान की धरती पर मौजूद आतंकी ठिकानों को निशाना बनाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते आतंकियों के नौ ठिकाने नेस्तनाबूद हो गए और पूरे पाकिस्तान में हाहाकार मच गया। भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार जिन आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, उनमें से पांच पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) में 9 से 30 किलोमीटर के दायरे में थे। बाकी चार आतंकी ठिकाने पाकिस्तान में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार 6 से 100 किलोमीटर अंदर थे। राफेल फाइटर जेट से लॉन्च की गई स्कैल्प क्रूज मिसाइलें और हैमर स्मार्ट हथियार, गाइडेड बम किट, एक्सकैलिबर गोला-बारूद के साथ कामिकेज ड्रोन शामिल थे। ऑपरेशन सिंदूर के तहत लश्कर ए तैयबा के 3 ठिकाने, जैश ए मोहम्मद के चार और हिजबुल मुजाहिद्दीन के 2 टेरर कैंप नेस्तानाबूद कर दिए लेकिन सवाल ये है कि इन तीन आतंकवादी संगठन के तीन कुख्यात सरगना लश्कर-ए-तैयबा का हाफिज सईद, जैश-ए-मोहम्मद का मौलाना मसूद अजहर और हिजबुल मुजाहिदीन का सैय्यद सलाउद्दीन का क्या हुआ?

पाकिस्तान को गहरे जख्म

भारत ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद इस मामले को आगे नहीं बढ़ाना चाहता था, लेकिन पाकिस्तान की हरकत को देखते हुए इसे टाल दिया गया। भारत को यहां अंतिम समय में रणनीति बदलनी पड़ी और भारत ने इस बार पाकिस्तान पर बड़ा प्रहार करने का मन बना लिया था। आतंकी ठिकानों पर स्ट्राइक होने के बाद पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने कहा कि अगर भारत यहीं रुक जाता है तो पाकिस्तान संघर्ष को समाप्त करने के लिए तैयार है और कोई भड़काऊ या जवाबी कार्रवाई नहीं करेगा। जबकि पहले यही ख्वाजा आसिफ परमाणु बम की धमकी दे रहा था। पाक सरकार युद्ध से बचना चाहती है। क्योंकि भारत आर्थिक और सैन्य तौर पर दुनिया की बड़ी ताकतों में से एक है, ये पाकिस्तान और पाकिस्तान की सेना अच्छे से जानती है। किंतु पाकिस्तान का आर्मी चीफ आसीम मुनीर न तो अपने पीएम की सुनता है और न ही रक्षा मंत्री की। यानी सेना मनमानी करती है। लिहाजा आसीम मुनीर ने 9 आतंकी ठिकानों पर हुए हमलों का बदला लेने की ठान ली और पाकिस्तान सरकार को अपने इशारे पर नचाना शुरू कर दिया। ऑपरेशन सिंदूर के तत्काल बाद पाकिस्तान सेना ने रिएक्शन में 7-8 और 8-9 मई के बाद लगातार ड्रोन, मिसाइलों और फाइटर जेट से भारतीय सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की नाकाम कोशिशें की। भारतीय सेना ने जवाबी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान को गहरे जख्म दिए। भारत ने स्वदेशी और दुनिया की सबसे घातक ब्रह्मोस मिसाइलों से नूरखान एयरबेस, पीओके में स्कार्दू एयरबेस, रफीकी एयरबेस, मुरीद एयरबेस, सुक्कूर एयरबेस, सियालकोट एयरबेस, चूनियान एयरबेस, शाहबाज एयरबेस, सरगोधा एयरबेस, पसरूर एयरबेस, भोलारी एयरबेस, सैन्य ठिकाने जिसमें लाहौर छावनी भी शामिल है, तबाह कर दिए। इस्लामाबाद में पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने लाहौर, गुजरांवाला, चकवाल, बहावलपुर, मियानो, कराची, छोर, रावलपिंडी और अटक में भारतीय हमलों की बात कबूलते हुए दावा किया कि इन हमलों को निष्प्रभावी कर दिया गया। लाहौर के पास एक ड्रोन गिरा जिससे चार सैनिक घायल हुए। इस ड्रोन हमले में तीन नागरिकों की मौत हुई। एक सैन्य अधिकारी ने 'पीटीआई' को बताया कि कम से कम चार भारतीय ड्रोन लाहौर छावनी क्षेत्र में गिरे। पाक सेना ने पहलगाम हमले के बाद से नियंत्रण रेखा पर सीज फायर का उल्लंघन करते हुए भारतीय नागरिकों को टारगेट करने लगी, जिसका माकूल जवाब भारतीय सुरक्षा बलों ने दिया और पाकिस्तान सेना की तमाम चौकियां और आतंकियों के लॉन्च पैड ध्वस्त कर दिए। पाकिस्तान उधार में लिए गए चीन के कबाड़ से भारत का मुकाबला करना चाहता था। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान और तुर्की के हथियारों की नुमाइश देख ली कि वो किस तरह भारतीय हथियारों के सामने कबाड़ साबित हुआ। जबकि भारत की ब्रह्मोस मिशाइल की ताकत पाकिस्तान ने जहां सहन की है वहीं दुनिया इसकी मारक क्षमता देख ली।

पाकिस्तान की हेकड़ी निकली

ऑपरेशन सिंदूर में लश्कर-ए-तैयबा के 3, जैश-ए-मोहम्मद के 4 और हिजबुल मुजाहिद्दीन के 2 टेरर कैंप नेस्तानाबूद कर दिए, लेकिन सवाल ये है कि इन तीनों संगठन के कुख्यात सरगना लश्कर-ए-तैयबा का हाफिज सईद, जैश-ए-मोहम्मद का मौलाना मसूद अजहर व हिजबुल मुजाहिदीन का सैय्यद सलाउद्दीन का क्या हुआ ?

भारतीय सेना के हमलों ने पाकिस्तान का संतुलन बिगाड़ दिया। क्योंकि पाकिस्तान ने जल्दबाजी में जवाबी हमला किया, जिससे उसे कुछ हासिल नहीं हुआ। कुल मिलाकर, भारत का चार दिन का रिपोर्ट कार्ड पाकिस्तान से बेहतर साबित हुआ। लेकिन पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। उसने 8-9 मई की रात भारत के उत्तरी हिस्से में लेह, जम्मू और बठिंडा से लेकर पश्चिम में सर क्रीक तक 36 जगहों पर 300-400 तुर्की मूल के असीसगार्ड सोंगर सशस्त्र ड्रोन से हमला किया। इनमें से अधिकांश ड्रोन भारतीय सेना ने मार गिराए। भारतीय सेना ने देश के उत्तर और पश्चिम में 15 शहरों में कई सैन्य ठिकानों पर मिसाइलों और ड्रोन से हमला करने के पाकिस्तान के प्रयासों को विफल कर दिया, तथा कई स्थानों पर पाकिस्तान की हवाई सुरक्षा को निशाना बनाया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान से हवाई खतरों को बेअसर करने के लिए कई तरह की वायु रक्षा प्रणालियों को तैनात किया था। इनमें रूसी मूल की एस-400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली, स्थानीय रूप से निर्मित आकाश सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें, बराक 8 वायु रक्षा प्रणाली, कई तरह की ड्रोन रोधी प्रणालियां और अन्य जवाबी उपाय शामिल थे। भारतीय सेना की जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान को सबसे बड़ा झटका 10 मई की सुबह लगा, जब भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के आठ सैन्य ठिकानों रफीकी, मुरीद, चकलाला, रहीम यार खान, सुक्कुर, चुनियन, पसरूर और सियालकोट पर हवाई हमले किए, जिनमें हवाई अड्डे, रडार और गोला-बारूद के भंडार शामिल थे। यह हमला पाकिस्तान द्वारा लड़ाकू विमानों, मानवरहित लड़ाकू हवाई वाहनों (यूसीएवी) और मिसाइलों का इस्तेमाल कर भारत के सैन्य बुनियादी ढांचे और नागरिक क्षेत्रों पर किए गए हमलों के जवाब में था। भारतीय वायुसेना ने रफीकी, मुरीद, चकलाला, रहीम यार खान, सुक्कुर, चुनियन, पसरूर और सियालकोट में सैन्य ठिकानों पर हमला किया। रात भर चले घटनाक्रम ने भारत द्वारा ऑपरेशन सिंदूर शुरू किए जाने के बाद से दोनों सेनाओं के बीच सबसे भीषण संघर्ष को चिह्नित किया। भारत द्वारा निशाना बनाए गए लक्ष्यों में तकनीकी अवसंरचना, कमांड और नियंत्रण केंद्र, रडार साइट और हथियार भंडारण क्षेत्र शामिल थे।

भारत की शर्तो पर सीजफायर

दस मई को पाकिस्तान की सारी हेकड़ी निकल गई और अमेरिका सहित कई देशों से सीजफायर के लिए गिड़गिड़ाने लगा। खैर 9 मई की रात से ही अमेरिका ने भारत से संघर्ष विराम के लिए बात शुरू की। 10 मई को जब तक सीजफायर के लिए पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से फोन पर बात की और भारत की शर्तो पर सीजफायर पर सहमति बन गई। अमेरिका की मध्यस्थता से हुए सीजफायर ने दोनों परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के बीच शत्रुता को फिलहाल टाल दिया है। क्योंकि दोनों देश लड़ाकू विमानों, मिसाइलों, सटीक हथियारों, कामिकेज ड्रोनों और तोपों से सैन्य टकराव के बाद पूर्ण युद्ध के कगार पर थे। पिछले चार दिनो में चीजें तेजी से बदली थी। भारत ने पाकिस्तान में कई आतंकी स्थलों, वायुसैन्य ठिकानों और सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमले किए थे। यहां तक की भारत पाकिस्तान के परमाणु बम के भंडार तक पहुंच गया था। 10 मई को सीजफायर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच एक व्यापाक संघर्ष फिलहाल टल गया। सीजफायर की खबरें आने के तुरंत बाद पाकिस्तान की ओर से नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार फिर सीजफायर के उल्लंघन की भी खबरें आईं। लिहाज रात में ही पाकिस्तान के डीजीएमओ ने फिर भारत के डीजीएमओ से बात की और पूरी तरह सीजफायर हुआ। सीजफायर की घोषणा के बाद सेना की प्रेस ब्रीफिंग में विंग कमांडर व्योमिका सिंह और सोफिया कुरैशी ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में भारतीय प्रतिष्ठानों पर अकारण हमले के बाद पाकिस्तान को बहुत भारी और असहनीय क्षति पहुंचाई गई है। भारतीय सेना ने स्कार्दू, सरगोधा, जैकोबाबाद और भोलारी जैसे महत्वपूर्ण पाकिस्तानी एयरबेसों को भारी नुकसान पहुंचाया है। साथ ही वायु रक्षा हथियारों और रडार के नुकसान ने पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र की रक्षा को अस्थिर बना दिया है। एलओसी के पार, सैन्य बुनियादी ढांचे, कमांड और नियंत्रण केंद्रों और रसद प्रतिष्ठानों को व्यापक और सटीक नुकसान ने उसकी रक्षात्मक और आक्रामक क्षमताओं को पूरी तरह से खत्म कर दिया है।

टूरिज्म पर टेररिस्ट अटैक

पाकिस्तान में रहने वाला सैफुल्लाह खालिद जम्मू-कश्मीर में लश्कर और टीआरएफ की आतंकवादी गतिविधियों का मेन ऑपरेटर है, सैफुल्लाह को सैफुल्लाह कसूरी नाम से भी जाना जाता है, वह लश्कर-ए-तैयबा का डिप्टी चीफ है और खुंखार आतंकी हाफिज सईद का बेहद करीबी है।

उदय भान सिंह
लेखक

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम के निकट 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से मशहूर पर्यटन स्थल बैसरन में 22 अप्रैल को पाकिस्तान परस्त आतंकवादियों ने 28 पर्यटकों से उनका धर्म जाति और नाम पूछकर गोली मार दी जिससे 28 पर्यटकों की मौत हो गई और 17 घायल हो गए। यह 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में हुआ सबसे बड़ा हमला है। मारे गए लोगों में दो विदेशी नागरिक संयुक्त अरब अमीरात और नेपाल से है तथा दो स्थानीय निवासी हैं। पहलगाम आतंकी हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा के खुंखार सहयोगी संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने ली है। इस क्रूर हमले का मास्टरमाइंड आतंकी सैफुल्लाह खालिद है। पाकिस्तान में रहने वाला सैफुल्लाह जम्मू-कश्मीर में लश्कर और टीआरएफ की आतंकवादी गतिविधियों का मेन ऑपरेटर है। सैफुल्लाह खालिद को सैफुल्लाह कसूरी नाम से भी जाना जाता है। वह लश्कर-ए-तैयबा का डिप्टी चीफ है और खुंखार आतंकी हाफिज सईद का बेहद करीबी है। सैफुल्लाह लग्जरी कारों का शौकीन है। उसकी सुरक्षा भारत के प्रधानमंत्री से भी ज्यादा मजबूत है। वो कई लेयर के अत्याधुनिक हथियारों से लैस आतंकियों के घेरे में रहता है। सैफुल्लाह खालिद का पाकिस्तान में इतना रुतबा है कि पाकिस्तानी सेना के अफसर भी उसका लाल कारपेट बिछाकर स्वागत करते हैं। यानी वो पाकिस्तान में वीवीआईपी की तरह घूमता है। सैफुल्लाह को दो महीने पहले पाकिस्तान के कब्जे वाले पंजाब के कंगनपुर में बुलाया गया था। यहां एक प्रोग्राम में पाकिस्तानी सेना के कर्नल जाहिद जरीन खटक ने उसकी तकरीर कराई थी। उसने भी भारतीय सेना और भारत के खिलाफ जहर उगला था। उसने कहा था, आज 2 फरवरी है। मैं वादा करता हूं कि 2 फरवरी 2026 तक हम कश्मीर पर कब्जा करने की पूरी कोशिश करेंगे। उसने ऐलान किया था कि आने वाले दिनों में हमारे मुजाहिदीन हमले तेज कर देंगे। उम्मीद है कि 2 फरवरी 2026 तक कश्मीर आजाद हो जाएगा। इस मजमे का आयोजन पाकिस्तान सेना और पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई ने किया था। जिसमें भारी संख्या में हथियारबंद आतंकी मौजूद थे। सैफुल्लाह की इस तकरीर को भारतीय खुफिया एजेंसियों ने शायद गंभीरता से नहीं लिया और 28 भारतीयों की जान चली गई।

एबटाबाद के जंगलों में लश्कर के पॉलिटिकल विंग पीएमएमएल और एसएमएल ने आतंकी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था, जिसमें , सैफुल्लाह खालिद ने आतंकियों को भारत के खिलाफ भड़काया था, और उन्हें टारगेट किलिंग की ट्रेनिंग दी थी।

टारगेट किलिंग की ट्रेनिंग

कुछ दिन पहले एबटाबाद के जंगलों में लश्कर के पॉलिटिकल विंग पीएमएमएल और एसएमएल ने आतंकी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था। जिसमें इसी सैफुल्लाह खालिद ने आतंकियों को भारत के खिलाफ भड़काया था। उन्हें टारगेट किलिंग की ट्रेनिंग दी थी। उन्हें बॉर्डर क्रास करके भारत में घुसपैठ करने के टिप्स दिए थे। खुफिया एजेंसी 'रॉ' और भारतीय सेना की खुफिया एजेंसियों के मुताबिक सैफुल्लाह खालिद न सिर्फ पाकिस्तानी फौज का करीबी है, बल्कि भारत के दुश्मन नंबर वन हाफिज सईद का राइट हैंड कहा जाता है। हाफिज सईद और सैफुल्लाह खालिद की दोस्ती भी बहुत गहरी है। 22 अप्रैल को पहलगाम हमले के बाद एक बार फिर सैफुल्लाह खालिद इंडियन जांच एजेंसियों की नजरों में आया है। हालांकि इससे पहले भी वह कश्मीर में कई आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने में शामिल रहा है। कश्मीर में अनुच्छेद 370 और धारा 25 समाप्त होने के बाद पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई ने आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के नए मुखौटे के रूप में टीआरएफ का गठन किया था। टीआरएफ लश्कर की फंडिंग से चलता है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी कुछ समय पहले राज्यसभा में बताया था कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और वहां के आतंकवादी संगठनों ने नए भारत की सख्ती को देखते हुए अपनी खाल बचाने के उद्देश्य से 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' यानी टीआरएफ को आतंकी गतिविधियों के लिए तैयार किया है। यह संगठन लश्कर-ए-तैयबा का मुखौटा बनकर कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दे रहा है। भारतीय खुफिया एजेंसियों के मुताबिक टीआरएफ के पास दो विंग सबसे खतरनाक हैं, 'फाल्कन स्क्वॉड' और 'हिट स्क्वॉड'। इन दोनों की जिम्मेदारी कश्मीर घाटी में टारगेट किलिंग को अंजाम देने की है। भारतीय खुफिया एजेंसियों के लिए अब यह जरूरी हो गया है कि वह सैफुल्लाह खालिद जैसे आतंकवादियों का जड़ से सफाया करे, तभी कश्मीर में शांति और स्थिरता लाई जा सकती है।

टीआरएफ को पाकिस्तानी सपोर्ट

खुफिया रिपोर्ट के मुताबिक सैफुल्लाह खालिद को पाकिस्तान का फुल सपोर्ट मिलता है। पाकिस्तान सेना के साथ उसके अच्छे संबंध हैं। वो नौजवानों के साथ पाकिस्तानी सेना का माइंड वाश कर भारत के खिलाफ भड़काने का काम करता है। पहलगाम में आतंकी हमले के कुछ दी देर बाद हमले की जिम्मेदारी इसी टीआरएफ ने ली है। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के साथ मिलकर इस संगठन की नींव रखी थी। ताकि पाकिस्तान को फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) की कार्रवाई से बचाया जा सके। टीआरएफ गठने के पीछे एक उद्देश्य लश्कर-ए-तैयबा की वजह से पाकिस्तान पर बढ़ते अंतरराष्ट्रीय दबाव को कम करना भी है। यह नया आतंकी संगठन टारगेट किलिंग में माहिर है। इसके हैंडलर सोशल मीडिया पर भी एक्टिव रहते हैं। कश्मीर के अंदर चलने वाली हर गतिविधि पर नजर रखते हैं। टीआरएफ ने पिछले दिनों अपनी हिट लिस्ट भी जारी की थी। इस लिस्ट में कई भाजपा नेताओं, सैन्य व पुलिस अधिकारियों के नाम शामिल थे। टीआरएफ अपने लोकल मॉड्यूल के जरिए घाटी में हमलों को अंजाम दिलाता है। हमले से पहले इसके आतंकी रेकी करते हैं। उसके बाद ही हमले को अंजाम देते हैं। पिछले साल गांदरबल में मजदूरों के कैंप पर घात लगाकर हमला करने में भी इसी संगठन का हाथ था। टीआरएफ के आतंकी हमला करने के बाद अमूमन घने जंगलों में छिप जाते हैं। पाकिस्तान में बैठा शेख सज्जाद गुल टीआरएफ का प्रमुख है। उसके इशारे पर टीआरएफ का लोकल माड्यूल जम्मू-कश्मीर में लगातार हमलों को अंजाम दे रहा है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाए जाने के बाद टीआरएफ ऑनलाइन यूनिट के रूप में शुरू किया गया था। माना जाता है कि टीआरएफ को बनाने का मकसद लश्कर जैसे आतंकी संगठनों को कवर देना है। इसकी मदद पाकिस्तानी फौज और आईएसआई करती है। 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद-370 समाप्त किया गया था। जिसके बाद यह संगठन पूरे कश्मीर में सक्रिय हो गया। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का मकसद कश्मीर में 90 के दशक जैसी स्थिति बनाना है। इसी मकसद से पाकिस्तान में टीआरएफ का गठन किया गया। ताकि कश्मीर में दहशत फैलाई जा सके।

2019 में कश्मीर से अनुच्छेद 370 और धारा 25 समाप्त होने के बाद पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई ने आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के नए मुखौटे के रूप में टीआरएफ का गठन किया था, टीआरएफ लश्कर की फंडिंग से ही चलता है।

हमले की टाइमिंग

जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमला तब हुआ है, जब अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी वेंस भारत के दौरे पर थे। यह हमला उस समय किया गया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब के दो दिवसीय दौरे पर थे। हमला कितना गंभीर है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पीएम नरेंद्र मोदी अपना दौरा बीच में ही छोड़कर दिल्ली लौट आए। पाकिस्तानी आतंकियों ने पहलगाम हमले के लिए यह समय क्यों चुना? इस सवाल का जवाब आसान है कि अमेरिका और सऊदी अरब से भारत के नए रिश्ते मजबूती के साथ बन रहे हैं, जिससे पाकिस्तान बोखला रहा है। ऐसे में उसके आतंकियों ने इस बर्बर और रोंगटे खड़े कर देने वाले हमले को अंजाम दिया। इस कायराना आतंकी घटना को इसलिए अंजाम दिया गया ताकि कश्मीर की अवाम और दूसरे राज्यों के लोगों को ये संदेश जाए कि कश्मीर में वो सुरक्षित नहीं हैं। इसके अलावा एक और संदेश ये भी था कि दुनिया का ध्यान कश्मीर की ओर जाए, वो भी तब जब अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी वेंस भारत दौरे पर हैं। मीडिया रिपोटर्स में लगातार बताया गया कि आतंकियों ने पहलगाम के बैसरन घाटी में लोगों के नाम और धर्म पूछा। उन्हें कलमा पढ़ने के लिए कहा और इसके बाद गोली मारी। यहां तक कि कई लोगों की पैंट उतारकर देखने के बाद गोली मारी। कायर आतंकियों ने सिर्फ पुरुषों को टारगेट किया, जबकि महिलाओं और बच्चों को एक तरफ कर दिया। इन खतरनाक और कायर आतंकियों ने गोली मारते हुए महिलाओं से कहा कि जाकर अपने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बता देना।

पाकिस्तान की सफाई

पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ का बयान आया कि पहलगाम हमले से पाकिस्तान का कोई लेना देना नहीं है। लेकिन इसके बाद उन्होंने भारत के खिलाफ जहर भी उगल दिया। ख्वाजा आसिफ ने एक टीवी चैनल से टेलीफोन पर बात करते हुए कहा कि पाकिस्तान का इस आतंकी घटना से कोई ताल्लुक नहीं है। भारत के अंदर कई संगठन हैं, उनमें घरेलू स्तर पर बगावते हैं, एक दो नहीं, दर्जनों के हिसाब से हैं। नागालैंड से लेकर कश्मीर तक हैं। साउथ में छत्तीसगढ़ में, मणिपुर में। ख्वाजा आसिफ ने कहा कि ये कई स्थानों पर हो रहा हैं। दिल्ली में जो हुकूमत है, उसके खिलाफ बगावत है। ये घर में पनपा हुआ है। लोग हक मांग रहे हैं। हिंदुत्व हुकूमत जो लोगों का शोषण कर रही है, अल्पसंख्यकों को, जिनमें मुसलमान भी हैं, ईसाई भी हैं, बौद्ध भी हैं, उसके खिलाफ बगावत है। जो वहां पर हो रही है। हमारा इसके साथ कोई ताल्लुक नहीं है। हम किसी भी सूरत में आतंकवाद को सपोर्ट नहीं करते हैं। लेकिन मीडिया रिपोर्टस में कहा जा रहा है कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर की हाल में की गई एक टिप्पणी को पहलगाम में आतंकी हमले का कारण माना जा रहा है। असीम मुनीर ने कश्मीर को पाकिस्तान के गले की नस बताते हुए कहा था कि मुसलमान-हिंदुओं से अलग हैं। दोनों कभी साथ नहीं रह सकते। हालांकि जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री रहे गुलाम नवी आजाद का कहना है कि जब-जब पाकिस्तान में सरकारें कमजोर होती हैं और पाक का सारा कंट्रोल सेना के हाथ में आता है तो सेना अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए इस तरह की कायराना हरकतें भारत में कराती है। पाकिस्तान के सेना चीफ के बयान को हमने गंभीरता से नहीं लिया इसलिए भी यह हमला हुआ है। उन्होंने साफ कहा कि इस हमले के पीछे पाकिस्तान की सेना का हाथ है। भारत के डिफेंस एक्सपर्ट कह रहे हैं कि भारत को इस समय सख्त से सख्त फैसला लेना चाहिए। उसमें किसी किस्म की कोताही नहीं बरतनी चाहिए। अब महज आतंकियों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक से काम नहीं चलने वाला है। पाकिस्तान को कड़ा संदेश देना होगा।

पर्यटन

स्वर्ग से सुंदर गोरसन बुग्याल

औली से सिर्फ तीन किलोमीटर के फासले पर हरे-भरे चरागाहों की बड़ी भूमि है जो शंकुधारी जंगल और ओक के वृक्षों से घिरी हुई है, रास्ते में गोरसन बुग्याल से माउंट नंदा देवी, माना पर्वत, दूनागिरी, बिथरटोली, नीलकंठ, हाथी पर्वत, गोरी पर्वत, नर पर्वत और कामेट का मनोरम दृश्य देख सकते हैं।

हरीश भट्ट
रामनगर

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड को कुदरत ने खूबसूरती से नवाजा है। यहां की पर्वत श्रृंखलाएं हों या नदियां, झरने, घाटियां, झील, प्राचीन पारंपरिक घर, धार्मिक महत्व के मठ-मंदिर और बुग्याल सभी इस पहाड़ी राज्य की सौंदर्यता में चार चांद लगाते हैं। गढ़वाल के चमोली जिले में सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल औली से सिर्फ तीन किलोमीटर के फासले पर हरे-भरे चरागाहों की बड़ी भूमि है जो शंकुधारी जंगल और ओक के वृक्षों से घिरी हुई है। रास्ते में गोरसन बुग्याल से माउंट नंदा देवी, माना पर्वत, दूनागिरी, बिथरटोली, नीलकंठ, हाथी पर्वत, गोरी पर्वत, नर पर्वत और कामेट का मनोरम दृश्य देख सकते हैं। गोरसन बुग्याल ट्रेक अल्पाइन घास के मैदानों के साथ गढ़वाली हिमालयी क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय ट्रेक में से एक है और आंखों के लिए एक ट्रीट है। ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए हिमालयन ट्रेक गोरसन बुग्याल ट्रेक औली से शुरू होने वाले सबसे आसान ट्रेक में से एक है, यदि रोमांच की दुनिया में पहला कदम रख रहे हैं तो बिना किसी हिचकिचाहट के इसके लिए आगे बढ़ सकते हैं। सर्दियों में गोरसन बुग्याल ट्रैकिंग का मजा और भी रोमांचकारी हो जाता है, खासकर तब जब इसमें दो मनमोहक घास के मैदान हों और उनकी खूबसूरती सफेद बर्फ से ढकी हो, जो सर्दियों के अलावा अन्य मौसम में रंगों की झड़ी के साथ बिछ जाती है। गोरसन बुग्याल 3056 मीटर की ऊंचाई पर है और औली से सिर्फ 3 किलोमीटर की दूरी पर है। यदि आप भी परिवार के साथ गोरसन बुग्याल की ट्रैकिंग का रोमांचक अनुभव करना चाहते हैं तो ये डेस्टिनेशन बहुत अच्छा है। ट्रैकिंग के दौरान रास्ते में ओक और देवदार के पेड़ों के घने जंगल से होकर गुजरना होगा। इसमें आपको गांव के जीवन को समझने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और वन्यजीवों को देखने का अवसर मिलेगा। कैंपसाइट पर पहुंचने पर लूडो, सांप और सीढ़ी जैसी दोस्ताना गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं। शाम को प्रकृति की सैर की जा सकता है, लेकिन कैंप में हल्के संगीत और अलाव का आनंद लेने के लिए सूर्यास्त होने का इंतजार करना होगा। ट्रैकिंग के दौरान अनुभवी और योग्य गाइड साथ रखने से ट्रैकिंग का रोमांच और बढ़ जाएगा। साथ ही पहाड़ी रास्तों पर भटकना भी नहीं पड़ेगा।

गोरसन बुग्याल सुहाना सफर

गोरसन बुग्याल ट्रेक ऐसे कुछ ट्रेक में से एक है जिसका आनंद पूरे साल लिया जा सकता है। हर मौसम में यह ट्रेक बिल्कुल अलग नजारा पेश करता है। गर्मियों में गोरसन बुग्याल औली का मौसम सुहावना और सेहत के लिए अच्छा रहता है। हिमालय भी साफ दिखाई देता है और ताजी हवा वातावरण में आकर्षण पैदा करती है। मानसून में बारिश ट्रेक की सुंदरता को और बढ़ा देती है। जंगल और घास के मैदान हरे-भरे हो जाते हैं और फूलों की संख्या बढ़ जाती है। मौसम मध्यम और सुखद रहता है। हालांकि बरसात का मौसम ट्रैकिंग के लिए अच्छा समय नहीं है क्योंकि भूस्खलन के कारण सड़कें और पहाड़ी रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं। सर्दियों के मौसम में औली में भारी बर्फबारी होती है। सर्दियों के महीनों के दौरान, परिदृश्य सुंदर दिखते हैं, पहाड़ बर्फ की चादर से ढके रहते हैं, जिससे ये मिनी स्विट्जरलैंड जैसा दिखता है। गोरसन बुग्याल ट्रेक भले ही छोटा है लेकिन बेहद शानदार ट्रेक है, जो औली से शुरू होता है और करीब 5 किलोमीटर में फैला हुआ है। इस ट्रेक में चारों तरफ फैली छोटी-छोटी झीलें और खूबसूरत जंगल हैं, जो मन को खूब आनंदित करते हैं। चमोली जिले में आने वाले गोरसन बुग्याल की ऊंचाई 3050 मीटर है, लेकिन 2018 से यहां कैंपिंग नहीं की जा सकती थी, यहां केवल ट्रेक के लिए जा सकते थे। हालांकि गोरसन बुग्याल ट्रेक बहुत सुंदर और आसान ट्रेक की श्रृंखला में आता है, लिहाजा ये उन लोगों के लिए बहुत बढ़िया है जिन्हें औली के पास लंबी पैदल यात्रा करने का बहुत शौक है और इसे अपने जीवन का एक खास उद्देश्य मानते हैं। यह ट्रेक एक ऐसा ट्रेक है जहां से एक से बढ़कर एक हिमालय पर्वत श्रृंखलाएं देखने को मिलती हैं। दिन के समय गोरसन बुग्याल ट्रेक का तापमान लगभग 8 से 20 डिग्री रहता है और रात के समय तापमान 5 से 10 डिग्री तक गिर जाता है जो बुरा नहीं है। गोरसन बुग्याल ट्रेक में आप कभी भी खुद को बोरिंग नहीं समझेंगे, यह ट्रेक आनंद के अलावा कुछ नहीं दे सकता। इस ट्रेक में गढ़वाली संस्कृति, औली स्कीइंग देखने को मिलेगी जो आपको हमेशा पहाड़ से जोड़े रखेगी।

गोरसन बुग्याल ट्रेक भले ही छोटा है लेकिन बेहद शानदार ट्रेक है, जो औली से शुरू होता है और करीब 5 किलोमीटर में फैला हुआ है, इस ट्रेक के चारों तरफ फैली छोटी-छोटी झीलें और खूबसूरत जंगल हैं, जो मन को खूब आनंदित करते हैं।

ट्रैकिंग संगठन के साथ ट्रेक करें

गोरसन बुग्याल ट्रेक एक सुरक्षित ट्रेक भी माना जाता है अगर आप एक अच्छी ट्रैकिंग टीम के साथ जा रहे हैं तो उसके बारे में आपको बुकिंग करने से पहले पता होना चाहिए। आपके लिए यह जानना जरूरी है कि जिस ट्रैकिंग संगठन के साथ जा रहे हैं वह सही है या नहीं, हो सके तो उत्तराखंड में स्थानीय ट्रैकिंग संगठन के साथ ट्रेक करें, जो हर समय मदद कर सकते हैं। इससे आपका ट्रेक बहुत अच्छा और यादगार हो सकता है। गोरसन बुग्याल ट्रेक करने के लिए न्यूनतम आयु 5 वर्ष और अधिकतम 65 वर्ष है। बाकी आपकी फिटनेस पर निर्भर करता है और यह परिवार और स्कूल समूह, व्यस्कों के लिए एक तरह से विशेष है। जो आसपास की चोटियों और लुढ़कती हरी पहाड़ियों के शानदार दृश्यों के लिए जाना जाता है। यह गढ़वाल क्षेत्र के हिमालय में सबसे आसान ट्रेक में से एक है। सभी फिटनेस स्तर के लोगों के लिए उपयुक्त है। यदि आप औली जाने की योजना बना रहे हैं, तो आपको विशेष रूप से सर्दियों के दौरान इस छोटे ट्रेक का आनंद लेना अच्छा लगेगा। इस बुग्याल से आसपास की हिमालयी चोटियों के शानदार नजारे दिखते हैं और यह अल्पाइन फूलों, ओक के पेड़ों और हिमालयी काले भालू सहित अपने विविध वनस्पतियों और वन्यजीवों के लिए जाना जाता है। एक बार जब आप गोरसन बुग्याल पहुंच जाते हैं, तो वहां शिविर लगा सकते हैं और नजारों का आनंद ले सकते हैं।

- **गोरसन बुग्याल ट्रेक करने के लिए न्यूनतम आयु 5 वर्ष और अधिकतम 65 वर्ष है, बाकी आपकी फिटनेस पर निर्भर करता है और यह परिवार और स्कूल समूह, व्यस्कों के लिए एक तरह से विशेष है, जो आसपास की चोटियों और लुढ़कती हरी पहाड़ियों के शानदार दृश्यों के लिए जाना जाता है।**
- **गोरसन बुग्याल ट्रेक को सबसे अलग बनाने वाली बात है कि ये साल भर चलने वाला आकर्षण है, गर्मियों में ट्रैकर्स को सुहावने मौसम और राजसी हिमालय के क्रिस्टल-क्लियर नजारों का आनंद मिलता है, मानसून में परिदृश्य हरे-भरे स्वर्ग में बदल जाता है, जबकि सर्दियों में बर्फ से ढक जाता है।**

आसपास की चोटियों पर छोटी दिन की पैदल यात्रा भी कर सकते हैं। हालांकि यह पगडंडी अच्छी तरह से चिह्नित है, लेकिन हमेशा एक स्थानीय गाइड को साथ रखना होगा, जो आपको नेविगेट करने में मदद कर सकता है और स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण के बारे में जानकारी दे सकता है।

हर मोड़ पर रोमांच

गोरसन बुग्याल ट्रेक एक मनोरम हिमालयी रोमांच है जो विस्मयकारी दृश्यों, विविध वनस्पतियों, वन्यजीवों और सांसारिकता से दूर कुछ समय बिताने की चाह रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है। हिमालय की पृष्ठभूमि में स्थित यह ट्रेक, अनुभवी ट्रैकर्स और अविस्मरणीय अनुभवों की खोज करने वालों के लिए है। इसकी यात्रा जोशीमठ और औली से शुरू की जा सकती है, जो साहसी लोगों के लिए लचीलापन सुनिश्चित करती है। जैसे ही आप इस ट्रेक पर निकलेंगे, आप खुद को प्रकृति के साथ जुड़ने का अनुभव करेंगे। अद्वितीय हिमालयी वनस्पतियों और वन्यजीवों को देखने और क्षेत्र की प्राचीन सुंदरता के बीच मंत्रमुग्ध करने वाले क्षणों को कैद करने का एक अविश्वसनीय अवसर भी मिलेगा। गोरसन बुग्याल ट्रेक को सबसे अलग बनाने वाली बात है, इसका साल भर चलने वाला आकर्षण। गर्मियों में ट्रैकर्स को सुहावने मौसम और राजसी हिमालय के क्रिस्टल-क्लियर नजारों का आनंद मिलता है। मानसून के दौरान, परिदृश्य हरे-भरे स्वर्ग में बदल जाता है, जबकि सर्दियों के महीनों में यह क्षेत्र प्राचीन बर्फ से ढक जाता है, जो एक सुरम्य स्विस परिदृश्य जैसा दिखता है। हालांकि, सर्दियों के मौसम में ठंडे तापमान के लिए तैयार रहें, और सुनिश्चित करें कि आपके पास अपने बैग में गर्म कपड़े हों। क्योंकि यह एक ऐसा साहसिक कार्य है जो हर मौसम में एक अद्वितीय और मनोरम अनुभव का वादा करता है, जो इसे उन लोगों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाता है जो हिमालय की सर्वोत्तम पेशकश की तलाश में हैं। एक असाधारण यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो जाइए, जहां प्रकृति की सुंदरता अपने पूरे वैभव के साथ प्रकट होती है और हर मोड़ पर रोमांच आपका इंतजार करता है। गोरसन बुग्याल की ट्रैकिंग के लिए भारत के किसी भी कोने से आने के लिए निकटतम हवाई अड्डा जॉली ग्रांट हवाई अड्डा है जो कैंपसाइट से 276 किलोमीटर की दूरी पर है। कैंपसाइट तक पहुंचने के लिए हवाई अड्डे से टैक्सी या साझा कार किराए पर ले सकते हैं। निकटतम बस स्टॉप जोशीमठ बस स्टैंड है। जो कैंपसाइट के सबसे नजदीकी बस स्टॉप है यानी 11 किलोमीटर की दूरी पर है। कैंपसाइट तक पहुंचने के लिए बस स्टैंड से टैक्सी या शेयर्ड कार किराए पर ली जा सकती है। निकटतम रेलवे स्टेशन हरिद्वार रेलवे स्टेशन है जो कैंपसाइट से 284 किलोमीटर की दूरी पर है। रेलवे स्टेशन से कैंपसाइट तक परुंचने के लिए टैक्सी या शेयर्ड कार किराए पर मिल जाती है। गोरसन बुग्याल ट्रेक केवल 2 दिन का होगा जबकि यात्रा 4 दिन की होगी।

आतंक के ठिकाने तबाह

देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला किया है, निहत्थे लोगों पर हमला किया है, इस हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों और इसकी साजिश रचने वालों को इससे भी बड़ी सजा मिलेगी, जिसकी वो कल्पना भी नहीं कर सकते, बैसरन में आतंकियों ने विवाहिताओं का सिंदूर उजाड़ा था, लिहाजा आतंकियों के ठिकाने उजाड़ने के लिए सिंदूर से जोड़ा गया।

अतुल सिन्हा
टीवी जर्नलिस्ट

22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तान के कायर आतंकवादियों द्वारा 27 हिंदुओं का नरसंहार हुआ तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेश यात्रा बीच में ही छोड़कर भारत लौट आए। उन्होंने एयरपोर्ट पर ही पहलगाम की घटना की जानकारी ली। जब मोदी को बताया गया कि आतंकियों ने धर्म पूछ कर सिर में गोली मारी और रोती बिलखती महिलाओं से कहा कि 'जाओ जाकर मोदी को बता देना'। ऐसा पहली बार हुआ था कि आतंकियों ने धर्म पूछकर गोली मारी थी, लिहाजा इस घटना से पीएम मोदी का खून खौल गया। उन्होंने पहलगाम में आतंकवादियों की कायरता का शिकार हुए परिवारों को न्याय दिलाने की ठान ली। चूंकि नरसंहार की जिम्मेदारी लशकर-ए-तैयबा के सहयोगी संगठन टीआरएफ ने ली थी लिहाजा पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक कार्रवाई करते हुए भारत सरकार ने बार्डर बंद कर दिया, पाकिस्तानियों के वीजा रद्द कर दिए, सिंधु जल संधि समाप्त कर दी, कारोबार बंद कर दिया। इस तरह की कार्रवाई से देश में सवाल उठ रहे थे कि पाकिस्तान पर सैन्य कार्रवाई कब होगी? विपक्षी नेता भी सरकार पर तंज कस रहे थे। लेकिन देश की जनता को यकीन था कि पीएम मोदी बदला जरूर लेंगे। लिहाजा बिहार के मधुबनी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनौती दी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा पहलगाम में हिंदुओं की निर्दयता से हत्या की गई है। पूरा देश पीड़ित परिवारों के साथ है। बड़ी संख्या में लोगों का इलाज चल रहा है। आतंकी हमले में एक व्यक्ति ने अपना बेटा खो दिया, जबकि दूसरे ने अपना दोस्त खो दिया। एक व्यक्ति कन्नड़ बोलता था तो दूसरा मराठी। देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला किया है। निहत्थे लोगों पर हमला किया है। इस हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों और इसकी साजिश रचने वालों को इससे भी बड़ी सजा मिलेगी, जिसकी वो कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि 140 करोड़ भारतीयों की इच्छाशक्ति अब आतंक के आकाओं की कमर तोड़गी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि मैं दुनिया को बताना चाहता हूं कि भारत हर आतंकवादी और उसके आकाओं की पहचान करेगा, उनका पता लगाएगा और उन्हें खोज कर दंडित करेगा। लिहाजा पीएम मोदी ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, तीनों सेना प्रमुखों, सीडीएस, एनएसए के साथ बैठकर कर सेना को बदले की छूट दे दी। इसी बैठक में प्रधानमंत्री ने सेना प्रमुखों को सुझाव दिया था कि इस बार सैन्य कार्रवाई को ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया जाए। इस सैन्य कार्रवाई को ऑपरेशन सिंदूर नाम इसलिए दिया गया क्योंकि बैसरन में आतंकियों ने विवाहिताओं का सिंदूर उजाड़ा था। लिहाजा आतंकियों के ठिकानों को उजाड़ने के लिए सिंदूर से जोड़ा गया।

मुगालते में रहा पाकिस्तान

भारत सरकार और सेना आतंकियों के ठिकानों पर अचूक कार्रवाई की तैयारी करती रही और पाकिस्तान सरकार में खुद को सूरमा समझने वाले मंत्री से लेकर संतरी तक परमाणु बम लेकर उछलते रहे। बिलावल भुट्टो जो अपनी मां बेनजीर भुट्टो के हत्यारों को सजा तक नहीं दिला पाया वो खून बहाने की लम्बी-लम्बी हांकने में लगा था। पाकिस्तानी मीडिया सरकार की हां में हां मिलाने का प्रोपेगेंडा चला रही थी। पाकिस्तान सरकार, पाक आर्मी और पाकिस्तानी मीडिया को लग रहा था कि भारत फिलहाल हमला इसलिए नहीं करेगा क्योंकि पाकिस्तान अलर्ट है। यही मुगालता पाकिस्तान पर भारी पड़ा और पहलगाम नरसंहार के 15 दिन के भीतर 6 मई की आधी रात को जब पाकिस्तानी सो रहे थे तब भारतीय सेनाओं ने ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च कर दिया। भारतीय सेना द्वारा शुरू किया गया यह ऐतिहासिक सैन्य अभियान था, जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में जैश-ए-मोहम्मद, लशकर-ए-तैयबा के नौ आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया गया। सेना ने इसके लिए विशेष गोला-बारूद का उपयोग किया। जो न्यूनतम नागरिक क्षति के साथ अधिकतम प्रभाव सुनिश्चित करता है। भारतीय वायुसेना के राफेल लड़ाकू विमानों से लैस स्कैल्प क्रूज मिसाइल और हैमर मिसाइल दो ऐसे शक्तिशाली हथियार थे, जिन्हें ऑपरेशन सिंदूर में उपयोग किया गया। पहलगाम के बैसरन में मारे गए बेकसूरों की तेरहवीं के बाद भारत शोक से उबरा और 7 मई की सुबह होते ही हर भारतवासी को एक सुकून व मन को शांति देने वाली खबर दी। भारतीय सेना द्वारा की गई स्ट्राइक में 100 से अधिक आतंकियों के मारे जाने का अनुमान लगाया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने पहलगाम में हिंदुओं की निर्दयता से हत्या का बदला लेने का ऐलान बिहार से किया, हमले को भारत की आत्मा पर हमला बताते हुए चेतावनी दी कि हमले को अंजाम देने वाले कायर आतंकियों और हमले की साजिश रचने वालों को बड़ी सजा मिलेगी, जिसकी वो कल्पना भी नहीं कर सकते।

अपनों की लाशों पर जश्न मनाएं आतंकी

भारत के मोस्ट वांटेड आतंकी मसूद अजहर का पूरा परिवार खत्म हो गया है। भारत में घुस कर बेकसूरों की हत्या करने पर खुश होने और जश्न मनाने वाले मौलाना मसूद अजहर ने जब अपने कुनबे की लाशें देखी तो दहाड़े मारकर रोया और अपनी मौत की दुआ करने लगा। जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर ने कबूल किया कि भारत के ऑपरेशन सिंदूर में उसके परिवार के 10 सदस्य और चार करीबी मारे गए हैं। उर्दू में लिखी गई एक चिट्ठी जो मसूद अजहर की बताई जा रही उसमें लिखा है कि बहावलपुर में जामिया मस्जिद सुभान अल्लाह पर हमले में मारे गए लोगों में जैश सरगना मसूद अजहर की बड़ी बहन और उसका पति, एक भांजा और उसकी पत्नी, एक भांजी और परिवार के पांच अन्य बच्चे शामिल हैं। इसके अलावा भारत के हमले में उसके चार करीबी भी मारे गए हैं। हथियारों के जोर पर दहशतगर्दों के सहारे भारत के निर्दोष लोगों की जान लेने वाले अजहर मसूद को आज पता चल ही गया की मौत क्या होती है? अपने जब बेमौत मारे जाते हैं तो उनके जनाजे देखकर कितना दुख होता है। आतंक का साम्राज्य खड़ा करने की धुन में अजहर मसूद जैसे लोग मानवता के सबसे बड़े दुश्मन बन जाते हैं। पाकिस्तान की शह पर नाचने वाला यह शैतान आज अपनों की मौत पर आंसू बहा रहा है, लेकिन यह कितना खुंखार कातिल है जो हमेशा भारत में मौत बांटता रहा है। इसके किए धमाके और बंदूक से निकली गोली सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान ले चुकी है। लाशों के ढेर पर बैठे इस शैतान को अब अपनों की लाशों को देखकर भी जश्न मनाना चाहिए। ये वही अजहर मसूद है जिसने 2001 में संसद पर हमला कराया था, 2000 में जम्मू कश्मीर विधानसभा पर हमला कराया था, 2016 में पठानकोट में भारतीय वायुसेना के अड्डे पर हमला कराया था और 2019 में पुलवामा में आत्मघाती हमला कराकर सीआरपीएफ के 40 जवानों को शहीद किया था। इस शैतान मसूद अजहर को 1999 में आतंकियों ने भारतीय विमान को हाईजैक कर भारतीय जेल से छुड़ाया था। मसूद अजहर अप्रैल 2019 के बाद कभी सार्वजनिक तौर दिखाई नहीं दिया, इसलिए उसके जिंदा होने की संभावना कम है, क्योंकि उसका परिवार मारा गया लेकिन वो सामने नहीं आया बल्कि उसकी चिट्ठी सामने आई है।

देशहित सर्वोपरि का संदेश

ऑपरेशन सिंदूर पर 7 मई को प्रेस ब्रीफिंग की गई, जिसके जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। उन्होंने दुनिया के साथ भारतीयों को यह संदेश दिया है कि देश में धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। पूरा देश एक धर्म को मानता है वह है-देशहित सर्वोपरि। जो लोग यह कहते नहीं थकते थे कि पीएम मोदी मुसलमान विरोधी हैं, शायद उन लोगों को मैसेज देने के लिए ही एक महिला कर्नल सोफिया कुरैशी के जरिए सेना की कार्रवाई को पूरे विश्व के सामने रखा गया। सरकार ने यह साबित किया कि धर्म के आधार पर देशवासियों में कोई भेदभाव भारत में नहीं किया जाता है। प्रेस ब्रीफिंग के बाद मुस्लिम सेना अधिकारी की खूब प्रशंसा देश में हो रही है, क्योंकि उन्होंने आत्मविश्वास के साथ बेहतरीन तरीके से देश की बातों को इतने बड़े मंच पर रखा। सोफिया का आत्मश्विास ना सिर्फ देशवासियों को गौरवान्वित कर रहा था, बल्कि उनमें देशभक्ति की भावना को भी बढ़ा रहा था। भारतीय सेना की अधिकारी सोफिया ने कहा कि पहलगाम हमले के जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों ने 6 मई की रात पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया। जहां से भारत के खिलाफ आतंकवादी हमलों की साजिश रची जाती है।

- **पाकिस्तान पर पहले भी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक हुई हैं, लेकिन पाकिस्तान ने दोनों स्ट्राइक को स्वीकार नहीं किया था, लेकिन इस बार आतंकियों के नौ ठिकानों पर भारतीय सेना ने स्ट्राइक की तो पाकिस्तान ने 7 मई को कबूला कि भारत ने छह स्थानों पर मिसाइल से हमला किया है।**
- **पहलगाम नरसंहार के 15 दिन के भीतर 6 मई की आधी रात को जब पाकिस्तानी सो रहे थे तब भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया, सेना का यह ऐतिहासिक सैन्य अभियान था, जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में जैश-ए-मोहम्मद, लशकर-ए-तैयबा के नौ आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिलाया गया।**

पाकिस्तान ने खुद दिए हमले के सबूत

भारतीय सेना ने पाकिस्तान पर पहले भी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक की हैं, लेकिन पाकिस्तान ने दोनों स्ट्राइक को स्वीकार नहीं किया था। लेकिन इस बार आतंकियों के नौ ठिकानों पर भारतीय सेना ने स्ट्राइक की तो पाकिस्तान ने 7 मई को कबूला कि भारत ने छह स्थानों पर मिसाइल से हमला किया है। पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पंजाब प्रांत और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ठिकानों पर भारत द्वारा किए गए मिसाइल हमलों को 'युद्ध की कार्रवाई' करार दिया और कहा कि उनके देश को करारा जवाब देने का पूरा अधिकार है। सेना प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने मीडिया से कहा कि पंजाब और पीओके के शहरों पर मिसाइल हमलों में कम से कम 26 लोगों की मौत हुई है और 46 लोग घायल हुए हैं। भारत ने 6 मई की आधी रात को छह स्थानों पर हमला किया। चौधरी ने दावा किया कि अहमदपुर ईस्ट के बहावलपुर इलाके में सुब्हान मस्जिद पर हुए हमले में 13 लोगों की मौत हुई। इनमें दो लड़कियां, सात महिलाएं और चार पुरुष शामिल हैं। जबकि 28 पुरुष और नौ महिलाओं समेत 37 अन्य लोग घायल हुए है। मुजफ्फराबाद में बिलाल मस्जिद को निशाना बनाकर किए गए हमले में तीन लोगों की मौत हुई है, दो लोग घायल हुए है, जिनमें एक लड़की और एक लड़का शामिल है। चौधरी ने कहा कि कोटली में अब्बत मस्जिद को निशाना बनाकर किए गए हमले में 16 साल की लड़की और 18 वर्षीय लड़के की मौत हुई है, जबकि दो लोग घायल हुए। मुरीदके में मालकुरा मस्जिद को निशाना बनाया गया था, जिसमें तीन लोगों की मौत हुई जबकि एक व्यक्ति घायल है। पाक फौज के प्रवक्ता ने कबूला कि सियालकोट और शकरगढ़ इलाके में हुए हमलों में किसी की जान नहीं गई। भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पर की गई गोलीबारी में भी पांच पाक नागरिक मारे गए हैं। चौधरी ने स्वीकारा कि किसी भी समय भारतीय विमान पाकिस्तान की सीमा में दाखिल नहीं हो पाए और किसी भी पाकिस्तानी विमान ने भारत में प्रवेश नहीं किया है। पाकिस्तानी वायुसेना की सभी संपत्तियां सुरक्षित हैं। जबकि पाकिस्तान सरकार के मंत्री चिल्ला रहे थे कि पाकिस्तान की फौज ने भारत के पांच फाइटर जैट गिरा दिए हैं। ●

निहत्थे हिंदुओं पर कायराना हमला

खूबसूरत बैसरन में वो हुआ जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी, कुछ ही पलों में बैसरन लाशों का मैदान बन गया, हिंदू हो, नहीं हो तो कलमा पढ़ो, जान बचाने के लिए किसी ने झूठ भी बोला तो उसके कपड़े उतार कर पहचान की और हिंदू होने पर सिर में गोली मार दी।

22

डा.भारत भूषण
आईएफटीएम

अप्रैल 2025 ये वो तारीख है जो आतंक के इतिहास के काले अध्याय में दर्ज हो गई है। क्योंकि पाकिस्तान के कायर आर्मी चीफ आसीम मुनीर के इशारे पर दुर्दान्त आतंकियों के पहलगाम की बैसरन के हरे भरे मैदान को बेकसूर और मासूम हिंदुओं के खून से लाल कर दिया। 22 अप्रैल की दोपहर बैसरन में गूंजती चीखों और बारूद की गंध ने मानवता की हत्या कर दी। पहलगाम का बैसरन में सैकड़ों परिवार छुट्टियां मना रहे थे, इन्हें नहीं पता था कि अगले पल क्या होने वाला है? लेकिन इस खूबसूरत पर्यटनस्थल में वो हुआ जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी। कुछ ही पलों में बैसरन लाशों का मैदान बन गया। हिंदू हो, नहीं हो तो कलमा पढ़कर सुनाओ, जान बचाने के लिए किसी ने झूठ भी बोला तो उसके कपड़े उतार कर पहचान की और हिंदू होने पर सिर में गोली मारी। एक तरफ जहां गोलियों की तड़तड़ाहट थी तो वहीं महिलाओं व मासूमों की चीख पुकार ने शांत घाटी में कोहराम मचा दिया। बालक अपने पिता की लाश से चिपट कर रोता रहा, नवविवाहिता पति को बचाने के लिए चिल्ला-चिल्ला कर गुहार लगाती रही। पति की मौत पर आंसू बहा रही एक विवाहिता ने आतंकियों से कहा कि मुझे भी गोली मार दो तो आतंकियों ने जवाब दिया, 'जाओ, मोदी को बताना।' ये वो पर्यटक थे जो बैसरन नहीं जाना चाहते थे, लेकिन कुछ घोड़े वाले उन्हें बहला-फुसला या दबाव डाल कर ले गए, घोड़े वालों से रास्ते में हुई बातों के मतलब घटना के बाद निकाले जा रहे हैं। ऐसे अनेक रोंगटे खड़े करने वाले हृदयविदारक नजारों की वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हैं। इन्हीं वीडियो को टीवी न्यूज चैनल वाले बार-बार दिखा रहे हैं। ये वीडियो आतंकियों की कायरता दर्शा रही हैं, तो घोड़े वालों की आतंकियों से साजिश का खुलाशा भी कर रही है। फिर निहत्थों की गोली मारकर हत्या करना कायरता ही होती है। इन आतंकियों की भारतीय सुरक्षा बलों से लड़ने की हिम्मत नहीं है, इसलिए निहत्थों पर हमला करके खुद को बहादुर समझने की गलत फहमी पाले बैठे हैं।

संगठित वैश्विक जिहाद

पहलगाम की यह दर्दनाक घटना फिर से आंखें खोलने के लिए काफी हैं। पहलगाम की तस्वीर किसी मुगलकालीन दमन की नहीं, बल्कि 2025 के बदलते भारत की है, उस नए भारत की जिसका नेतृत्व संस्कार और स्वभाव से राष्ट्रवादी तथा हिंदुत्व के नीति-निर्माताओं के हाथों में है। पहलगाम की घटना को घृणित कट्टरपंथी मानसिकता ने अंजाम दिया है। वो कट्टरपंथी मानसिकता जो सिर्फ मूर्ति पूजा करने वाले हिंदुओं (काफिरों) को जीने लायक नहीं समझती। पहलगाम से निकली रोंगटे खड़े करने वाली चीखें साबित करती हैं कि भारत के सामने जटिल और बड़ी चुनौतियां हैं। जरूरत शांति के लिए हर मोर्चे पर ताल ठोककर जवाब देने की है। जवाब भी ऐसा कि फिर कोई पाकिस्तान जैसा दुश्मन सिर उठाने की जुर्रत न करे। बैसरन की सच्चाई यह है कि 22 अप्रैल को हुआ आतंकी हमला एक वैचारिक युद्ध ही है। ऐसे कायराना हमले साफ-साफ संकेत हैं कि आतंकी केवल हथियारों से नहीं लड़ रहे, बल्कि कट्टरपंथी टेररिस्ट विचारधारा का संगठित वैश्विक जिहाद चला रहे हैं, जिसे लोग सामान्य घटना समझने की गलती कर रहे हैं। भारत के सामने यह चुनौती सिर्फ टेररिस्ट से नहीं, अपितु संगठित वैचारिक गठजोड़ से है, जिसमें एक तरफ हिंदुत्व को मिटाने की साजिश है, तो दूसरी तरफ राजनीतिक इच्छाशक्ति की परीक्षा है।

आतंकी हमलों की टाइमिंग

कथित तौर पर 'सभ्य' और विकसित कहलाने वाले राष्ट्र का अपने हितों तक सीमित रहने की प्रवृत्ति प्रकट करना। भारतीय न्यायपालिका व बौद्धिक तबके द्वारा प्रदर्शित असहज चुप्पी अथवा विचार भिन्नता इस कट्टरपंथी चुनौती को और गंभीर बनाती है। क्योंकि जिहाद सिर्फ आतंक नहीं, अपितु पूरी मानवता के विरुद्ध जिहाद है। पहलगाम के बैसरन में आतंकी हमला न तो कोई आकस्मिक हमला है, न ही ये कहीं से अलग है। यह इस्लामिक जिहाद के उस षडयंत्र का हिस्सा है जो भारत की सांस्कृतिक और हिंदुत्व की आत्मा को दुनिया से मिटाने के उद्देश्य किया गया है। कुछ इस्लामिक मध्यकालीन ग्रंथों और व्याख्याओं में 'काफिर' के प्रति जो नजरिया देखने को मिलता है, वह भाईचारा नहीं बल्कि बहिष्कार, घृणा और हत्या तक को जायज बताता है। यह केवल मजहबी विचारधारा या कट्टरपंथ नहीं अपितु इस्लामिक राजनीतिक का वो संस्करण है जिसने मजहब को एक आतंकी अभियान में बदल दिया है। ऐसे आतंकी हमलों का समय बेहद सोच समझकर तथा रेकी करने के बाद चुना जाता है। फिर सुविधानुसार आतंकी घटना को अंजाम दिया जाता है। इसके बाद भारत विरोधी डीप स्टेट और जॉर्ज सोरोस के स्लीपर मॉड्यूल सक्रिय हो जाते हैं। सोशल मीडिया पर मुसलमानों पर अत्याचार का झूठा नेरेटिव फैलाते हैं। भारत में वामपंथी और डीप स्टेट के स्लीपर मॉड्यूल अलग-अलग समय पर, अलग-अलग तरीके से झूठे नेरेटिव का प्रचार प्रसार करते हैं। ताकि देश और विदेश में इन कट्टरपंथियों की हमदर्द बनकर बैठी वामपंथी बिग्रेड सक्रिय हो जाए। सत्ता विरोधी और भारत विरोधी अपनी पूरी ताकत झूठा नेरेटिव फैलाने में अपनी पूरी झोंक देती है। उदहारण के तौर पर बैसरन की घटना को ही देखिए यह आतंकी हमला तब हुआ जब अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी वेंस अपने परिवार के साथ भारत की यात्रा पर थे। इसी तरह मार्च 2000 में जब तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन भारत दौरे पर थे, तब अनंतनाग जिले के चिट्ठीसिंहपोरा गांव में 36 सिखों का आतंकवादियों ने नरसंहार किया था। 2020 में जब सीएए और एनआरसी के विरोध में दिल्ली के शाहीन बाग में आंदोलन चल रहा था तब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प भारत के दौरे पर थे। उनके भारत आने पर धरना देने वालों में से ही कुछ भारत विरोधी ताकतों ने दंगे की साजिश रची और ताकि वैश्विक बिरादरी में यह संदेश दिया जा सके कि 'भारत में मुसलमानों के साथ अत्याचार हो रहा हैं, भारत में मुसलमानों की कोई सुनवाई नहीं हो रही।'

- **पहलगाम से निकली रोंगटे खड़े करने वाली चीखें साबित करती हैं कि भारत के सामने जटिल और बड़ी चुनौतियां हैं, लिहाजा जरूरत शांति के लिए हर मोर्चे पर ताल ठोककर जवाब देने की है, जवाब भी ऐसा कि फिर कोई पाकिस्तान जैसा दुश्मन सिर उठाने की जुर्रत न करे।**
- **आतंकवाद का यह वही एजेंडा है, जिसकी जड़ें मजहबी किताबों में हैं, जिसकी शाखाएं पाकिस्तान की आईएसआई और तालिबानी नेटवर्क से जुड़ी हैं और जिसे खाद-पानी भारत के भीतर बैठा कथित 'सेक्युलर' गैंग देता है।**

अलग-थलग पड़ा पाकिस्तान

अब जब अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी वेंस परिवार के साथ भारत में तब पहलगाम में इस जघन्य नरसंहार को अंजाम दिया गया। ऐसा इसलिए किया गया ताकि पाकिस्तान कश्मीर विवाद को अंतरराष्ट्रीय मंच पर फिर से हवा दी जा सके। आतंकियों की नरसरी चलाने वाले इस्लामिक देश पाकिस्तान का कश्मीर पर बार-बार बोले जाने वाला झूठ सबके सामने आ चुका है। सब जान चुके हैं कि पाकिस्तान टेररिस्ट को पनाह देने वाला देश है। इसी आतंकवाद की फैक्टरी के वजह से पाकिस्तान में आवाम को दो वक्त की रोटी तक नसीब नहीं हो रही। सेना और राजनेताओं ने लूट मचा रखी है जिसकी वजह से पाकिस्तान दिवालिया होने के कगार पर पहुंच गया है। इस्लामिक देश तक उससे किनारा कर चुके हैं। अब कोई उसे भीख तक देने को तैयार नहीं है। ऊपर से अमेरिका की डोनाल्ड ट्रम्प सरकार ने 26/11 मुंबई हमले के मास्टरमांइड तहव्वुर हुसैन राणा को भारत के हवाले कर आतंकवाद के प्रति अपनी 'जीरो टॉलरेंसश' की नीति भी साफ कर दी है। उसने यह बता दिया है कि आतंक के मुद्दे पर वह भारत के साथ मजबूती से खड़ा है। बैसरन नरसंहार के बाद भी अमेरिका, फ्रांस, रूस, इजरायल, कतर, सऊदी अरब, इटली, आस्ट्रेलिया, जापान, सहित अधिकांश ताकतवर देशों ने भारत के साथ खड़े होने की प्रतिबद्धता जताई है, जबकि पाकिस्तान अलग-थलग पड़ गया है।

अमेरिका की डोनाल्ड ट्रम्प सरकार ने 26/11 मुंबई हमले के मास्टरमांइड तहव्वुर हुसैन राणा को भारत के हवाले कर आतंकवाद के प्रति अपनी 'जीरो टॉलरेंसश' की नीति भी साफ कर दी है, उसने यह बता दिया है कि आतंक के मुद्दे पर वह भारत के साथ मजबूती से खड़ा है।

जॉर्ज सोरोस व डीप स्टेट का जाल

2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने और लगातार तीसरी बार पीएम चुने जाने से भारतीय राजनीति में स्थिरता आई है। लिहाजा पिछले एक दशक में भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना है, मेक इन इंडिया, पीएलआई, एमएसएमई जैसी नीतियों के माध्यम से व्यापार के लिए सुविधाजनक ढांचा तैयार किया। भारतीय सेना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी फौज बनी है। इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में भारत दुनिया के विकसित देशों के बराबर खड़ा है, गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। परंतु विकास के इस पथ को डीप स्टेट के भारत में मौजूद एजेंट बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। जॉर्ज सोरोस और डीप स्टेट के ये स्लीपर मॉड्यूल चाहते है जैसे रूस-यूक्रेन और इजरायल-फिलीस्तीन युद्ध में फंसे हैं और बर्बाद हो रहे वैसे ही भारत को बर्बाद कर दिया जाए। बैसरन में हिंदुओं के नरसंहार और भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव के बीच भारत के विरोधी दल सवाल उठा रहे हैं कि जब पूरा विपक्ष सरकार के साथ है तो फिर पाकिस्तान को जवाब देने में देरी क्यों हो रही है? विपक्षी चाहते हैं कि भारत एक बार पाकिस्तान पर हमला कर दे। फिर डीप स्टेट और जॉर्ज सोरोस, पाकिस्तान के साथ खड़े होंगे और उसकी अंदरखाने आर्थिक मदद करेंगे। जॉर्ज सोरोस व डीप स्टेट का मकसद भारत को कमजोर करना है। गांधी परिवार के जॉर्ज सोरोस से संबंध जग जाहिर हैं, लेकिन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डीप स्टेट और जॉर्ज सोरोस के जाल में फंसने वाले नहीं हैं। पहलगाम की घटना बताती है कि अब युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़ा जाता, यह विचारों और संस्कृति की आंतरिक रक्षा की लड़ाई बन चुका है। अब घर के भेदियों से भी युद्ध लड़ना होता है। यानी भारत के लिए असली चुनौती बंदूकधारी आतंकियों से तो है ही साथ में चुनौती उनसे भी है जो भारत में रहकर पाकिस्तान की भाषा बोलते हैं। जो हर आतंकी घटना के बाद कहते हैं कि आतंक का कोई धर्म नहीं होता, ऐसे में सवाल उठता है कि आतंकियों जन्म मुस्लिम परिवार में ही क्यों होता? आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता तो फिर उन्हें नमाज के बाद दफन क्यों किया जाता है, क्यों नहीं उनकी लाश को मिट्टी का तेल या पेट्राल छिड़कर जला दिया जाता? यदि आतंकियों को कोई धर्म नहीं है तो फिर भारत सरकार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मारे जाने वाले सभी आतंकियों की लाश को या तो पशु-पक्षियों के लिए फेंक देना चाहिए या फिर उनकी लाशों को आग के हवाले कर देना चाहिए। इससे भी साफ हो जाएगा कि आतंकियों का धर्म होता है या नहीं? आतंकवाद का यह वही एजेंडा है, जिसकी जड़ें मजहबी किताबों में हैं। जिसकी शाखाएं पाकिस्तान की आईएसआई और तालिबानी नेटवर्क से जुड़ी हैं और जिसे खाद-पानी भारत के भीतर बैठा कथित 'सेक्युलर' गैंग देता है।

पाक सेना की बगावत

पाक सेना के अधिकारी का कहना है कि आर्मी चीफ असीम मुनीर के बयान की वजह से ही पहलगाम में आतंकी हमला हुआ, भारतीय सेना की ताकत से परिचित पाकिस्तानी सेना में खौफ इस कदर है कि दो दिन के अंदर पाकिस्तानी सेना के 5000 से अधिक अफसरों व जवानों ने इस्तीफा दे दिया है।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

पहलगाम आतंकी हमले के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव है। एक तरफ पाकिस्तान के मंत्री और नेता भारत को परमाणु हमले की धमकी देते हैं, जबकि पाकिस्तानी सेना में इन दिनों बगावती हालात हैं। आर्मी चीफ आसीम मुनीर के खिलाफ बगावती सुर उठने लगे हैं। सेना के अधिकारी ने ही असीम मुनीर से इस्तीफे की मांग कर दी है। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं है जब मुनीर के खिलाफ लोगों ने या सेना ने बगावत की है। इससे पहले भी असीम मुनीर से इस्तीफे की मांग की गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो पाकिस्तानी सेना के अधिकारी का कहना है कि पाकिस्तान आर्मी चीफ असीम मुनीर के बयान की वजह से ही पहलगाम में आतंकी हमला हुआ। भारतीय सेना की ताकत से परिचित पाकिस्तानी सेना में खौफ इस कदर हावी है कि पाक फौजियों ने इस्तीफों की झड़ी लगा दी है। हालात ये हो गए हैं कि दो दिन के अंदर ही पाकिस्तानी सेना के 5000 से अधिक अफसरों व जवानों ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया है। दावा किया जा रहा है कि कई और सेना के अधिकारी व जवान भी इस्तीफा देकर घर लौटने की फिराक में हैं। इस तरह से इस्तीफों की झड़ी लगने से पाकिस्तानी सेना के उच्चाधिकारियों में खलबली मच गई है। पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों का कहना है कि अगर इन हालातों पर काबू नहीं पाया गया तो हमारी सेना का मनोबल एकदम से गिर जाएगा। पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पेशावर स्थित पाकिस्तानी सेना की 11वीं कोर के सैन्य कमांडर जनरल उमर बुखारी ने आर्मी चीफ असीम मुनीर को पत्र लिखकर सेना की 12वीं कोर के जवानों और अधिकारियों द्वारा दिए जा रहे इस्तीफों पर चिंता जाहिर की है। सोशल मीडिया पर ये पत्र भी वायरल हो रहा है। पिछले दो दिनों के अंदर ही पाकिस्तानी सेना के 200 से अधिक अधिकारी, 600 जवान और इसी तरह से नॉर्दर्न कमांड में 100 से अधिक अधिकारी और 500 जवान इस्तीफा दे चुके हैं। जबकि भारत की सीमा से लगी एलओसी पर तैनात 75 अधिकारी और 500 जवान इस्तीफा देकर अपनी जान बचाकर भाग गए हैं। अब जब भारत और पाकिस्तान के बीच टेंशन है तब पाकिस्तान के आर्मी चीफ आसीम मुनीर ने अपना परिवार प्राइवेट जेट से विदेश पहुंचा दिया और यहां पाकिस्तान फौज व जनता को युद्ध में झोकने के लिए तैयार है। खुद भी बंकर में छिपा हुआ है। यही डर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के बयानों से भी नजर आ रहा है। वो इस मामले में अब रुस और चीन से मध्यस्थता की उम्मीद कर रहे हैं।

सेना ही पाकिस्तानियों की दुश्मन

यह वो पाकिस्तानी फौज है जिसने पाकिस्तान को कगांल बना दिया है। बाकी बचीखुची कसर पाकिस्तान के हुक्मरानों ने पूरी की है। पाकिस्तान के ज्यादातर आर्मी चीफ और जरनल अपने सेवाकाल में पाकिस्तान की जनता के हक पर डाका डालकर यूरोप और अरब देशों में अपना एंपायर खड़ा कर लेते हैं और रिटायर होने के बाद चुपचाप पाकिस्तान के हाथ में कटोरा थमाकर निकल जाते हैं। रिटायर होने के बाद एक भी जनरल और आर्मी चीफ पाकिस्तान में नहीं रहता। यह बात पाकिस्तान की आवाम भी भलीभांति जानती है। सोशल मीडिया पर ऐसी हजारों वीडियो मिल जाएंगी जिसमें पाकिस्तानी आवाम भारत और पाकिस्तान की सेना की तुलना करती है। दावा करती है कि भारत का एक भी आर्मी चीफ रिटायर होने के बाद भारत नहीं छोड़ता और पाकिस्तान का एक भी आर्मी चीफ रिटायर होने के बाद पाकिस्तान में नहीं रहता। यानी पाकिस्तान के आर्मी चीफ और जरनलों आवाम की सबसे बड़ी दुश्मन तो पाक सेना ही है। इसी पाक सेना की वजह से पाकिस्तानने ही पाकिस्तान को भिखारी बनाया है। एक तरह से कहा जा सकता है कि पाकिस्तानी की छवि आतंकिस्तान की बनी है। इसलिए भी भारत का पड़ोसी मुल्क दशकों से मुफलिसी का सामना कर रहा है। कई मौके ऐसे भी आए जब पाकिस्तान की हालात इतनी खराब हो गई कि बिना भीख और कर्ज के एक महीने के आयात के भी लाले पड़ गए। पड़ोसी मुल्क भले ही भीख और आईएमएफ के कर्ज के भरोसे चल रहा है। लेकिन आम आदमी तो आटे-दाल के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन पाकिस्तानी आर्मी और उसके अफसरों की अय्याशी कम नहीं होती। पाक आर्मी के जनरल आज भी आलीशान बंगलों में रहते हैं और आर्मी के अरबों डॉलर के बिजनेस एंपायर की देखरेख करते हैं, जिसमें सीमेंट, रियल एस्टेट से लेकर औद्योगिक संयंत्रों, बैंकों, बेकरी, स्कूलों और विश्वविद्यालयों, होजरी कारखानों, दूध की डेरियों, स्टड फार्मों आदि तक लगभग हर मीठी चीज में उसका दखल है। यह सूची पाकिस्तान के आठ प्रमुख शहरों में पॉश कॉलोनियों और आलीशान सिविल सोसाइटियों के मालिक बनने तक है। इसे आसानी से ऐसे समझ सकते हैं कि पाक आर्मी देश की सुरक्षा से ज्यादा बिजनेस पर ध्यान देती है। पाकिस्तानी सेना किसी प्रोफेसनल आर्मी की तरह कम और एक संगठित माफिया अथवा सिंडिकेट की तरह ज्यादा काम करती है। जहां शक्ति का पैमाना युद्ध के मैदान में जीत से नहीं, बल्कि रियल एस्टेट होल्डिंग्स, विदेशी बैंक खातों और आकर्षक बिजनेस के एकाधिकार से होता है। इसके अलावा आर्मी जनरलों में विदेशों में जमीन और फ्लैट खरीदने की भी होड़ मची रहती है। पाकिस्तानी सेना के 99.9 प्रतिशत आर्मी चीफ और शीर्ष अधिकारी रिटायरमेंट के बाद विदेश जाकर बस जाते हैं।

> **आर्मी में भ्रष्टाचार का खुलासा करने वाले पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का सेना अपहरण कर गायब कर देती है, यदि सेना के व्यापारिक लेन-देन पर सवाल उठाए जाते हैं, तो अखबारों को सेंसर कर दिया जाता है, टीवी एंकरों को बर्खास्त करा दिया जाता है।**

> **सरकारी बजट से सेना अपने स्वयं के खर्चों का विशेष ध्यान रखती है, जिसमें शानदार वेतन, आजीवन पेंशन और सेवानिवृत्त अधिकारियों को उदार भूमि अनुदान शामिल हैं, सैन्य खर्च पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था के उन क्षेत्रों में से एक है जो कभी भी धन की कमी का सामना नहीं करता है।**

पाकिस्तानी सेना का बजट

2024-25 में पाकिस्तान का रक्षा बजट में लगभग 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी की घोषणा करते हुए वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब ने 2,122 अरब पाकिस्तानी रुपये आवंटित किए थे। यानी पाकिस्तान ने डिफेंस पर खर्च बढ़ाया था। ऐसा तब किया गया था जब पाकिस्तान की सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे के लिए धन में कटौती कर रही थी। इसी सरकारी बजट से सेना अपने स्वयं के खर्चों का विशेष ध्यान रखती है, जिसमें शानदार वेतन, आजीवन पेंशन और सेवानिवृत्त अधिकारियों को उदार भूमि अनुदान शामिल हैं। सैन्य खर्च पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था के उन क्षेत्रों में से एक है जो कभी भी धन की कमी का सामना नहीं करता हैं। देश अपने कर्ज को चुकाने में चूक कर सकता है, लेकिन जनरल अपनी भोग विलासिता को कम नहीं करते। लिहाजा पाक की कठपुतली सरकारें इसकी भरपाई जनता की जेब पर डाका डालकर करती है। आईएमएफ के कर्ज के सहारे चल रहा पाकिस्तान हर बार कर्ज लेते समय कड़ी और बड़ी शर्तें मानता है और कर्ज लेने के लिए जनता पर टैक्स थोप देता है, बिजली बिल में बेहताशा वृद्धि कर देता है, पैट्रोलियम के रेट बढ़ा देता है, महंगाई बढ़ने के साथ सब्सिडी में कटौती कर देता है। लिहाजा पाकिस्तानी सरकार की तरह पाकिस्तान जनता भी हाथ में कटोरा लेकर भीख मांगती है।

सेना का भूमाफिया रूप

पाक सेना ने दशकों से अपने रिटायर अफसरों के लिए वेलफेयर योजनाओं के नाम पर विशाल रियल एस्टेट का एंपायर खड़ा कर रखा है। सेना द्वारा संचालित कुलीन आवास समितियां, प्रमुख शहरों में प्रमुख शहरी भूमि पर काबिज हैं। आर्मी अफसरों को टोकन कीमतों पर प्लाट मिलते हैं, जिसे बाद में ऊंची कीमतों पर दूसरों को बेच दिया जाता है। कुछ मामलों में इस योजना के हिस्से के रूप में पूरे टाउनशिप विकसित कर दिए जाते हैं। डीएचए वैली इस्लामाबाद घोटाला सुर्खियों में रहा था। इसमें आर्मी अफसरों ने प्राइवेट डेवलपर्स के साथ मिलकर टाउनशिप विकसित की थी। पाकिस्तानी सेना ये सब शहरी जमीनों पर ही करती है। रिटायर जनरलों को तो नियमित रूप से हजारों एकड़ कृषि भूमि गिफ्ट की जाती है, जो देश में सबसे उपजाऊ होती है। 2022 में क्रेडिट सुइस बैंक की एक रिपोर्ट के लीक होने से पता चला था कि पूर्व सेना प्रमुख जनरल राहील शरीफ को रिटायमेंट के बाद लाहौर में 100 एकड़ से अधिक बेसकीमती कृषि भूमि गिफ्ट में दी गई थी। सेना के कारोबारी साम्राज्य को जारी रखने के लिए यह एक कीमती उपहार माना गया था। यह पाकिस्तान का एक ऐसा मॉडल है जिसकी कोई भी भू-माफिया अवश्य ही प्रशंसा करेगा।

पाकिस्तानी सेना का कारोबार?

पाकिस्तान की सेना मिलबस, यानी सैन्य व्यवसाय के रूप में जाना जाने वाला एक विशाल कारोबारी साम्राज्य भी चलाती है। फौजी फाउंडेशन, शाहीन फाउंडेशन और आर्मी वेलफेयर ट्रस्ट जैसी संस्थाएं सीमेंट और बैंकिंग से लेकर उर्वरक और रसद तक के उद्योगों में काम करती हैं। ये कोई पाकिस्तानी सेना के अफसरों के मां-बाप के उद्योग नहीं हैं। ये अरबों डॉलर के उद्यम हैं जो टैक्स छूट, तरजीही अनुबंध और सरकार की शून्य निगरानी से खड़े हैं। यानी पाक सेना माफिया के रूप में काम करती है। इन फर्मों के बोर्ड में रिटायर्ड सैन्य अफसर ही रहते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि सेना द्वारा सक्रिय सेवा छोड़ने के बाद भी लंबे समय तक धन सेना के ही हाथों में रहे। उदाहरण के लिए, फौजी फाउंडेशन को कभी-कभी सेना द्वारा संचालित फॉर्च्यून 500 कंपनी के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसके शीर्ष पदों पर लगभग पूरी तरह से पूर्व जनरलों का कब्जा है। ये रिटायर जनरल अपने वित्तीय लेन-देन को पाकिस्तान तक ही सीमित नहीं रखते हैं। बल्कि 2021 में पेंडोरा पेपर्स लीक होने पर पता चला कि कई सीनियर सैन्य अफसरों के पास दूसरे देशों लंदन और दुबई में संपत्तियां, आलीशान बंगलें और विदेशों में करोड़ों डॉलर के व्यवसाय हैं।

पाक फौज की समानांतर सरकार

किसी भी अच्छे माफिया की तरह, पाकिस्तानी सेना भी सुनिश्चि करती है कि कोई भी उसके वर्चस्व को चुनौती न दे। सेना राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति और जरूरत होने पर सरकारों को भी नियंत्रित करती है। आर्मी के आशीर्वाद के बिना कोई भी प्रधानमंत्री टिक नहीं सकता। जो लोग कोशिश करते हैं यानी जैसे 1999 में नवाज शरीफ ने या 2022 में इमरान खान ने सेना का विरोध किया तो सेना ने दोनों को तुरंत जेल का दरवाजा दिखा दिया। आर्मी में भ्रष्टाचार का खुलासा करने वाले पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का सेना अपहरण कर गायब कर देती है। उन्हें धमकियों या इससे भी बदतर स्थिति का सामना करना पड़ता है। इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) यह सुनिश्चित करती है कि असहमति पर नियंत्रण रखा जाए। जब सेना के व्यापारिक लेन-देन पर सवाल उठाए जाते हैं, तो अखबारों को सेंसर कर दिया जाता है, टीवी एंकरों को बर्खास्त करा दिया जाता है और असंतुष्टों को रहस्यमय तरीके से गायब कर दिया जाता है। कुल मिलाकर पाकिस्तान की सेना इतनी मजबूत, इतनी शक्तिशाली और इतनी अमीर है कि उसे जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता।

पाक जनता लुटती रही

याद कीजिए धर्म के नाम पर विभाजन के समय पाकिस्तान की स्थिति भारत से बेहतर थी, लेकिन आज वहां की जनता गुरबत में जी रही है। इस सब के लिए पाकिस्तानी सरकारों व सेना की गलत नीतियां जिम्मेदार हैं। क्योंकि इन्होंने पाकिस्तानियों की जिंदगी जहन्नुम से भी बदतर बना दी है। पाकिस्तानी सेना और हुक्मरानों की वजह से आवाम दाने-दाने के लिए मोहताज है। इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि पाकिस्तान की सत्ता और सत्ता के करीब रहे राजनेताओं ने जमकर आवाम को लूटा। जिन्हें पाक सेना का आशीर्वाद मिला वो भी मालामाल हो गए। लेकिन आम पाकिस्तानी आज भारतीयों से तुलना करने लायक भी नहीं रहा। आजादी के समय पाकिस्तानी बच्चे और बड़े भारतीयों की तरह ही जीते थे। उनकी कमाई भी अच्छी थी। किसी देश के आम नागरिकों की आर्थिक दशा क्या है? इसका अंदाजा वहां की प्रति व्यक्ति आय से लगता है। देश की आजादी के 13 साल बाद यानी 1960 में भारत और पाकिस्तान में प्रति व्यक्ति आय लगभग बराबर थी। मतलब दोनों देशों में प्रति व्यक्ति आय 85 से 82 डॉलर थी। किंतु अब हालत ये है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय 2,711 डॉलर है तो पाकिस्तान का 1,581 डॉलर रह गई है। पाकिस्तान के लोगों की कमाई कम है जिसका असर उनकी सेहत पर पड़ रहा है। पाकिस्तानी सरकार के पास सेना पर लुटाने के लिए तो पैसे हैं, लेकिन आम नागरिकों के सेहत पर खर्च करने के नाम पर वो कंगाल हो जाती है। विशुद्ध रूप से पाकिस्तान को लूटने और कारोबार करने में लगी पाक सेना का आर्मी चीफ और हुक्मरान दावा करते हैं कि वो भारत की प्रोफेशनल आर्मी से जज्बे के साथ लड़ेगी। इन्हें ये भी नहीं पता कि युद्ध जज्बे से नहीं बल्कि दिमाग से लड़े जाते हैं। ●

मोदी ने छूट दे दी अब भुगतो

पाकिस्तान की स्थापना धर्म के आधर पर हुई इसलिए वहां बात-बात पर इस्लाम कुरान, कुरान इस्लाम के इर्द-गिर्द ही सारा सिस्टम सिमटकर गया, तरक्की के नाम पर पाकिस्तान सुई तक नहीं बनाता और भारत में जहां हर धर्म के लोग शांति के साथ रह रहे हैं मिसाइल, जेट ही नहीं बना रहा वरन मंगल और चांद को भी हैलो बोल रहा है।

प्रदीप भट्ट
मेरठ

भारत में दो कहावतें बहुत प्रसिद्ध हैं एक है 'जब गीदड़ की मौत आती है तो वो शहर की ओर भागता है' और दूसरी है 'कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं हो सकती' हैरानी की बात ये है कि ये दोनों पुरानी कहावतें पाकिस्तान पर सौ फीसदी फिट बैठती हैं। 1947 में जब कुछ जाहिल लोगों की जाहिल ख्वाहिश ने पाकिस्तान को जन्म दिया तो कारण ये दिया गया कि मुसलमान और हिंदू एक साथ नहीं रह सकते। कुछ गोरे अंग्रेजों और कुछ काले अंग्रेजों (काले अंग्रेजों से तात्पर्य वो लोग जिन्होंने इंग्लैंड में पढ़ाई लिखाई की और आजाद भारत के सर्वेसर्वा बने) ने दो देश बना दिए एक भारत और दूसरा पाकिस्तान। पाकिस्तान की स्थापना ही चूंकि इस्लाम के आधर पर हुई इसलिए वहां बात-बात पर इस्लाम कुरान, कुरान इस्लाम के इर्द गिर्द ही सारी व्यवस्थाएं सिमटकर रह गई। तरक्की के नाम पर पाकिस्तान सुई तक नहीं बनाता और भारत में जहां हर दीन-धर्म के लोग अमूमन शांति के साथ रह रहे हैं वहीं मिसाइल, जेट ही नहीं बना रहा वरन मंगल और चांद को भी हैलो बोल रहा है। आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और दिसंबर तक चौथी अर्थव्यवस्था बन जाएगा वहीं पाकिस्तान ग्रे लिस्ट में अंदर बाहर हो रहा है। भारत जहां विकास की ओर तेजी से अग्रसर है वहीं पाकिस्तान आतंक और आतंकवादी पैदा करने में अव्वल नंबर पर काबिज है।

नेहरू के पापों का बोझ

वैसे पाकिस्तान का जन्म झूठ, फरेब और मक्कारी से हुआ है। इसलिए 1948 में कबालियों के भेष में पाकिस्तानी सेना ने भारत पर आक्रमण किया, भारत ने जवाबी कार्रवाई की और नापाकियों को सबक सिखा दिया किंतु नेहरू ने एक गलती की और वो यूएनओ चले गए। लिहाजा सीज फायर घोषित होने पर भारत पाकिस्तान द्वारा कब्जाई कश्मीरी जमीन से हाथ धो बैठा। 1962 में तत्कालीन सरकार के कुछ गलत निर्णयों से भारत को चीन से हार का दंश झेलना पड़ा किंतु 1967 में नाथूला की संक्षिप्त जंग में भारत की सेनाओं द्वारा चीन को उसके हिस्से में घुसकर ऐसी मार लगाई कि चीन उससे अभी तक उभरा नहीं है। भारतीय सेना के जवानों ने चीनी सैनिकों को पत्थर पर पटक-पटक कर यमलोक पहुंचाया था। 1965 में पाकिस्तान ने दुस्साहस किया और मुंह की खाई, कुछ साल शांति के साथ गुजारने के बाद 1971 में फिर पाकिस्तान ने हिमाकत की और पूर्वी पाकिस्तान के दो हिस्से करके बांग्लादेश के रूप में एक नया देश बनवाने के लिए भारत को विवश किया। यहां ये उल्लेखनीय है कि विश्व के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि किसी देश के 93000 सैनिकों ने सरेंडर किया। 13 अप्रैल 1984 को सियाचिन ग्लेशियर में पाकिस्तान कब्जा करता उससे पहले ही भारत ने ऑपरशन मेघदूत लॉन्च कर पाकिस्तान का हैप्पी बर्थडे कर दिया। अब पाकिस्तान तो पाकिस्तान ठहरा 19वीं सदी बीतते बीतते 1999 में फिर उड़ता हुआ तीर अपने ऊपर ले लिया और भारत द्वारा ढंग से कुटाई करवाकर ही माना।

1962 में तत्कालीन सरकार के कुछ गलत निर्णयों से भारत को चीन से हार का दंश झेलना पड़ा किंतु 1967 में नाथूला की संक्षिप्त जंग में भारत की सेनाओं द्वारा चीन को उसके हिस्से में घुसकर ऐसी मार लगाई कि चीन उससे अभी तक उभरा नहीं है।

अब देश में विस्फोट नहीं होते

एक समय था जब भारत में कभी दिल्ली कभी मुंबई, पुणे, जयपुर कभी अहमदाबाद कभी हैदराबाद में ब्लास्ट होते रहते थे, भारत की तत्कालीन कमजोर सरकारों द्वारा बस पाकिस्तान को डोजियर पर डोजियर भेजे जाते थे और पाकिस्तान उन्हें डस्टबीन में फेंकता रहता था। सबसे अधिक तकलीफ 26 नवंबर-2008 को देश की वित्तीय राजधानी मुंबई पर हुए आतंकवादी हमले में हुई क्षति का अंदाजा इसी से लगा लीजिए कि इस हमले में 166 मासूम लोगों ने अपनी जान गवांई और 300 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे। ये हमला लश्कर-ए-तैयबा से प्रशिक्षित 10 आतंकियों ने किया था। जिसमें से एक आतंकी अजमल कसाब पकड़ा गया जिसे बाद में फांसी दी गई। ये भारत की संप्रभुता पर सीधा हमला था किंतु तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने इसके विरुद्ध पाकिस्तान पर कोई कार्रवाई नहीं होने दी। जिससे पाकिस्तान को आतंकवाद को खाद पानी देने में प्रोत्साहन मिला। 2014 में जैसे ही भारत में भाजपा सरकार बनी तो लोगों को भरोसा हुआ कि अब आतंकवाद के नट बोल्ट कसे जाएंगे और ऐसा हुआ भी। जम्मू कश्मीर को छोड़कर भारत के शेष हिस्से में पिछले ग्यारह वर्षों में बम धमाके बंद हो गए। किंतु पाकिस्तान ने 2016 में उड़ी पर दुस्साहस किया फिर 26 फरवरी 2019 को पठानकोट पर दुस्साहस किया, भारत ने पाकिस्तान को ऐसा तगड़ा जवाब दिया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की बेज्जती पर बेज्जती होती चली गई। किंतु पाकिस्तान न पहले सुधरा था तो अब क्या सुधरेगा और वो पाकिस्तान ही क्या जो सुधर जाए।

ओवैसी की पार्टी सरकार के साथ

22 अप्रैल की पहलगाम के बैसलर की खौफनाक घटना से पूरे देश का गुस्से से उबलना लाजिम था। प्रधानमंत्री मोदी सऊदी अरब का दौरा छोड़कर सीधे भारत पहुंचे और एयरपोर्ट पर ही पहली बैठक कर डाली उधर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन भी अमेरिकी दौरा बीच में छोड़कर भारत आ गई। आनन-फानन में फैसले लेकर कुछ भी करना न तो मोदी की आदत है और न ही फितरत है लिहाजा सीसीए की पहली मीटिंग में पांच फैसले लिए जिसमें सेना को एक्शन लेने की खुली छुट और सिंधु जल समझौते को रद्द करने का निर्णय लिया भी शामिल था। फिर हर रोज एक नया फैसला लेकर पाकिस्तान की कमर हाथ पैर सब तोड़ने की प्रक्रिया शुरू हुई। उधर पाकिस्तान को भी समझ आ गया कि अबकी बार कुछ ज्यादा बड़ी गलती कर दी है सो जैसे वहां के नेताओं की आदत है कि रोज परमाणु बम लेकर पॉपकॉन की तरह उछलने लगे। अब इस सबके बीच भारत कुछ नेताओं ने आपदा में अवसर तलाशने की कोशिश शुरू कर दी जिसका उत्तर उन्हें भरपूर मिला। एआईएमआईएम के इतिहास को फिलहाल छोड़ दें तो आश्चर्यजनक रूप से असदुद्दीन ओवैसी और उनकी पार्टी दृढ़ता के साथ सरकार के साथ खड़ी नजर आई। कारण जो भी रहे हों किंतु प्रत्यक्ष रूप से ओवैसी ने राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया और पाकिस्तान को ललकारते सरकार के हर फैसले का समर्थन किया। लिहाजा कुछ पंक्तियां ओवैसी के लिए!

दोस्तों की अब यही पहचान है, खंजरो के पीठ पर निशान हैं।
धर्म का निरपेक्ष रूप देखिए, मस्जिदों में हो रहा गुणगान है।
लड़ते तो हैं हम भी आपस में 'प्रदीप', पर रकीबो के लिए शैतान हैं।

ऑपरेशन सिंदूर

ये तो पक्का था मोदी बदला तो लेंगे सो पाकिस्तानी सेना ने सरकारी नेताओं से कहलवाना शुरू कर दिया बस 72 घंटे, 48 घंटे, 24 से 36 घंटे। अपनी पुरानी बीमारी से ग्रसित पाकिस्तान बार-बार अपने पाव आधा पाव के परमाणु हथियारों का ढिंढोरा पीटने से भी बाज नहीं आया। शायद इसलिए कहा गया है कि 'विनाश काले विपरित बुद्धि।' अब इनसे कोई पूछे भैय्या मोदी जी की आदत से परिचित नहीं हो क्या? तभी आएं-बाएं-शाएं कुछ भी बके जा रहे हो। अब नरेंद्र मोदी, पुतिन थोड़े ही हैं जो यूक्रेन पर 24 फरवरी को ही हमला करेंगे या बेंजामिन नेतन्याहू हैं जो हमास के हमले का जबाव 1-2 दिन में ही दे देंगे। ये मोदी हैं पहले दौडाएंगे फिर थकाएंगे और चुपके से पेल देंगे और वही हुआ। इधर-उधर

- **1965 में पाकिस्तान ने दुस्साहस किया और मुंह की खाई, कुछ साल शांति के साथ गुजारने के बाद 1971 में फिर पाकिस्तान ने हिमाकत की और पूर्वी पाकिस्तान के दो हिस्से करके बांग्लादेश के रूप में एक नया देश बनवाने के लिए भारत को विवश किया।**
- **26-11 का हमला लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकियों ने किया था, जिसमें से एक आतंकी अजमल कसाब पकड़ा गया था, ये भारत की संप्रभुता पर सीधा हमला था किंतु तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने इसके विरुद्ध सेना को पाकिस्तान पर कार्रवाई करने से रोक दिया था।**

की बातें आज ये होगा कल वो होगा परसों मॉक ड्रिल होगी 7-8 को हवाई अभ्यास होगा, पाकिस्तान ने सोचा चलो 8 मई तक सांस लेंगे। उधर मोदी 6 मई की रात 1.05 से 1.25 बजे तक आतंकियों से 9 ठिकानों सहित 21 टारगेट फिक्स कर कुल 24 मिसाइलों से कायर आतंकी मसूद अजहर के कुनबे को ठोक दिए। भारत ने सवाई नाला कैंप, मुजफ्फराबाद, सैयदना बिलाल कैंप, मुजफ्फराबाद, गुलपुर कैंप, कोटली, अब्बास कैंप, कोटली, बरनाला कैंप, भिबर, सरजाल कैंप, सियालकोट, मेहमूना जोया कैंप, सियालकोट, मरकज ताईबा, मुरीदके और मरकज सुभान, बहलावपुर ठिकानों पर बारूद बरसा दिया। आशंका तो ये भी है कि मसूद अजहर भी पतली गली से जन्नत नशी हो गया है। खैर उसकी एक चिट्ठी वायरल हो रही है जिसमें वह लिख रहा है कि खुदा मुझे भी उठा ले। बात कुछ हजम नहीं हो रही जिसके परिवार के सभी लोग निपट लिए हों वो जनाजे में भी नहीं दिख रहा जबकि चीफ ऑफ स्टाफ पाकिस्तान की ओर से अंतिम विदाई का गुलदस्ता ट्रेंड कर रहा हो तो कहने को जी करता ही है कि मामला कुछ गड़बड़ है। इससे ये भी सिद्ध होता है कि विश्व में फैले आतंकवाद का पोषक सिर्फ और सिर्फ पाकिस्तान ही है और उसके आका पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया ऐजेंसी आईएसआई है। ये पूरे विश्व के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ऑपरेशन सिंदूर चालू आहे

अब पाकिस्तान तो पाकिस्तान है, भारत की नकल करते हुए उसने भी 7 मई की रात 1 बजे से डेढ़ बजे के बीच भारत के नागरिक व सैन्य ठिकानों पर हमले करने की कोशिस की जिसमें एक गुरुद्वारा भी शामिल है जिसमें 3 बच्चों सहित 15 लोगों के मारे जाने की खबर है। इसके उत्तर में भारत ने 8 मई के दिन में कराची, फैसलाबाद, रावलपिंडी और लाहौर स्थित सेना के हेडक्वाटर के डिफेंस सिस्टम को तबाह कर दिया यानी पाकिस्तान ने फिर सबक नहीं सीखा और पाकिस्तान ने भारत के जम्मू-कश्मीर, गुजरात, पंजाब और राजस्थान में कई फ्रंट खोल दिए हैं। इससे लग रहा है कि इस बार पाकिस्तान अपने कई टुकड़े करवाकर ही मानेगा।

जबर मारे और रोने न दे

अंततोगत्वा पाकिस्तान ने फुल फ्लैशड जंग शुरुआत की है। भारत ने पहले उसके ड्रोन रोके और अब लाहौर सरगोधा और फैसलाबाद के डिफेंस सिस्टम बर्बाद कर दिए। भारत ने पाकिस्तान के 2 जेएफ-17 फाइटर जेट, एक एफ-16 और अवाक्स जेट मार गिराए हैं। एक पायलट भी भारत की गिरफ्त में है। नेवी के हिस्से में कराची आया है इसलिए नेवी ने अरब सागर में लड़ाई शुरू कर दी है। यानी जल से थल से और नभ से भारत अब पाकिस्तान पर कहर बनकर टूट रहा है। पाकिस्तान की हालत का अंदाजा इसी बात से लगा लीजिए कि इधर भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के लगभग सभी शहरों पर बमबारी जारी है उधर बलूचिस्तान में बीएलए राकेट लांचरों से पाकिस्तान को ठोक रहा है और इस आपा धापी में इमरान समर्थक सड़कों पर आ गए हैं कि इमरान को रिहा करो। मतलब पीओके और पाकिस्तान का सर्वनाश तय है।

जाति जनगणना का रास्ता साफ

राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव जैसे नेता तीन साल से जाति जनगणना का मुद्दा लेकर घूम रहे थे, यूपी में लोकसभा चुनाव के दौरान अखिलेश ने पीडीए को बड़ा मुद्दा बनाया था, राहुल गांधी बार-बार इसकी मांग कर रहे थे, लेकिन मोदी ने जाति जनगणना कराने का ऐलान करके इन नेताओं के हाथ से ये मुद्दा भी छीन लिया।

एचपी शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जाति जनगणना कराने का फैसला कोई जल्दबाजी में लिया गया फैसला नहीं, बल्कि एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। सरकार ने यह फैसला कई चीजों को ध्यान में रखते हुए लिया है। केंद्र सरकार को 2029 में नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण) लागू करना है। ये भी सच है कि बिहार के मुख्यमंत्री और एनडीए के सहयोगी नीतीश कुमार चाहते थे कि जाति के आधार पर जनगणना हो। लिहाजा मोदी ने जातीय जनगणना का फैसला कर एक बार फिर दिखा दिया कि उनकी टाइमिंग जबरदस्त होती है। राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव जैसे नेता पिछले तीन साल से जाति जनगणना का मुद्दा लेकर घूम रहे थे। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के दौरान अखिलेश ने पीडीए (पिछड़ा दलित अल्पसंख्यक) को बड़ा मुद्दा बनाया था। राहुल गांधी बार-बार इसकी मांग कर रहे थे। लेकिन मोदी ने जाति जनगणना कराने का ऐलान करके इन नेताओं के हाथ से ये मुद्दा भी छीन लिया। गौर देने वाली बात ये है कि जनगणना का ऐलान करते समय केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा जाति के आधार पर जनगणना का विरोध किया है और इसे कभी लागू नहीं होने दिया। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के शब्दों पर गौर करने की जरूरत है। उन्होंने कहा ये समता, समरसता, सुशासन और सामाजिक न्याय के एक नए युग का आरंभ है। इससे पता चलेगा कि भाजपा जातिगत जनगणना के मुद्दे को किस लेवल तक ले जाना चाहती है। जातियों के आंकड़े आने में तो तीन-चार साल का समय लगेगा किंतु इसका पहला असर पांच महीने बाद बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव में साफ दिखाई देगा, क्योंकि महागठबंधन के हाथ से एक बड़ा मुद्दा खिसक कर भाजपा के पाले में आ जाएगा। 2027 में जब उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव होगा, उस समय जाति जनगणना का काम चल रहा होगा। लिहाजा यूपी चुनाव में भाजपा जाति जनगणना का लाभ लेने से नहीं चूकेगी। तभी तो कहा जाता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जो करते हैं उसके पीछे दूर की सोच होती है। जिसे समझना अभी विपक्ष में बैठे राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, शरद पवार, ममता बनर्जी जैसे नेताओं के लिए दूर की कोड़ी है।

परिसीमन भी होना है

सरकार ने यह फैसला परिसीमन को ध्यान में रखकर भी किया है। जाति जनगणना की प्रश्नावली में कुछ महत्वपूर्ण संशोधन किए जाएंगे। जनगणना में पूछे जाने वाले प्रश्नों में धर्म के अलावा जाति का कॉलम भी जोड़ा जाएगा। यह कॉलम भरना सभी धर्मों के अनुयाइयों के लिए अनिवार्य होगा। इसमें एन्यूमेरेटर या गिनती करने वाले मुस्लिम धर्म के मतावलंबियों से भी उनकी जाति पूछेंगे। क्योंकि मुसलमानों में भी पसमांदा मुसलमानों में कई पिछड़ी जातियां हैं। इस बार की जनगणना में मुसलमानों की सामाजिक स्थिति और जाति व्यवस्था को भी सामने लाया जाएगा। इसके आधार पर पिछड़े मुसलमानों के लिए आरक्षण की मांग उठाई जा सकती है, चूंकि संविधान धर्म के आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं देता है, लिहाजा यह मांग स्वीकार नहीं की जा सकती। राजनीतिक हलकों में जाति जनगणना के फैसले की टाइमिंग को लेकर हैरानी है। ऐसे में सवाल उठाया जा रहा है कि जब सारा देश सांसें रोककर पहलगाम आतंकी हमले के गुनहगारों को सजा देने का इंतजार कर रहा है, सरकार ने अचानक जाति जनगणना का फैसला क्यों कर लिया? इसका सीधा सा जवाब है कि मोदी सरकार बिना होमवर्क किए कोई फैसला नहीं लेती। यह फैसला भी अचानक नहीं हुआ बल्कि इस पर पिछले कई महीनों से काम चल रहा था। सरकार का मकसद है कि 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी जाए। इसलिए परिसीमन पर लगा फ्रीज भी अगले साल हटने जा रहा है। उसके बाद परिसीमन आयोग का गठन होगा। आयोग को काम करने के लिए जनसंख्या के आंकड़ों की दरकार होगी और यह काम बिना जनगणना के नहीं हो सकता। परिसीमन आयोग देश भर का दौरा करेगा और जनता से सुझाव आमंत्रित करेगा। उसी आधार पर नई लोकसभा सीटों के गठन और उनकी संख्या बढ़ाने के बारे में फैसला होगा। परिसीमन आयोग की रिपोर्ट आने के बाद ही विधायिका में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने वाला नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू हो सकेगा।

- **2027 में यूपी चुनाव में भाजपा जाति जनगणना का लाभ लेने से नहीं चूकेगी, इसलिए कहा जाता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जो करते हैं उसके पीछे दूर की सोच होती है, जिसे समझना विपक्ष में बैठे राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, शरद पवार, ममता बनर्जी जैसे नेताओं के लिए दूर की कोड़ी है।**
- **जनगणना में पूछे जाने वाले प्रश्नों में धर्म के अलावा जाति का कॉलम भी जोड़ा जाएगा, यह कॉलम भरना सभी धर्मों के अनुयाइयों के लिए अनिवार्य होगा, इसमें एन्यूमेरेटर या गिनती करने वाले मुस्लिम धर्म के मतावलंबियों से भी उनकी जाति पूछेंगे।**

कैसे होगी जनगणना

अगले दो से तीन महीनों में जनगणना का काम शुरू हो जाएगा। राज्यों में अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की प्रक्रिया जल्दी ही प्रारंभ हो जाएगी। नियम के अनुसार जनगणना का काम पंद्रह दिन में पूरा किया जाता है। इस बार डिजिटल तरीके से जनगणना होगी, लिहाजा इसके लिए ऐप आधारित व्यवस्था होगी। एन्यूमैरेटर को स्मार्टफोन दिए जाएंगे जिनके माध्यम से वे जवाबों की रिकॉर्डिंग करेंगे। ऐप को आधार कार्ड से जोड़ा जाएगा और उनका वैरीफिकेशन भी किया जाएगा, ताकि किसी भी तरह की गड़बड़ी को रोका जा सके। इस बार जनगणना करते समय बायोमेट्रिक रिकॉर्ड भी रखा जाएगा और अत्याधुनिक तकनीक जिनमें एआई भी शामिल है, का इस्तेमाल होगा। जनगणना के आंकड़ों के विश्लेषण में एक से दो साल का समय लगता है। जिसके बाद भारत की जनसंख्या की विस्तृत रिपोर्ट सामने आएगी, जिनमें आजादी के बाद पहली बार जातिवार आंकड़े सार्वजनिक किए जाएंगे। जातियों की गिनती की व्यवस्था के लिए विभिन्न पैमाने तय किए जाने हैं। केंद्र और राज्यों की अधिसूचना में दी गई जातियों का रिकॉर्ड लिया जाएगा। अंतरजातीय विवाहों और उनकी संतानों तथा ऐसे लोग जो जातियां नहीं बताना चाहते हैं, उनके रिकॉर्ड का भी इंतजाम किया जाएगा। सरकार चाहती है कि यह काम पूरी पारदर्शिता से हो। जनगणना महापंजीयक का बजट बढ़ाया जाएगा। यह अभी 574.80 करोड़ रुपये है, लेकिन पूरक बजट के जरिए आवंटन बढ़ेगा। बिहार, तेलंगाना और कर्नाटक में जातियों की संख्या गिनने के लिए सर्वेक्षण कराए गए थे। संविधान के अनुसार जनगणना का अधिकार केवल केंद्र सरकार को है, इसलिए राज्यों ने केवल सर्वे कराया है। इन राज्यों में सर्वे के आधार पर ओबीसी की संख्या 1931 की तुलना में काफी अधिक बताई गई है। अगर जाति जनगणना में भी यह संख्या अधिक निकलती है तो जाहिर है आरक्षण का प्रतिशत बढ़ाने की मांग उठेगी। सरकार का कहना है कि ओबीसी की संख्या बढ़ने पर सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण की 27 प्रतिशत सीमा बढ़ाने पर विचार हो सकता है। इसके लिए वही फॉर्मूला इस्तेमाल होगा, जो आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को 10 प्रतिशत आरक्षण देते समय लागू किया गया, यानी सीटों की संख्या बढ़ाना। हालांकि 50 प्रतिशत की सीलिंग को पार करने के बारे में अभी कोई विचार नहीं है, क्योंकि इस बारे में सुप्रीम कोर्ट के कई फैसले पहले ही आ चुके हैं। जातीय जनगणना के बाद रोहिणी आयोग की रिपोर्ट पर विचार किया जा सकेगा। सरकार जाति जनगणना को लेकर विपक्ष के सुझावों का स्वागत करेगी। वह उनसे विचार-विमर्श करने को भी तैयार है, लेकिन जातीय जनगणना पर राहुल गांधी का तेलंगाना फॉर्मूला खारिज कर दिया गया है। यह फॉर्मूला ओबीसी और एससी एसटी वर्ग की सुरक्षा के लिए खतरनाक माना गया है, जिसमें जाति पूछने के साथ काम की जगह भी पूछने का फॉर्मूला है।

यकीन मानिए मोदी सरकार जनगणना अब मुस्लिम फकीर, नाली, धोबी, अंसारी, लोहार, बढई, पसमांदा, पठान, शेखों की भी कराएगी, इसलिए हो सकता है कि जब जातीय जनगणना का फॉर्म रिलीज होगा तो पूरा विपक्ष सुप्रीम कोर्ट भागेगा, क्योंकि, इसमें सिर्फ हिंदुओं का नहीं बल्कि मुस्लिमों की जातीय जनगणना भी होगी।

क्या है जातीय जनगणना?

राष्ट्रीय जनगणना के दौरान लोगों की जातीय पहचान के आधार पर व्यवस्थित तरीके से आंकड़े जुटाए जाते हैं, यही जातीय जनगणना है। भारत में ऐतिहासिक रूप से जातियां सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करती रही हैं। ऐसे में जातियों के आंकड़ों से पता चल सकता है कि कोई खास जाति किन क्षेत्रों में है, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति क्या है और विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व कितना है? इस जानकारी का इस्तेमाल सामाजिक न्याय और उनके कल्याण के लिए नीतियां बनाने में किया जा सकता है। भारत में पहली बार 1881 में जनगणना हुई थी। उस समय भारत की आबादी 25.38 करोड़ थी। तब से हर 10 साल में जनगणना हो रही है। 1881 से 1931 तक जातीय जनगणना हुई। 1941 में जातीय आंकड़े जुटाए गए, लेकिन इनको सार्वजनिक नहीं किया गया। आजादी के बाद 1951 में पहली जनगणना हुई थी। उस समय सरकार ने तय किया था कि सिर्फ अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के आंकड़े ही जुटाए जाएंगे। सरकार का मानना था कि जातियों की गणना से समाज विभाजित होगा और राष्ट्रीय एकता कमजोर होगी।

सोशल मीडिया यूजर की मांग

मोदी सरकार ने जब से जातीय जनगणना कराने का ऐलान किया है तभी से सोशल मीडिया पर मांग उठ रही है कि भारत में जातीय जनगणना से पहले भ्रष्ट नेताओं की, रिश्वत खोर अधिकारियों, कर्मचारी, घोटालेबाजों, बेईमान न्यायिक अधिकारियों, भ्रष्ट पुलिस अफसरों व कर्मचारियों, भ्रष्ट तहसीलदारों व पटवारियों, की भी जनगणना होनी चाहिए। जेहादियों, धर्मांतरण कराने वालो, डीप स्टेट के सीलिपर मॉड्यूल, चीन के एजेंटों, जॉर्ज सोरोस के सीलिपर मॉड्यूल, बांग्लादेशी रोहिग्या, पाकिस्तानी घुसपैठियों, मिलावटखोरो, मुनाफाखोर, जमाखोरी, नशा तस्करों, मानव तस्करों की जनगणना कराने की मांग उठ रही है। जनगणना भारत के गद्दार की भी होनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील अश्वनी उपाध्याय की वीडियो सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर वायरल हो रही है जिसमें वो भ्रष्ट, बेईमान, घोटालेबाजों की जनगणना की मांग उठाने के लिए जनता को प्रेरित कर रहे हैं। अश्वनी उपाध्याय वीडियो में बता रहे हैं कि इस तरह की मांग राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादय, लालू प्रसाद यादव नहीं उठाएंगे। क्योंकि वो खुद इस श्रेणी में आते हैं। सोशल मीडिया पर राहुल गांधी से सवाल किए जा रहे कि वो अपनी जाति क्या बताएंगे, उनके पिता पारसी मुसलमान थे, मां ईसाई है और वो खुद अपना गोत्र दत्तात्रय बताते हैं, आखिर वो कंफ्यूज होंगे क्या? सोशल मीडिया पर नेहरू और गांधी जाति की भी गणना की मांग की जा रही है ताकि जिसकी जितनी भागीदारी उसकी उतनी हिस्सेदारी तय की जा सके। यकीन मानिए मोदी सरकार जनगणना अब मुस्लिम फकीर, नाली, धोबी, अंसारी, लोहार, बढई, पसमांदा, पठान, शेखों की भी कराएगी। इसलिए हो सकता है कि जब जातीय जनगणना का फॉर्म रिलीज होगा तो पूरा विपक्ष सुप्रीम कोर्ट भागेगा, क्योंकि, इसमें सिर्फ हिंदुओं का नहीं बल्कि मुस्लिमों की जातीय जनगणना भी होगी।

श्रद्धा का नाम सालंगपुर धाम

जिस प्रकार राजस्थान में मेहंदीपुर बालाजी व सालासर बालाजी की वृहद मान्यता है वैसे ही गुजरात राज्य में हनुमान मंदिरों में कष्टभंजन देव की मान्यता है, स्वामी नारायण संप्रदाय के मंदिर अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध होते हैं, चाहे दिल्ली के अक्षरधाम की बात हो या अबूधाबी एवं गुजरात के मंदिर हों।

डॉ. सतीश चंद्र अग्रवाल
पूर्व आयकर आयुक्त

गुजरात प्रांत में सालंगपुर में कष्टभंजन देव नाम से हनुमानजी का प्रसिद्ध सिद्ध मंदिर है। जहां प्रतिदिन दूर-दूर से भक्तजन हजारों की संख्या में आते हैं। लगभग 175 वर्ष पूर्व स्वामी नारायण संप्रदाय के स्वामी गोपालानंद जी ने गुरु आज्ञा से इस मंदिर का निर्माण कराया था। पहले यह स्थान भावनगर जिले में आता था। किंतु बोटाड नामक नया जिला बनने के पश्चात यह मंदिर अब बोटाड जिले में स्थित है। जिस प्रकार राजस्थान में मेहंदीपुर बालाजी व सालासर बालाजी की वृहद मान्यता है वैसे ही गुजरात राज्य में हनुमान मंदिरों में कष्टभंजन देव की मान्यता है। स्वामी नारायण संप्रदाय के मंदिर अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध होते हैं। चाहे दिल्ली के अक्षरधाम की बात हो अथवा अबूधाबी एवं गुजरात के मंदिर हों। कष्ट भंजन देव मंदिर भी कई एकड़ भूमि में है। स्वामी नारायण संप्रदाय के संत द्वारा स्थापित यह इकलौता मंदिर है जो प्रधान रूप से हनुमान जी महाराज को समर्पित है। अन्य मंदिरों में हनुमान जी होते तो हैं किंतु मुख्यदेव स्वामी नारायण व श्रीकृष्ण होते हैं। कुछ वर्ष पूर्व मैंने इस मंदिर का नाम सुना था, किंतु यहां दर्शन के लिए जाने का सौभाग्य अप्रैल 2025 में गांधीनगर में प्रवास के दौरान प्राप्त हुआ। जानकारी मिली कि मंगलवार व शनिवार के दिन दर्शनार्थियो की भीड़ बहुत होती है। अतः हम सपरिवार बुधवार को गए। यहां आने वाले भक्तों की संख्या का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 200 करोड़ रुपये की लागत से 1200 कमरों का यात्री निवास मंदिर परिसर में ही बनाया गया है, जिसका लोकार्पण नवंबर 2024 में देश के गृहमंत्री अमित शाह ने किया था। यहां भोजनालय भी मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित होता है। जिसमें भक्तों को निशुल्क नाश्ता व भोजन परोसा जाता है। एक गौशाला भी यहां है। मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित हनुमान जी के अतिरिक्त इसी प्रागंण में 54 फिट की वरदमुद्रा में बजरंगबली की पंचधातु में निर्मित भव्य प्रतिमा भी है।

- **भक्तों की संख्या का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 200 करोड़ रुपये की लागत से 1200 कमरों का यात्री निवास मंदिर परिसर में ही बनाया गया है, जिसका लोकार्पण नवंबर 2024 में देश के गृहमंत्री अमित शाह ने किया था, यहां भोजनालय भी मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित होता है, जिसमें भक्तों को निशुल्क नाश्ता व भोजन परोसा जाता है।**
- **कष्टभंजन देव का स्वरूप अनूठा और अद्भुत है, इस मंदिर में वे रौबदार मुद्रा में स्वर्ण सिंहासन पर राजाधिराज की तरह विराजमान हैं, साथ ही बानर सेना भी चित्रित है, यह सिंहासन 45 किलोग्राम सोने व 95 किलोग्राम चांदी से निर्मित है, सोने से बनी गदा धारण किए हैं, मुकुट में कीमती हीरे जड़े हैं।**

कष्टभंजन देव का अनूठा स्वरूप

अनन्त बलशाली, परम पराक्रमी, विद्या बुद्धि निधान रामदूत हनुमान के अनेकानेक मंदिर देश के कोने-कोने में हैं और उनके भिन्न-भिन्न स्वरूप भी हैं। कहीं वे लक्ष्मण जी की प्राण रक्षा के लिए द्रोणागिरी पर्वत लाते हुए हैं तो कहीं सीना चीर कर सियाराम के दर्शन कराते हैं, कहीं ध्यान मुद्रा में तो कहीं भजनानन्दी रूप में, किंतु कष्टभंजन देव का स्वरूप अनूठा और अद्भुत है। यहां स्थापित मंदिर में वे रौबदार मुद्रा में स्वर्ण सिंहासन पर राजाधिराज की तरह विराजमान हैं, साथ ही बानर सेना भी चित्रित है। यह सिंहासन 45 किलोग्राम सोने व 95 किलोग्राम चांदी से निर्मित बताया जाता है। सोने से ही बनी गदा धारण किए हैं तथा इनके मुकुट में बेसकीमती हीरे जवाहरात जड़े हैं। यहां एक और विशेषता यह है कि शनि देव हनुमान जी के चरणों में पड़े हैं और वह स्त्री रूप में हैं। यह तो सभी जानते हैं कि शनि देव को हनुमान जी ने लंकापति रावण की कैद से मुक्त कराया था अतः शनि देव, हनुमान भक्तों पर दया और कृपा का भाव रखते हैं। इसलिए लोग शनि महाराज को प्रसन्न करने के लिए हनुमान जी की आराधना करते हैं। जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि शनि देव से देवी देवता भी बच नहीं पाए। शनि की वक्र दृष्टि पड़ने पर गौरी पुत्र गणेश का भी स्वयं पिता शिवजी ने सिर काट दिया था। हाथी का सिर लगाया गया तो वे गजानन कहलाए। पांडवों ने वनबास का दुख भोगा। बारह वर्ष तक वन-वन भटकते रहे। परम दानी राजा हरिश्चंद्र को राजपाठ छोड़कर तथा स्त्री-पुत्र को बेच कर चांडाल की नौकरी करनी पड़ी। ऐसे अनेक प्रकरण पुराणों में वर्णित हैं, जिसमें शनि की दशा में राजा से रंक अथवा रंक से राजा बन गया। ज्योतिष में शनि को क्रूर ग्रह की श्रेणी में रखा गया है। ऐसे शनि महाराज यदि डरते हैं तो केवल बजरंवली हनुमान जी से। यहां प्रचलित कथा के अनुसार एक बार भक्तों ने शनि के प्रकोप से त्रस्त होकर हनुमान जी से गुहार लगाई। हनुमान जी ने शनि को दंडित करने का निश्चय किया। शनि देव को जब ये ज्ञात हुआ तो वे चिंतित होकर उपाय सोचने लगे। शनि देव ने सोचा कि हनुमान जी बाल ब्रह्मचारी है और स्त्री पर हाथ नहीं उठाएंगे। अतः उन्होंने स्त्री का रूप धारण कर क्षमा याचना की। यहां के कष्टभंजन देव के विग्रह में हनुमान जी के चरणों में शनिदेव पड़े हैं तथा हनुमान जी कुछ रौद्र रूप में दिखाई देते हैं। यही कारण है कि शनि की साढ़े साती, ढैया अथवा महादशा आने पर भक्तजन हनुमान जी की आराधना करते हैं और शनिवार को नारियल चढ़ाते हैं। प्रेत बाधा व अन्य नकारात्मक शक्तियों से ग्रस्त लोगों को परिवारजन यहां लाते हैं, जैसे कि राजस्थान के मेहंदीपुर बालीजी मंदिर में ले जाते हैं। हनुमान चालीसा में पंक्ति है...। 'भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै।' भक्तजन मंदिर प्रांगण में हनुमान चालीसा, शनि चालीसा, सुंदरकांड तथा राम नाम का जप करते दिखाई देते हैं। साथ ही 'ऊं नमो हनुमते भयभंजनाय सुखं कुरु फट् स्वाहा...' मंत्र बहु प्रचलित है।

जागृत हैं बजरंगबली हनुमान

इस मंदिर की स्थापना के बारे में यहां संत व आचार्य बताते हैं कि करीब 200 वर्ष पहले भगवान स्वामी नारायण ने इसी स्थान पर प्रवचन किए थे। एक दिन जब वे हनुमान जी का ध्यान कर रहे थे तब हनुमान जी ने प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिए। इसी कारण उन्होंने अपने प्रिय शिष्य गोपालानन्द स्वामी को हनुमान मंदिर बनाने का आदेश दिया। जब मंदिर में हनुमान विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा की जा रही थी तब स्वामी गोपालानन्द ने प्रतिमा का एक छड़ी से स्पर्श किया। स्पर्श मात्र से प्रतिमा में जोर का कंपन हुआ, जो इस बात का संकेत था कि हनुमान जी प्रतिमा में अवतरित हो गए है। भक्तों की मान्यता है कि यहां बजरंगबली हनुमान जागृत हैं और भक्तों के कष्ट, भय, दुख हरकर सुख प्रदान करते हैं। तभी कहावत है-श्रद्धा का दूसरा नाम सालंगपुर धाम स्वामी नारायण संप्रदाय की बड़ताल गादी के प्रमुख आचार्य श्री ने स्तुति करते हुए कहा है कि-

हनुमंत महाबलवंत हरो दुख मारुं
जय सालंगपुरना शाम सदा संभारुं
गुणनिधि गोपालानन्द जी सद्गुरु स्वामी
पधराव्या तमने प्रीत थी महानिष्कामी
तव चारु चरित्र ध्यान में धारूं

कष्टभंजन कहें, दुखभंजन कहें या संकटमोटन कहें, भाव एक ही है। सरस भक्तिगीतों के रचयिता व गायक संत स्वरूप हरिओम शरण जी का भी भजन है-

हे दुःखभंजन मारुतिनन्दन सुन लो मेरी पुकार
पवनसुत विनती बारम्बार।
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता
दुःखियों के तुम भाग्यविधाता
मेरा करो उद्धार, पवनसुत विनती बारम्बार....।

इस मंदिर की एक और विशेषता यह है कि शनि देव हनुमान जी के चरणों में पड़े हैं और वह स्त्री रूप में हैं, यह तो सभी जानते हैं कि शनि देव को हनुमान जी ने लंकापति रावण की कैद से मुक्त कराया था अतः शनि देव, हनुमान भक्तों पर दया और कृपा का भाव ही रखते हैं।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने 'हनुमानाष्टक' में हनुमान जी ने किस प्रकार सुग्रीव, सीता जी, लक्ष्मण जी व प्रभु श्रीराम जी सहायता की, उसका स्मरण करते हुए अन्तिम छंद में प्रार्थना की है-

काज किए बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि विचारो,
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो,
वेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो,
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

हम भी यही प्रार्थना करते हैं कि कष्टभंजन हनुमान जी हम सभी के कष्ट हरें और प्रभु श्रीराम तक हमारी राम-राम पहुंचा दें।

चाय और कीवी उत्पादन की सलाह

उत्तराखंड में अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल, चंपावत, पिथौरागढ़, रुद्रप्रयाग, टिहरी, उत्तरकाशी में सरकारी स्तर पर चाय की खेती होती है जिसमें चाय का करीब 84 हजार किलोग्राम उत्पादन होता है, यहां पैदा होने वाली ऑर्गेनिक चाय को कनाडा, जापान और हॉलैंड द्वारा परीक्षण के बाद सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है।

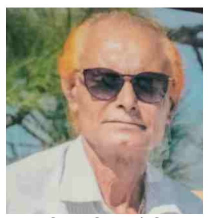

रतन सिंह किरमोलिया
बागेश्वर

हकीकत में यदि उत्तराखंड के कृषि उत्पादकों और सरकार का सम्मिलित प्रयास परवान चढ़ जाए तो पहाड़ी राज्य में कीवी और चाय उत्पादन से बड़ा रोजगार सृजन और आर्थिक साम्राज्य तैयार किया जा सकता है। बशर्ते सरकार द्वारा इसके उत्पादन के लिए बेहतर तकनीकी और बाजार की व्यवस्था मुहैया करा दी जाए। यानी चाय और कीवी के प्रसंस्करण, भंडारण तथा विपरण का इंतजाम हो जाए। इसमें किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि हमारे पहाड़ी क्षेत्र की मिट्टी चाय उत्पादन के लिए बहुत उपयोगी है। यहां की चाय की देश में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में बड़ी डिमांड है। लिहाजा चाय उत्पादन से राज्य की तस्वीर बदल सकती है। वैसे भी उत्तराखंड में चाय उत्पादन का लंबा इतिहास है। 1870 के दशक में पिथौरागढ़ जिले के बेरीनाग में उगाई जाने वाली चाय अंग्रेजों द्वारा पसंद की गई थी। इस हिसाब से भी चाय उत्पादन राज्य का एक महत्वपूर्ण और बड़ा उद्योग बन सकता है। उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड के मुताबिक उत्तराखंड गठन के बाद पहली चाय फैक्ट्री 2001 में बागेश्वर जिले के कौसानी क्षेत्र में स्थापित की गई थी। जिसमें स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है और चाय उत्पादन राज्य की अर्थव्यवस्था में भी योगदान कर रहा है, लेकिन इसे विस्तार देने की आवश्यकता है। उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड का कहना है कि पहाड़ी राज्य का स्थलाकृतिक भूभाग काफी हद तक पहाड़ी क्षेत्र है, जहां 2000 मीटर की ऊंचाई पर चाय की खेती की जबरदस्त संभावनाएं हैं। इससे छोटे और सीमांत किसानों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को मजबूत किया जा सकता है। चाय की खेती से बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार सृजन हो सकते हैं। 1993-94 में तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने उत्तराखंड चाय विकास परियोजना नाम से चाय की खेती शुरू कराकर रोजगार सृजन योजना को मंजूरी दी थी। मौजूदा उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड ने राज्य में भूमि अधिग्रहण के साथ चाय उत्पादन बढ़ाने की संभावनाएं तलाशी थी। ताकि उत्तराखंड के गरीब किसानों को बेहतर रोजगार के अवसर मिल सकें, साथ ही स्थानीय और स्वदेशी रूप से उत्पादित उत्तराखंड की चाय को असम, दार्जिलिंग, केरल की चाय जैसी किस्मों के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा की जा सके।

विदेशों में चाय की डिमांड

59926 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र फल में फैला उत्तराखंड, देश का एक ऐसा राज्य है जहां की 90 प्रतिशत आबादी खेती पर निर्भर है, खेती ही इनके जीवन यापन का एक मात्र साधन रहा है। राज्य के कुल क्षेत्रफल का 15 प्रतिशत भू-भाग कृषि योग्य है। यहां की उपजाऊ भूमि और जलवायु प्राकृतिक रूप से परिपूर्ण है जिसमें कई प्रकार के फल-फूल, पेड़-पौधे और जड़ी-बूटियां, हरे भरे धान और कई नगदी फसलें उगाई जाती है। इन्हीं में उत्तराखंड में उगायी जाने वाली चाय की फसल भी है। चाय की खेती नगदी फसल मानी जाती है और सीढ़ीनुमा खेतों में की जाती है। इसके लिए 200 से 150 सेंटीमीटर बारिश की जरुरत होती है। इसके उत्पादन के लिए आद्र एवं उष्ण जलवायु की आवश्यकता है। उत्तराखंड की भूमि चाय उत्पादन के लिए सबसे अच्छी भूमि है। इसलिए यहां चाय की खेती की अपार संभावनाएं हैं। मगर वर्तमान में यहां चाय की खेती महज 1141 हेक्टेयर में ही की जाती है जो बहुत कम है। अगर राज्य में बाकी बची भूमि पर चाय की खेती करने पर जोर दिया जाए तो करीब 7 लाख किलोग्राम से अधिक चाय का उत्पादन किया जा सकता है। जिससे राज्य को अच्छी आय के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिल सकता है, मगर अफसोस इन गुजरे कई सालों में किसी भी सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, ना ही कोई पहल की। उत्तराखंड में चाय की खेती की बात की जाए तो यहां की भूमि अच्छी उर्वरक और गुणवत्ता वाली चाय का उत्पादन करती है जो स्वाद में अत्यधिक स्वादिष्ट होती है और अन्य राज्यों की चाय को मात देती है। वर्तमान में उत्तराखंड में 8 जिलों अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल, चंपावत, पिथौरागढ़, रुद्रप्रयाग, टिहरी, उत्तरकाशी में सरकारी स्तर पर चाय की खेती की जाती है जिसमें चाय का करीब 84 हजार किलोग्राम उत्पादन होता है। यहां पैदा होने वाली ऑर्गेनिक चाय को कनाडा, जापान और हॉलैंड द्वारा परीक्षण के बाद सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है। इसलिए इन देशों में इसकी बहुत डिमांड है।

अभी यहां महज 1141 हेक्टेयर में ही चाय की खेती की जा रही है जो बहुत कम है, अगर राज्य में बाकी बची भूमि पर चाय की खेती की जाए तो करीब 7 लाख किलोग्राम से अधिक चाय का उत्पादन किया जा सकता है, जिससे राज्य को अच्छी आय के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिल सकता है।

चाय उत्पादन पर ध्यान दे सरकार

चाय उत्पादन का जिम्मा यहां उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड के पास है। परंतु देखने में आ रहा है कि चाय उत्पादन में कोई अपेक्षित वृद्धि अथवा सुधार नहीं हो रहा है। कारण स्पष्ट है कि उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड कारगर तरीके से काम नहीं कर पा रहा है। न ही चाय श्रमिकों को समुचित सुविधाएं दी जा रही हैं और न ही उनसे सही तरीके से काम लिया जा रहा है। उनका न्यूनतम मानदेय एवं अन्य सुविधाएं बढ़ाने की आवश्यकता है। सही तकनीकी से काम लेने की जरूरत है। वैसे भी यहां की चाय पहले ही काफी ख्याति अर्जित कर चुकी है। दो दशक से अधिक समय से यहां कई स्थानों पर चाय की खेती की जा रही है। लेकिन सरकारों और उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड की उदासीनता के कारण उत्तराखंड का चाय उद्योग दम तोड़ता नजर आ रहा है। यदि चाय उद्योग पर ध्यान केंद्रित किया जाए तो अकेले चाय की खेती ही यहां अच्छा रोजगार दे सकती है। इससे पलायन की समस्या का भी समाधान हो सकता है।

क्यों है कीवी की डिमांड ?

इसी प्रकार कीवी उत्पादन के लिए भी उत्तराखंड के अधिकांश स्थानों की मिट्टी बहुत मुफीद है। कीवी का फल स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। कीवी में विटामिन सी की मात्रा बहुत ज्यादा होती है, यहां तक कि संतरे से भी ज़्यादा। इसमें विटामिन के, विटामिन ई और फोलेट होता है। यह पोटेशियम, मैग्नीशियम और फास्फोरस का एक अच्छा स्रोत है, जो इलेक्ट्रोलाइट संतुलन, मांसपेशियों को ठीक रखने और हड्डियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कीवी फ्लेवोनोइड्स और कैरोटीनॉयड जैसे एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है, जो शरीर में ऑक्सीडेटिव तनाव और सूजन से लड़ने में मदद करता है। एक कीवी में पर्याप्त मात्रा में फाइबर होता है, जो पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है। कीवी में मौजूद उच्च विटामिन सी संक्रमण से बचाने में मदद करता है। कीवी में मौजूद पोटेशियम रक्तचाप को नियंत्रित करने और हृदय संबंधी बीमारियों से बचाव करता है। जिससे हृदय रोग का खतरा कम हो जाता है। कीवी ल्यूटिन और जेक्सैंथिन से समृद्ध होती है, जो एंटीऑक्सिडेंट हैं इसलिए दृष्टि में सुधार करके आंखों को स्वास्थ रखती है। कीवी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाती है तथा शरीर को संक्रमण से लड़ने में सहायता करती है। इसलिए इसकी बाजार में बहुत मांग रहती है। कीवी का कई प्रकार से प्रसंस्करण कर इसे कई साल तक संरक्षित भी किया जा सकता है। इसलिए कीवी की खेती उत्तराखंड के लिए लाभकारी साबित हो सकती है।

उत्तराखंड चाय विकास बोर्ड के मुताबिक राज्य गठन के बाद पहली चाय फैक्ट्री 2001 में बागेश्वर जिले के कौसानी में स्थापित की गई थी, जिसमें स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है, चाय उत्पादन राज्य की अर्थव्यवस्था में भी योगदान कर रहा है, लेकिन इसे विस्तार देने की आवश्यकता है।

पारंपरिक खेती से निराशा

इस समय उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों की पारंपरिक व्यवसायिक खेती, पशुपालन, फल उत्पादन और बागवानी लुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी है। क्योंकि खेतों में खड़ी फसल को वन्यजीव नुकसान पहुंचाते हैं तो मौसम की मार भी फसलों को झेलनी पड़ती है। इसलिए पर्वतीय क्षेत्र में अधिकांश किसान खेती से मुंह मोड़ रहे हैं। खेती की जमीन नित्यप्रति बंजर होती जा रही है। खेती से जुड़ा दूसरा व्यवसाय पशुपालन भी दम तोड़ रहा है। खेती और पशुपालन का बड़ा गहरा संबंध है। इसलिए एक कड़ी के टूटने से दूसरी कड़ी की शक्ति का क्षीण होना स्वाभाविक है। इन्हीं से जुड़ी होती है बागवानी। बागवानी को भी वन्यजीवों द्वारा पहुंचाए जा रहे नुकसान की मार झेलनी पड़ रही है। इन तमाम तरह की परेशानियों के कारण उत्तराखंड के काश्तकारों का ध्यान और रुझान खेती किसानी की तरफ से धीरे-धीरे हट रहा है, इसलिए भी खेत बंजर हो गए हैं। जिन गोठ में पशु भरे रहते थे वो खाली हो गई हैं। बागवानी खेतों में नहीं सिर्फ घर के आगंन तक सिमट गई है। नई पीढ़ी भी इस नुकसान को देखकर खेती करने के बजाए नौकरी या छोटी-मोटी दुकान करने में ज्यादा दिलचस्पी ले रही है। इस सब के बावजूद अभी का अनुभव बताता है कि चाय की खेती एवं कीवी की खेती को वन्यजीवों द्वारा नुकसान नहीं पहुंचाया जा रहा है। वन्यजीवों से खेती और बागवानी की सुरक्षा करने में सभी पर्वतीय किसान लाचार हैं। हमारे पुरखों के पास इनसे निजात पाने के पारंपरिक और कारगर उपाय रहे थे। वे उनका भरपूर उपयोग अपनी खेती और बागवानी को बचाने के लिए किया करते थे।

कीवी उत्पादन को बढ़ावा मिले

इन सभी हालात के मद्देनजर यहां बंजर होते खेतों और बंजर भूमि में चाय और कीवी की खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है। चाय और कीवी की खेती को फीलवक्त वन्यजीव से कोई खतरा भी नहीं है। हालांकि इसके लिए जैविक खाद, भीषण गर्मा में सिंचाई की जरूरत पड़ती है। सरकार की बेरुखी के बावजूद पिछले एक दशक से देखा जा रहा है कि उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों में जगह-जगह लोग अपने निजी प्रयासों से कीवी की खेती करने लगे हैं। क्योंकि यहां की मिट्टी कीवी उत्पादन के लिए बहुत मुफीद है। बागेश्वर जिले के शामा क्षेत्र में बहुत अच्छी कीवी की खेती की जा रही है। अन्य क्षेत्रों में भी काश्तकार छिटपुट कीवी की खेती कर रहे हैं। यदि कीवी की खेती को बढ़ावा दिया जाए तो इसकी खेती परवान चढ़ सकती है। इसके लिए उद्यान विभाग को तकनीकी मार्गदर्शन करना चाहिए। सरकार को विपणन की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। वैसे भी कीवी की खेती उत्तराखंड में एक उभरता हुआ क्षेत्र है और इसकी खेती से स्थानीय किसानों को आर्थिक लाभ हो सकता है। किसानों के साथ सरकार का खजाना भी भर सकता है। ●

उत्तराखंड

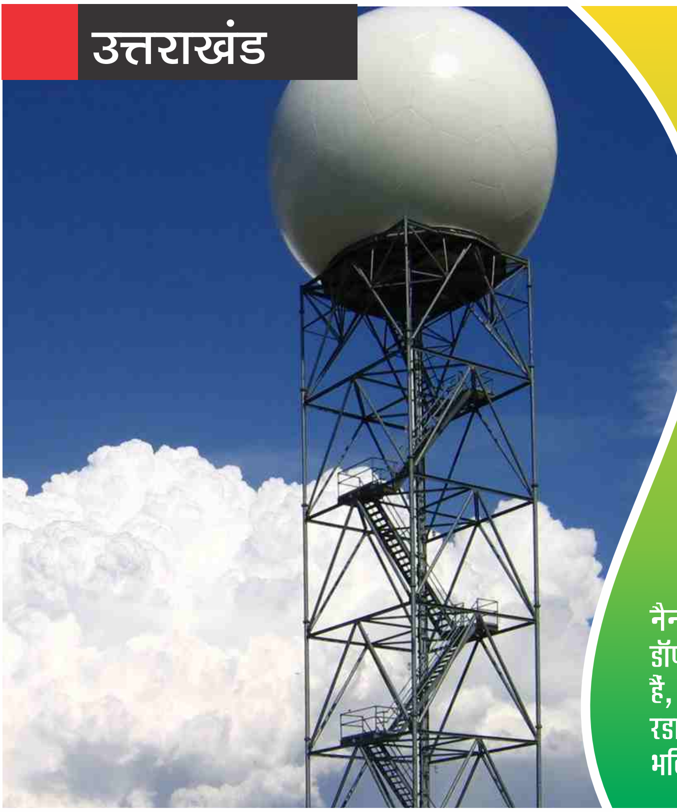

डॉप्लर रडार से वेदर की सटीक सूचना

नैनीताल जिले के मुक्तेश्वर, टिहरी के सरकुंडा और पौड़ी के लैंसडाउन में तीन बड़े डॉप्लर रडार स्थापित हैं, ये डॉप्लर रडार मौसम की गतिविधियों को रिकॉर्ड करते हैं, पहाड़ी राज्य के मौसम में बदलाव का खतरा बना रहता है, ऐसे में यह डॉप्लर रडार सूक्ष्म तरंगों को भांपकर मौसम में आने वाले बदलाव की सटीक भविष्यवाणी कर पाने में सक्षम होता है।

2013 में केदार घाटी में आई प्रलयकारी आपदा के बाद से ही मौसम की सटीक भविष्यवाणी के लिए प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर डॉप्लर रडार लगाए जाने की बात की जा रही थी। मगर आपको यह जानकर हैरानी होगी कि आपदा के 12 साल बीत जाने के बाद राज्य के नैनीताल जिले के मुक्तेश्वर, टिहरी जिले के सरकुंडा और पौड़ी के लैंसडाउन में सिर्फ तीन बड़े डॉप्लर रडार ही स्थापित हो सके हैं। डॉप्लर वेदर रडार मौसम की गतिविधियों को रिकॉर्ड करता है। उत्तराखंड चूंकि पहाड़ी राज्य है, यहां लगातार प्राकृतिक आपदाओं और मौसम में बदलाव का खतरा बना रहता है। ऐसे में यह डॉप्लर रडार सूक्ष्म तरंगों को भांपकर मौसम में आने वाले बदलाव की सटीक भविष्यवाणी कर पाने में सक्षम होता है। डॉप्लर रडार के जरिए 100 किलोमीटर वायु रेंज की मौसमी गतिविधियों को जाना जा सकता है। ये रडार करीब 4 घंटे पहले ही मौसम की सटीक जानकारी देने में सक्षम है। इससे हर साल प्राकृतिक आपदाओं की वजह से राज्य में आपदा से होने वाली जन-धन की हानि को कम किया जा सकता है। सनातन धर्म में चारधाम यात्रा का काफी महत्व है। हर साल बाबा केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के दर्शन करने के लिए श्रद्धालु चारधाम यात्रा के शुरू होने का बेसब्री से इंतजार करते हैं। बाबा भोलेनाथ के भक्तों के लिए यह चारधाम तीर्थ यात्रा विशेष मानी जाती है। चारधाम यात्रा में उत्तराखंड राज्य के चार धाम शामिल हैं। चारधाम यात्रा मानसून सीजन में भी जारी रहती है। हर साल मानसून उत्तराखंड में भारी तबाही लेकर आता है। लिहाजा प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए हर बार बड़े स्तर पर तैयारियां की जाती हैं। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए होमवर्क भी किया जाता है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि राज्य के संवेदनशील इलाके आज भी त्वरित मौसम की भविष्यवाणी को लेकर पूरी तरह तैयार नहीं हो पाए हैं। उत्तराखंड मौसम विज्ञान केंद्र का नया प्रस्ताव कुछ ऐसे ही संकेत दे रहा है। हालांकि अभी राज्य सरकार इस प्रस्ताव को लेकर विचार कर रही है और सभी को प्रस्ताव पर अंतिम मोहर लगने का भी इंतजार है। उत्तराखंड मौसम विज्ञान केंद्र ने राज्य सरकार को छोटे रडार लगाने का प्रस्ताव दिया है। मौसम विभाग ने यह स्पष्ट किया है कि छोटे रडार लगने से राज्य के ऐसे इलाकों में भी मौसम की सटीक और त्वरित भविष्यवाणी की जा सकेगी, जहां अभी मौसम की जानकारी देने में काफी समय लगता है। इसके लिए मौसम विभाग ने राज्य के चार से पांच इलाकों में छोटे रडार लगाने का प्रस्ताव सरकार को भेजा है। इन चार क्षेत्रों को प्राकृतिक आपदा के लिहाज से संवेदनशील बताया गया है।

अफलज फौजी
नैनीताल

छोटे डॉप्लर रडार को लगाए जाने की बात कही जा रही है उनकी रेंज हवा में करीब 50 किलोमीटर की होगी, डॉप्लर रडार के जरिए न केवल बारिश की सटीक जानकारी मिलेगी, बल्कि बर्फबारी और एवलांच के साथ ही ओलावृष्टि और बादल फटने जैसी घटनाओं को भी काफी हद तक पहले ही प्रिडिक्ट किया जा सकेगा।

डॉप्लर रडार की पहुंच कमजोर

उत्तराखंड में वैसे तो तीन बड़े डॉप्लर रडार लगाए जा चुके हैं। इसमें पहला डॉप्लर रडार टिहरी जिले के सुरकंडा में लगा है। दूसरा पौड़ी जिले के लैंसडाउन और तीसरा नैनीताल जिले के मुक्तेश्वर में काम कर रहा है। इन डॉप्लर रडार में हर एक की क्षमता करीब 100 किलोमीटर वायु रेंज है। इस लिहाज से राज्य के अधिकतर क्षेत्रों को इनके जरिए कवर किया जा रहा है, लेकिन चिंता की बात यह है कि चारधाम यात्रा रूट और मुनस्यारी समेत कई दूसरे ऐसे इलाके हैं, जहां ऊंची पहाड़ियों के कारण डॉप्लर रडार की पहुंच कमजोर पड़ रही है। ऊंची चोटियों के पीछे के इलाके डॉप्लर रडार की पकड़ में नहीं आ पा रहे हैं। ऐसे में इन घाटियों में काफी देरी से मौसम की जानकारी वैज्ञानिकों को मिल पाती है। केदारनाथ या बदरीनाथ की घाटियों में कई बार ऊंची चोटियों के पीछे लोकल सिस्टम तैयार हो जाता है, लेकिन ऊंची पहाड़ियों के पीछे बारिश की स्थिति पैदा करने वाले ये बादल जब तक उन चोटियों के ऊपर तक नहीं पहुंच जाते, तब तक इसका डाटा मौसम विज्ञान केंद्र को नहीं मिल पाता। जिससे मौसम में आने वाली तब्दीली या बारिश की कंडीशन का समय से पता नहीं चल पाता है। उत्तराखंड मौसम विज्ञान केंद्र का कहना है कि बदरीनाथ, केदारनाथ और मुनस्यारी के साथ ही देहरादून में भी छोटे रडार लगाए जाने की जरूरत है। राज्य के उच्च हिमालय क्षेत्र और कई घाटियों में मौसम की भविष्यवाणी को लेकर वैज्ञानिकों को सेटेलाइट सिस्टम पर निर्भर रहना पड़ता है। हालांकि इससे भी मौसम की जानकारी ली जाती रही है, लेकिन तकनीकी के आगे बढ़ने के साथ ही ज्यादा सटीक और त्वरित जानकारी के लिए रडार ही उपयोगी माने जाते हैं।

पांच छोटे डॉप्लर राडार

वैज्ञानिक मानते हैं कि सेटेलाइट से वैसे तो मौसम की जानकारी मिल जाती है, लेकिन काफी ज्यादा डेवलपमेंट होने के बाद ही मौसम की सटीक जानकारी सेटेलाइट सिस्टम से ली जा सकती है, जबकि रडार मौसम में होने वाले हर छोटे बदलाव को भी बता देता है। इतना ही नहीं कुछ घंटे में हो रहे बदलाव का पूरा डाटा भी ये रडार दे देते हैं। उत्तराखंड जैसे राज्य के लिए मौसम को लेकर ज्यादा से ज्यादा उपकरण और तकनीक का इस्तेमाल ही प्राकृतिक आपदाओं के खतरों को कम कर सकता है। इसी बात को समझते हुए उत्तराखंड मौसम विज्ञान केंद्र राज्य सरकार के फैसले का इंतजार कर रहा है। प्रदेश में छोटे रडार लगने से मौसम की बेहतर जानकारी मिलने का भी दावा कर रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक विक्रम सिंह का कहना है कि यूं तो अधिकतर क्षेत्रों में मौजूदा रडार काम कर रहे हैं और सेटेलाइट से भी जानकारी ली जा रही है, लेकिन राज्य के लिए छोटे रडार काफी महत्वपूर्ण है, जिनके लगने से चारधाम यात्रा मार्ग समेत उच्च हिमालय क्षेत्र के मौसम को बेहतर रूप से समझा जा सकेगा और एक्शन प्लान तैयार किया जा सकेगा। चारधाम यात्रा से पहले सरकार ने प्रदेश में पांच छोटे डॉप्लर राडार लगाने की स्वीकृति दे तो दी है। जिससे ऐस क्षेत्रों को भी मौसम विभाग कवर कर पाएगा, जहां मौसम विभाग फिलहाल सटीक जानकारी देने में नाकाम साबित हो रहा था। इसमें देहरादून, हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर के साथ ही पर्वतीय जनपदों में हिमालय क्षेत्र भी शामिल हैं जो सीमांत क्षेत्र हैं। इसके अलावा कई जगह ऐसी हैं जहां ऊंची चोटियों पर बड़े डॉप्लर रडार की रेंज पूरी तरह से नहीं पहुंच पाती। इन छोटे डॉप्लर रडार के लगने के बाद इसका लाभ न केवल कई क्षेत्रों के आम लोगों को मिलेगा बल्कि बॉर्डर पर तैनात भारतीय सेना भी इसका लाभ ले सकेगी। उत्तराखंड में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर भारतीय सेना के साथ आईटीबीपी और एसएसबी के जवान तैनात रहते हैं। जिन्हें सटीक मौसम की भविष्यवाणी का लाभ मिल सकेगा। जिन छोटे डॉप्लर रडार को लगाए जाने की बात कही जा रही है उनकी रेंज हवा में करीब 50 किलोमीटर की होगी। डॉप्लर रडार के जरिए न केवल बारिश की सटीक जानकारी मिलेगी, बल्कि बर्फबारी और एवलांच के साथ ही ओलावृष्टि और बादल फटने जैसी घटनाओं को भी काफी हद तक पहले ही प्रिडिक्ट किया जा सकेगा। यानी यह डॉप्लर रडार प्रदेश में तमाम प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं के लिहाज से बेहद अहम साबित होंगे।

खराब मौसम में हादसे

केदारनाथ में सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर हादसा 25 जून 2013 को आपदा राहत बचाव के दौरान हुआ था, जिसमें पायलट और को-पायलट सहित 20 जवान शहीद हुए थे। 2010 से लेकर 2019 तक केदारनाथ में 6 हेलीकॉप्टर हादसे मौसम की खराबी के कारण हुए थे। अब ये कहा जा सकता है कि अगर सब कुछ ठीक रहा, डॉप्लर रडार और सीसीटीवी कैमरे लगेंगे तो ऐसे हादसों से बचा जा सकेगा और यात्रा सुगम होगी। वैसे जलवायु परिवर्तन के कारण पहाड़ों में भारी बारिश और इसकी बढ़ती तीव्रता को देखते जिलाधिकारी जिस तरह स्कूल बंद करते हैं, उसी तरह यात्रा बंद की जाए तो भी जन-धन हानि को कम किया जा सकता है। एक्सपर्ट मानते हैं कि भविष्य में मौसमी बदलाव को देखते हुए, यात्रा सीजन में बदलाव करना पड़ सकता है। उनका कहना है कि ऐसा नहीं है कि डॉप्लर रेडार सौ फीसद बादल फटने की घटनाओं को पहले ही बता देते हैं। मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक और वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक बिक्रम सिंह कहते हैं कि डॉप्लर रडार कुछ घंटों के अंतराल में स्कैन पिक्चर जारी करते है। कई बार ऐसा भी होता है कि डाटा में बीस सेंटीमीटर तक

- **भारी बारिश को देखते जिलाधिकारी जिस तरह स्कूल बंद करते हैं, उसी तरह यात्रा बंद की जाए तो भी जन-धन हानि को कम किया जा सकता है, एक्सपर्ट मानते हैं कि भविष्य में मौसमी बदलाव को देखते हुए यात्रा सीजन में भी बदलाव करना पड़ सकता है।**
- **उत्तराखंड मौसम विज्ञान केंद्र का कहना है कि बदरीनाथ, केदारनाथ और मुनस्यारी के साथ ही देहरादून में भी छोटे रडार लगाए जाने की जरूरत है।**

की बारिश का आकंलन होता है, लेकिन जमीन पर पहुंचने तक हवाओं की स्पीड उसे बिखरा देती है। जिससे जमीन पर पांच सेमी तक पानी गिर पाता है। इसलिए डाप्लर रेडार का निरंतर डाटा लेकर उसका आकंलन वैज्ञानिक करते हैं। लेकिन इसके आकंलन सबसे ज्यादा सटीक होते हैं और तेज पानी बरसने के आधे घंटे पहले भी ये सटीक डाटा दे सकता है। जिसको आपदा प्रबंधन विभाग को देकर जान-माल का बड़ा नुकसान बचाया जा सकता है।

कैसे काम करता है डॉप्लर रडार

डॉप्लर रडार मौसम की भविष्यवाणी कैसे करता है। डॉप्लर रडार एक छोटी मशीन है, जो अति सूक्ष्म तरंगों को कैच करने में सक्षम होता है। इन्हीं तरंगों के माध्यम से मौसम में हो रहे बदलाव को डॉप्लर वेदर रडार आसानी से समझ लेता है। इसके जरिए न केवल बादल फटने की घटनाओं का आकलन हो सकता है बल्कि तेज तूफान और बारिश को लेकर भी भविष्यवाणी की जा सकती है। हवा की रफ्तार का आकलन करने के साथ डॉप्लर वेदर रडार हर 3 घंटे में नए अपडेट मौसम विभाग तक पहुंचाता है। डॉप्लर वेदर रडार उत्तराखंड में बादल फटने जैसी घटनाओं के लिए बेहद अहम है। साइक्लोन के खतरे के लिए मौसम विभाग के पास इसकी भविष्यवाणी करने और इस पर निगरानी रखने के साथ इसे समझने के लिए काफी समय होता है, क्योंकि साइक्लोन धीरे-धीरे बनता है। करीब 1000 किलोमीटर तक अपना असर छोड़ता है, लेकिन थंडर स्ट्रोम और बादल फटने जैसी घटनाओं को लेकर अचानक स्थितियां बनती हैं। कुछ ही घंटों में ही अपना असर भी दिखा देती है। ऐसे में अचानक मौसम में होने वाले इस बदलाव को डॉप्लर रडार से आसानी से समझा जा सकता है। ●

रहस्यमयी गुफाओं की खोज

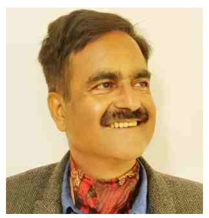

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड रहस्यों का खजाना है। यहां प्राचीन और पौराणिक महत्व की गुफाओं, मंदिरों, झरनों और खंडहर हो चुके प्राचीन किलों आदि की खोज होती रहती है। फिलहाल उत्तराखंड के सीमांत जिले पिथौरागढ़ की तहसील डीडीहाट का गोबराड़ी क्षेत्र सुर्खियों में है। वजह ये है कि गोबराड़ी गांव के पास एक रहस्यमयी ऐतिहासिक गुफा की खोज की गई है। यह गुफा कत्यूर राजवंश या गोरखा शासनकाल से जुड़ी मानी जा रही है। जिस गोबराड़ी क्षेत्र में यह गुफा मिली है वह सिल्क रूट का हिस्सा रहा है। ऐतिहासिक महत्व की इस गुफा की खोज काफल हिल के संस्थापक तरूण मेहरा की अगुवाई में गोबराड़ी गांव से लगी ऊंची चट्टानों पर ट्रेकिंग कर रही टीम ने की है। ट्रेकिंग के दौरान इस टीम को जंगल में एक गुफा दिखाई दी। तरुण मेहरा और उनकी टीम गुफा में उतरने के लिए रस्सी और आवश्यक सामान लेकर पहुंच गई। मेहरा की टीम रस्सी के सहारे सुरंग में उतरी। साथ में कैमरा ले गई थी टीम ने देखा कि गुफा को छेनी और सब्बल से काटकर बनाया गया था। दोनों गुफा में करीब 100 मीटर नीचे जाने के बाद उन्होंने देखा कि गुफाओं के रास्ते पत्थरों से बंद कर दिए गए थे। जब उन्होंने कुछ पत्थर हटाने की कोशिश की, तो नीचे से भाप जैसा कुछ निकलने लगा। ग्रामीणों का मानना है कि बंद गुफा में से एक महल और शिवालय की ओर जाती है, जबकि दूसरी गुफा नदी की दिशा में जाती है। खंडहरों की दीवारों से संकेत मिलता है कि यहां कभी किला रहा होगा, जिसे कत्यूरी और चंद राजाओं से जोड़ा जा रहा है। इस गुफा का अस्तित्व भारत-तिब्बत पैदल मार्ग से भी जुड़ा हो सकता है। क्योंकि गुफा का आकार इतना है कि इसमें एक समय में दर्जनों लोग छिप सकते हैं। जिस क्षेत्र में ये गुफा मिली है वह तिब्बत से ईरान तक के सिल्क रूट का हिस्सा भी है। संभवतः इस मार्ग से व्यापार करने वाले व्यापारियों ने लुटेरों से बचाने के लिए इस गुफा का निर्माण कराया गया होगा। इस गुफा के काल का पता गुफा की कार्बन डेटिंग से ही लगया जा सकता है।

गोबराड़ी के बुजुर्ग रतन राम ने खोज करने वाली टीम को इस स्थान का रास्ता दिखाया, वृद्धावस्था होने के कारण रतन राम ने गुफा के भीतर जाने से इनकार कर दिया, पर ये जरूर बताया कि यहां एक पीले रंग का दोमुंहा सांप उन्होंने देखा है, जो एक विशाल सुनहरे पत्थर के चारों ओर लिपटा रहता था।

गुफा के भीतर सिर्फ एक घर के अवशेष ही नहीं, बल्कि कई घरों के खंडहर देखने को मिले हैं। जो यह संकेत देते हैं कि यहां कभी एक बड़ी बस्ती रही होगी। पहाड़ों पर फैलीं दीवारें और संरचनाएं इस बात की गवाही देती हैं कि यह स्थान किसी समय एक किला रहा होगा।

एक साल में दो गुफाओं की खोज

तरुण मेहरा की टीम पिथौरागढ़ जिले में एक साल के भीतर दो रहस्यमयी गुफाएं खोज चुकी हैं, जिसमें गोबराड़ी की यह गुफा भी शामिल है। गुफा की खोज करने वाले तरुण मेहरा सामाजिक कार्यकर्ता और प्रकृति प्रेमी होने के साथ साहसिक एडवेंचर का कार्य करते हैं। इसके साथ ही वो पिथौरागढ़ में होम स्टे का संचालन भी करते हैं। फरवरी 2024 में तरुण मेहरा ने सबसे पहले बेरीनाग गुफा की खोज की थी, जबकि जनवरी 2025 में उन्होंने गोबाराड़ी गुफा की खोज की है। इन दोनों गुफाओं के बीच करीब 400 से 500 मीटर का फासला है। माना जा रहा है कि गोबराड़ी की रहस्यमयी गुफा वनराजि जनजाति से संबंधित रौता उडियार के आवासों का खंडहर है। जिसकी खोज होने के बाद 100 मीटर इस लंबी गुफा को देखने के लिए स्थानीय लोगों की भीड़ उमड़ने लगी है। काफल हिल के संस्थापक तरूण मेहरा का कहना है कि गुफा के भीतर जिस तरह के चित्र बने हैं वह कत्यूरी शासनकाल या गोरखा शासनकाल के प्रतीत हो रहे हैं। जिसकी जानकारी पुरातत्व विभाग को दी जा चुकी है। पुरातत्व विभाग की टीम भी इस गुफा का निरीक्षण कर चुकी है। मेहरा का कहना है कि यह स्थान न सिर्फ ऐतिहासिक धरोहरों और गहन रहस्यों से भरा है, बल्कि यहां की संरचनाएं, गुफा और खंडहर अतीत की एक अनकही कहानी को बयां कर रही हैं। इस तरह की खोज से इतिहास का एक नया अध्याय लिखने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। जो न केवल इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यटन के क्षेत्र में भी स्थानीय विकास का मजबूत आधार बन सकती है। तरुण मेहरा चौकोड़ी में पिछले साल प्रागैतिहासिक कालीन गुफा खोज चुके हैं। उन्होंने विशेष प्रजाति की मकड़ी की भी खोज की थी। गोबाराड़ी गांव में मिली 100 मीटर लंबी गुफा का पहला 30 मीटर हिस्सा संकरा है। यह करीब ढाई से तीन फीट चौड़ा है। अगले 30 मीटर हिस्से में एक कुआं बना हुआ है। यह पहले हिस्से की तुलना में अधिक चौड़ा है। अंतिम 40 मीटर हिस्सा दो से तीन मीटर तक चौड़ाई का है। अंतिम भाग दो से तीन मीटर तक चौड़ा और इतना ही ऊंचा है। अंतिम भाग की निकासी को पत्थरों से बंद किया गया है। गुफा स्थल के आसपास कुछ पुराने मकानों के खंडहर भी हैं।

गुमनाम इतिहास के संकेत

काफल हिल के संस्थापक तरूण मेहरा का कहना है कि थल और मुवानी के बीच बसे गोबाराड़ी गांव में रहस्यमयी स्थान मिल रहे है। यहां कई सुरंगें, खंडहर और पुरानी दीवारें मौजूद हैं। ये समय की परतों में दबे एक भव्य इतिहास का संकेत देती हैं। तरुण मेहरा का कहना है कि ग्रामीणों ने उन्हें इस स्थान के बारे में कुछ किस्से सुनाए थे। इन किस्सों में एक राजा का उल्लेख आता था, जिसने गुफा और किला बनाया था। इस कहानी को सुनकर उनकी जिज्ञासा बढ़ी और उन्होंने इस रहस्यमयी स्थल को खोजने का संकल्प लिया। इसके लिए उन्होंने स्थानीय ग्रामीणों से संपर्क किया। एक बुजुर्ग रतन राम ने उन्हें इस स्थान का रास्ता दिखाया। वृद्धावस्था होने के कारण रतनराम ने गुफा के भीतर जाने से इनकार कर दिया, पर ये जरूर बताया कि यहां एक पीले रंग का दोमुंहा सांप उन्होंने देखा है, जो एक विशाल सुनहरे पत्थर के चारों ओर लिपटा रहता था। इस तरह की अन्य किवदंतियां और कहानियां भी इस स्थान को लेकर काफी प्रचलित रही हैं। रतन राम के अनुभवों को साझा करने के बाद तरुण मेहरा और उनकी टीम रहस्यमयी गुफाओं को खोजने के लिए निकली। इस दौरान मोहन सिंह कन्याल से मुलाकात हुई जिन्होंने तरुण मेहरा को यह ऐतिहासिक स्थल दिखाया और उसकी जानकारी दी। जो इस खोज का एक बड़ा आधार बना। तरुण मेहरा और उनकी टीम तमाम उपकरणों के साथ रस्सियों से उतरकर गुफा तक पहुंची तो वो रहस्यमयी गुफा को देखकर हैरान रह गए। क्योंकि एक ही गुफा में कई सुरंगें और खंडहर देखने को मिले। तरुण मेहरा और उनकी टीम ने पाया कि यहां मौजूद सुरंगें अत्याधिक रहस्यमयी हैं। इनमें से कुछ बंद भी हो चुकी हैं, जबकि कुछ के अंतिम छोर तक पहुंचना मुश्किल ही
नहीं नामुमकिन है। गुफा के भीतर सिर्फ एक घर के अवशेष ही नहीं, बल्कि कई घरों के खंडहर देखने को मिले हैं। जो यह संकेत देते हैं कि यहां कभी एक बड़ी बस्ती रही होगी। पहाड़ों पर फैलीं दीवारें और संरचनाएं इस बात की गवाही देती हैं कि यह स्थान किसी समय एक किला रहा होगा।

कत्यूरी राज की संरचनाएं

ऐसा माना जाता है कि इस तरह की संरचनाएं कत्यूरी राजाओं और गोरखाओं के शासनकाल के दौरान बनाई गई थीं। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, इस क्षेत्र को गोरखाओं ने 1804-1825 के बीच अंग्रेजों के पहाड़ों पर चढ़ाई के समय रणनीतिक कारणों से बनाया हो सकता है। यहां शिवालय और छिपे हुए खजाने की संभावना भी जताई जा रही है, जो इस स्थान के धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व को और बढ़ा देता है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह स्थान भूमिगत किला रहा होगा। यहां छिपे खजाने व प्राचीन शिवालय की मौजूदगी की कहानी इस स्थान को और ज्यादा रोमांचक बनाती हैं। वयोवृद्ध रतन राम और अन्य बुजुर्गों का योगदान महत्वपूर्ण है, जिन्होंने तरुण मेहरा को इस रहस्यमयी स्थल के बारे में जानकारी दी। आम तौर पर गुफाओं के अंदर जाने की हिम्मत कोई नहीं कर पाता है, लेकिन स्थानीय लोगों का विश्वास है कि यह क्षेत्र गोरखा सेना के समय का है। इस गुफा को देखने वाले ग्रामीणों का दावा है कि चट्टान पर इस गुफा के पास एक किले के खंडहर और आसपास करीब 30 से 35 छोटे घरों के अवशेष नजर आते हैं। अतीत में यहां निवास करने वाले धन रौत नामक एक व्यक्ति के परिवार से जुड़ा बताया जा रहा है। यहां मौजूद बड़ी गुफाएं, प्राचीन घर एवं अन्य अवशेष इस क्षेत्र की समृद्धि की ओर संकेत करते हैं। गुफा की प्राचीन दीवारें, कंदराएं देखने से इसके 300 वर्ष से अधिक पुराने होने का अनुमान है। अतीत में इन्हीं गुफाओं, कंदराओं में धन रौत नामक वनराजि जनजाति का परिवार रहता था। फिर उसने मानव सभ्यता के रहन-सहन से घर बनाना सीखा और एक विशेष प्रकार का घर बनाकर रहने लगा, जिसकी आजीविका कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर थी। स्वयं घर बनाकर वनरौत के रहने की यह पहली खोजी गई ऐतिहासिक घटना है। तरुण मेहरा का कहना है कि यहां उखलढुंगा नाम का एक विशेष स्थान है, जिसे ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक बहुत बड़े चिकने पत्थर में दो बड़ी सी ओखली भी हैं। इस पत्थर पर समय के साथ घिसाव के निशान पाए गए हैं। आज भी गोबराड़ी के लोग इस बड़ी सी ओखली में भैया दूज के दिन च्यूड़ा (धान) कूटने जाते हैं। मेहरा के साथ गोबराड़ी गांव के मोहन सिंह कन्याल, रामी राम भी थे, जिन्होंने धन रौत के उड्यार और मकान के खंडहर की अपने पिता से सुनी कहानी मेहरा को बताई थी। लोगों को उम्मीद है कि गुफा के प्रकाश में आने के बाद इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन बढ़ने का सीधा मतलब क्षेत्र के नौजवानों को रोजगार से जोड़ने से है। पर्यटन बढ़ने से क्षेत्र के विकास की संभावनाएं भी बढ़ जाएगी।

- **पिथौरागढ़ जिले में एक साल के भीतर दो रहस्यमयी गुफाएं मिल चुकी हैं, जिसमें गोबराड़ी की गुफा भी शामिल है, गुफा की खोज करने वाले तरुण मेहरा सामाजिक कार्यकर्ता और प्रकृति प्रेमी होने के साथ साहसिक एडवेंचर का कार्य करते हैं।**
- **इस गुफा को देखने वाले ग्रामीणों का दावा है कि चट्टान पर इस गुफा के पास एक किले के खंडहर और आसपास करीब 30 से 35 छोटे घरों के अवशेष नजर आते हैं, अतीत में यहां निवास करने वाले धन रौत नामक व्यक्ति के परिवार से जुड़ा बताया जा रहा है।**
- **लोगों को उम्मीद है कि गुफा के प्रकाश में आने के बाद इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन बढ़ने का सीधा मतलब क्षेत्र के नौजवानों को रोजगार से जोड़ने से है। पर्यटन बढ़ने से क्षेत्र के विकास की संभावनाएं भी बढ़ जाएगी।**

रोमांचित करता रूपिन दर्रा ट्रेक

हिमालय के दो राज्यों में फैले इस रूपिन दर्रे का ट्रेक रोमांचित करता है, वैसे ट्रैकिंग के लिए कंधों को विशेष रूप से मजबूत करना पड़ता है, क्योंकि 40 से 50 किलोग्राम का बैग पीठ पर लाद कर चढ़ाई करनी होती है, पहले दिन देहरादून से धौला कैंप तक की यात्रा होती है।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड के पर्वतीय इलाकों में यदि छुट्टियां बिताने के बारे में सोच रहे हैं, तो उत्तर भारत में सबसे बेहतरीन डेस्टिनेशन के रूप में देहरादून का नाम सबसे पहले आता है। पहाड़ों की अनोखी खामोशी से लेकर ताजगी भरे नजारों तक, यहां हर किसी के लिए कुछ न कुछ है। उत्तराखंड में हिमालय की ऊंचाइयों पर ट्रैकिंग करना बेहद आकर्षक रोमांचकारी रहता है। ऐसी ही जगह जो सैलानियों का ध्यान खींचती है वो है देहरादून में रूपिन दर्रा ट्रेक। एक ऐसा रोमांचित करने वाला स्थल है जहां बर्फ से ढकी चोटियां सैलानियों के साथ लुका-छिपी करती हैं। रूपिन दर्रा ऊंचे अल्पाइन क्षेत्र से होकर गुजरता है, जो इसे एक विस्मयकारी और रोमांच का अनुभव कराता है। सभी पर्वतारोहियों के लिए यह बेहतरीन ट्रैकिंग क्षेत्र है। रूपिन दर्रा ट्रेक में चट्टानों और लकड़ी के पुलों को खोदकर बनाए गए रास्ते शामिल हैं, जो पहाड़ों, ग्लेशियरों और बर्फीली ढलानों तथा बर्फ के मैदानों में गहरी अंधेरी तहों से होकर गुजरता है। रास्ते में सफेद रोडोडेंड्रोन और हरे घास के मैदान हैं। यानी ऊंचे पेड़ और गहरी घाटियां ताकत और सुंदरता की एक मूक भाषा बोलती हैं। रुपिन ट्रेक 4,700 मीटर की ऊंचाई पर है और 52 किलोमीटर की दूरी तय करता है। यानी रूपिन दर्रा ऊंचा पर्वतीय दर्रा है जो राजसी हिमालय पर्वत श्रृंखला में फैला हुआ है। यह उन साहसिक लोगों के लिए प्रसिद्ध और लोकप्रिय हाइकिंग रूट है जो रोमांचक चुनौतियों का आनंद लेना पसंद करते हैं। इसकी यात्रा उत्तराखंड के धौला से शुरू की जा सकती है, जो हिमाचल प्रदेश के सांगला में पहुंच कर समाप्त होती हैं। ट्रैकिंग के दौरान कई अप्रत्याशित घटनाओं का सामना भी हो सकता है। रास्ते में पड़ने वाले झरने और गांव तथा ग्रामीणों की जीवनशैली देखने को मिलती है। इसके अलावा, झाका गांव या हैंगिंग गांव देहरादून का सबसे अविश्वसनीय डेस्टिनेसन हैं, जहां शायद ही कभी जाने का मौका मिले क्योंकि यह गांव पहाड़ी के किनारे पर है, जिसे देखकर ऐसा लगता है मानों यह किसी चट्टान से लटका हुआ है। इस ट्रैकिंग रूट के अंत में गगन चुंबी पर्वत पर किन्नर कैलाश का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है।

ट्रेक में पड़ने वाले झरने और गांव तथा ग्रामीणों की जीवनशैली देखने को मिलती है, इसके अलावा, झाका गांव या हैंगिंग गांव देहरादून का सबसे अविश्वसनीय डेस्टिनेसन हैं, जहां शायद ही कभी जाने का मौका मिले क्योंकि यह गांव पहाड़ी के किनारे पर है, जिसे देखकर लगता है कि यह किसी चट्टान से लटका हुआ है।

रुपिन दर्रे के अलग-अलग रास्ते

रुपिन दर्रे पर चढ़ाई की शुरुआत अलग-अलग रास्तों से की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में गोसांगू इनमें से एक ट्रेक का शुरुआती बिंदु है। रोहडू से गोसांगू तक शिमला का रास्ता ही वो रास्ता है जिसे हाइकर्स और यात्री चुनते हैं। रुपिन दर्रे का वैकल्पिक रास्ता नैटवार से भी शुरू होता है, जहां देहरादून से धौला के जरिए पहुंच सकते हैं। दो महत्वपूर्ण नदियों का उद्गम स्थल रुपिन दर्रे पर मिलता है, जो इसे देहरादून के सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक बनाता है। दर्रे के एक तरफ बर्फ पिघलती है, जिसके परिणामस्वरूप रुपिन नदी यमुना, बंगाल की खाड़ी की तरफ बहती है। पहाड़ी दर्रे को पार करने के बाद, आप सतलुज नदी को अरब सागर की ओर बहते हुए देखेंगे। सरस्वती और सरस्वती ग्लेशियर वो स्थान है जहां प्राचीन नदी सरस्वती (एक पुरानी नदी जो अब नहीं बहती) ने पहली बार अपना प्रवाह शुरू किया था। हिमालय में ऐसे कई दर्रे हैं जो किन्नौर की घाटी को दक्षिण में गढ़वाल से जोड़ते हैं। एक समय इन दर्रों का इस्तेमाल चरवाहों और व्यापारियों द्वारा किया जाता था। यह मार्ग कई तरह के परिदृश्य, ऊंचाई और ढलान वाला है। शुरुआत में यह मार्ग गोविंद राष्ट्रीय उद्यान के अंदर था और ओक और देवदार के जंगलों, ऊंचाई पर नदी घाटियों के आंतरिक गांवों से होकर गुजरता था। जबकि खूबसूरत घास के मैदान (बुग्याल), अल्पाइन जंगली फूल, झरने, अधिक ऊंचाई पर बर्फ के मैदान हैं। आमतौर पर जंगली फूलों से समृद्ध है। खासकर मानसून के ठीक बाद इस दर्रे के आसपास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध ब्रह्म कमल प्रचुर मात्रा में खिलते हैं। दर्रे का दूसरा छोर अर्थात किन्नौर अपने गोल्डन डिलिशियस सेब के बागों के लिए भी प्रसिद्ध है।

दो मौसमों में ट्रैकिंग का विकल्प

हिमालय में सभी उच्च ऊंचाई वाले ट्रेक (कुछ ट्रांस हिमालयी ट्रेक को छोड़कर) की तरह हैं। रूपिन ट्रेक में दो मौसमों में ट्रैकिंग की जा सकती है। एक मानसून से पहले गर्मियों में और दूसरा मानसून के बाद पतझड़ में। ग्रीष्मकाल में मई की शुरुआत से जून के अंत तक। मानसून के बाद सितंबर-अक्टूबर में हिमालय के किसी भी उच्च ऊंचाई वाले दर्रे में ट्रैकिंग की जा सकती है। मानसून के बाद मौसम साफ और धुंध रहित हो जाता है। सितंबर में आमतौर पर हरियाली रहती है और घास के मैदान अपने सबसे अच्छे रूप में मिलते हैं। मानसून में कई तरह के फूल खिलते हैं और सितंबर के अंत तक खिलते रहते हैं। अक्टूबर से घास सुनहरी हो जाएगी और ठंड बढ़ जाएगी। साथ ही 14000 फीट से अधिक ऊंचाई पर बर्फबारी की संभावना बनने लगेगी। अनुभवी हाइकर जो पहले से ही बर्फ ट्रेक पर जा चुके हैं और जिन्हें बर्फ से कोई खास लगाव नहीं है, वे आमतौर पर इस मौसम को पसंद करते हैं। रूपिन ट्रेक का मतलब धौला से रूपिन नदी का अनुसरण करना है। धौला में सुपिन और रूपिन मिलकर यमुना की मुख्य सहायक नदी टोंस नदी बनाती है। ऊपर की ओर बढ़ने पर न केवल इसके मोड़ और घुमाव देखने को मिलेंगे बल्कि उत्तराखंड के बहुत ही अंदरूनी गांवों और फिर हिमाचल के गांवों जिसकुन और जाखा को भी पार करने का अवसर मिलेगा। दोनों राज्यों की सीमा के घरों की वास्तुकला मिलती जुलती है। जिसकुन और जाखा के ज्यादातर लोग सत्संगी धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं और शुद्ध शाकाहारी होते हैं।

नए युवा रूपिन दर्रा ट्रैकिंग से बचें

ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए हिमालय में सबसे मशहूर ट्रेक में से एक रूपिन दर्रा ही है। रूपिन दर्रे में सभी तरह के ट्रैकर्स के लिए बहुत कुछ है। जैसे-जैसे ट्रैकर आगे बढ़ते हैं, मार्ग खड़ी चढ़ाई, लटकते लकड़ी के पुल और बर्फीले नालों में खुलता जाता है, जो उदकनाल और धांडेरस थैच 3,500 मीटर ऊपर की ओर जाता है। रुपिन जलप्रपात मंत्रमुग्ध करने वाला घास का मैदान है। यहां ट्रैकर आश्चर्यजनक तीन-चरण रूपिन जलप्रपात के साक्षी बनते हैं। एक लुभावना दृश्य वो भी देखने को मिलता है जहां हिमनदों का पानी चट्टानों से नीचे गिरता है। असली चुनौती रुपिन दर्रे (4,650 मीटर) की चढ़ाई के बाद शुरू होती है। चढ़ाई में विशाल बर्फ के मैदानों को पार करना, ऊबड़-खाबड़ इलाकों में चढ़ना और संकरी चोटियों पर चलना शामिल है। जिस क्षण ट्रैकर शीर्ष पर पहुंचते हैं, बर्फ से ढकी चोटियों, अंतहीन घाटियों और ग्लेशियरों का मनोरम दृश्य प्रयास को सार्थक बना देता है। यह ट्रेक उत्तराखंड से शुरू होकर हिमाचल प्रदेश के सांगला में खत्म होता है। यह 8 दिन का ट्रेक है। पहली बार ट्रैकिंग की शुरुआत करने वाले लोगों के लिए यह बिल्कुल नहीं है। क्योंकि रास्ते में कठिनाई बहुत अधिक है। रूपिन दर्रा की ट्रैकिंग के लिए देहरादून के प्रमुख साहसिक गाइड या एजेंसी से ट्रैकिंग एडवेंचर को पहले से बुक करा सकते हैं। चूंकि इनमें से अधिकांश एजेंसियां यात्रा में सभी व्यवस्थाओं का ध्यान रखती हैं, इसलिए सुनिश्चित कर लें कि अपनी यात्रा का आनंद लेने के लिए सही ट्रैकिंग व्यवस्था कर लें। वैसे तो निजी या राज्य सरकार द्वारा संचालित बसों से यात्रा करने का विकल्प है, लेकिन वैकल्पिक रूप से देहरादून में कार रेंटल कंपनियों से निजी टैक्सी बुक की जा सकती है। यानी रोमांचक ड्राइव का आनंद ले सकते हैं।

आठ दिन का रोमांच

हिमालय के दो राज्यों में फैले इस रूपिन दर्रे का ट्रेक रोमांचित करता है। वैसे ट्रैकिंग के लिए कंधों को विशेष रूप से मजबूत करना पड़ता है, क्योंकि 40 से 50 किलोग्राम का बैग पीठ पर लाद कर चढ़ाई करनी होती है। पहले दिन देहरादून से धौला कैंप तक की यात्रा करनी पड़ती है। इसके बाद अगले दिन यानी दूसरे दिन धौला से सेवा तक 5100 फीट से 6300 फीट की यात्रा होती है। तीसरे दिन सेवा से जाखा गांव 6,300 फीट से 7,700 फीट का ट्रेक पूरा करना होता है। चौथे दिन जाखा गांव से सुरुवास थाच, पांचवें दिन सुरूवास थैच से ढंडेरस थैच छठें दिन धनदेरस थैच से ऊपरी झरना शिविर पहुंचते हैं। यानी 13,100 फीट की ऊंचाई पर। इसके अगले दिन यानी सातवें दिन की ट्रैकिंग ऊपरी झरना शिविर से रुपिन दर्रे से रोंटी गाड तक हो पाती है। 8वें दिन रोंटी गाड सांगला यानी 13,100 फीट की ऊंचाई से 8,600 फीट नीचे उतरना होता है। सांगला में यात्रा समाप्त हो जाती है। सबसे कठिन चढ़ाई तीसरे दिन की होती है। यह एकदम खड़ी चढ़ाई है जो जल्दी ही थका देने वाली कही जाती है। इस कठिन चढ़ाई के दौरान ट्रैकिंग करते समय रास्ते में कुछ दुकानें मिल जाती है जहां कुछ देर बैठकर न सिर्फ थकान उतारी जा सकती है बल्कि स्थानीय लोगों के जीवन के बारे में जानने का मौका भी मिल जाता है। चौथे दिन के ट्रैकिंग में कई रोमांचक दृश्य देखने को मिलते हैं। लेकिन मौसम बिगड़ जाए और बारिश हो जाए तो फिर ट्रेक और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है। रास्ते में फिसलन हो जाती है, मतलब सावधानी हटी और दुर्घटना घटी वाली कहावत सटीक बैठती है। फिर भी कुल मिलाकर सांगला तक की यात्रा आधिकारिक तौर पर रूपिन दर्रे तक के शानदार ट्रेक के अंत की ओर ले जाती है। चारों ओर फैले पहाड़ों और हरियाली से भरपूर, देहरादून में रूपिन ट्रेक सभी के लिए एक सुखद अनुभव देता है। वैसे तो भारत में कई ट्रेकिंग क्षेत्र और पहाड़ हैं, लेकिन कुछ जगहें अपनी शानदार आभा और अपने आस-पास की खूबसूरती के कारण सबसे अलग हैं। प्रकृति के साथ एक होने और पहाड़ों में ट्रेकिंग और शिखर पर चढ़ने का प्रत्यक्ष अनुभव पाने के लिए, रूपिन दर्रा ट्रेक उत्तराखंड के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों में से एक है।

- **रुपिन दर्रा ट्रेक में चट्टानों और लकड़ी के पुलों को खोदकर बनाए गए रास्ते शामिल हैं, जो पहाड़ों, ग्लेशियरों और बर्फीली ढलानों तथा बर्फ के मैदानों में गहरी अंधेरी तहों से होकर गुजरता है, रास्ते में सफेद रोडोडेंड्रोन और हरे घास के मैदान बुग्याल हैं।**
- **ट्रैकिंग में विशाल बर्फ के मैदानों को पार करना, ऊबड़-खाबड़ इलाकों में चढ़ना और संकरी चोटियों पर चलना शामिल है, जिस क्षण ट्रैकर शीर्ष पर पहुंचते हैं, बर्फ से ढकी चोटियों, अंतहीन घाटियों और ग्लेशियरों का मनोरम दृश्य उनके प्रयास को सार्थक बना देता है।**

आस्था

मां अग्नेरी देवी में अटूट श्रद्धा

कुमाऊं के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों में कत्यूर की राजधानी लखनपुर, गेवाड़ की कुलदेवी मां अग्नेरी का मंदिर, रामपादुका मंदिर, मासी का भूमिया मंदिर विशेष महत्व रखते हैं, 'राजुला मालूशाही' की प्रेमगाथा के कारण भी बैराठ चौखुटिया की यह घाटी 'रंगीली गेवाड़' के नाम से प्रसिद्ध है।

डॉ.हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट खंड में रामगंगा घाटी का एक प्राचीन व ऐतिहासिक शहर 'चौखुटिया' है। 'चौखुटिया' नाम से ही पता चलता है कि कुमाऊंनी बोली में 'चौ' का शाब्दिक अर्थ है चार और 'खुट' का अर्थ है पैर से। इसका तात्पर्य है कि 'चौखुटिया' में चार अलग-अलग दिशाओं के लिए पैर यानी मार्ग हैं। एक अल्मोड़ा के लिए, दूसरा रामनगर के लिए, तीसरा कर्णप्रयाग के लिए और चौथा तड़गताल के लिए। इस शहर को अल्मोड़ा और द्वाराहाट जैसे राजधानी नगरों से भी अधिक बार मुस्लिम आक्रांताओं का सामना करना पड़ा है। कभी फिरोज तुगलक की फौज से लड़ना पड़ा तो कभी रुहेलों के आक्रमणों को झेलना पड़ा। आक्रांताओं ने इस क्षेत्र के प्राचीन मंदिरों, स्मारकों और देवी-देवताओं की मूर्तियों को नष्ट किया अथवा उन्हें खंडित किया था। रामगंगा नदी के तट पर धुदलिया गांव के पास मां अग्नेरी देवी का प्राचीन मंदिर कत्यूरी कालीन इतिहास की एक अमूल्य धरोहर है। देवभूमि उत्तराखंड की पावन भूमि में बसी रंगीली गेवाड़ घाटी की कुमाऊंनी लोकसाहित्य और संस्कृति के निर्माण में अहम भूमिका रही है। यहां के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों में कत्यूर की राजधानी लखनपुर, गेवाड़ की कुलदेवी मां अग्नेरी का मंदिर, रामपादुका मंदिर, मासी का भूमिया मंदिर विशेष महत्व रखते हैं। 'राजुला मालूशाही' की प्रेमगाथा के कारण भी बैराठ चौखुटिया की यह घाटी 'रंगीली गेवाड़' के नाम से प्रसिद्ध है। अग्नेरी देवी के मंदिर में लगने वाला चैत्राष्टमी मेला कुमाऊं का प्रसिद्ध मेला माना जाता रहा है। क्योंकि देश-विदेश से श्रद्धालुजन मां अग्नेरी देवी के दरबार में अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं।

महाभारत काल से संबंध

अग्नेरी देवी के प्राचीन इतिहास की बात करें तो लोकमान्यता है कि दुनागिरि पर्वत के सामने 'पाण्डुखोली' नामक स्थान में पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दिन बिताए थे। कौरवों को जब उनके अज्ञातवास का पता चल गया तो वे 'कौरवछिना', जिसे 'कुकुछिना' भी कहते हैं, वहां तक उनका पीछा करते हुए पहुंच गए। परंतु देवी दुनागिरि की कृपा से सुरक्षित रह कर 'पांडुखोली' में पांडवों ने कुछ समय प्रवास किया था। उसके बाद कौरवों की सेना से बचते हुए पांडवों ने 'मत्स्य देश' (मासी) की राजधानी विराट नगरी की ओर प्रस्थान किया था। वर्तमान में महाभारत के मत्स्यदेश की पहचान मासी से और विराट नगरी की पहचान गेवाड़ घाटी की बैराठ नगरी से की जा सकती है। इसी 'बैराठ' क्षेत्र में चौखुटिया नगर बसा हुआ है। उत्तराखंड के प्राचीन इतिहास के जानकार महात्मा हरनारायण स्वामी ने महाभारतकालीन विराट नगर की देवी को चौखुटिया स्थित 'अग्नेरी देवी' माना है। दुनागिरि के निकट रामगंगा के किनारे आज भी इस विराट नगरी के प्राचीन पुरातात्विक अवशेष देखे जाते हैं। यहीं पर नदी के किनारे कीचक घाट भी है, जहां भीम ने कीचक का वध किया था। कत्यूरी राजा आसंति वासंति देव का यहीं राज-सिंहासन भी था। महाभारत के विराट पर्व में वर्णित 'दुर्गास्तोत्र' दुनागिरि क्षेत्र में शक्ति पूजा के उत्तराखंडीय स्वरूप पर प्रकाश डालने वाला एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य है। इस स्तोत्र से ज्ञात होता है कि देवी के आशीर्वाद से ही पांडवों ने महाभारत के घनघोर युद्ध में कौरवों को पराजित करके अपने खोए हुए राज्य को पुनः प्राप्त किया था। 1971 में नई मूर्ति की स्थापना

कत्यूरी राजा परम वैष्णव थे और उनके शासनकाल में यहां पशुबलि नहीं दी जाती थी, किंतु चंद राजाओं के शासनकाल में यहां बलिप्रथा शुरु हुई। उसके बाद यहां हरनारायण स्वामी का पदार्पण हुआ तो उन्होंने बलिप्रथा रोकने के लिए विशेष प्रयास किया।

'बैराठ' देवी का स्वयं कथन है कि जो भी इस स्तोत्र का पाठ करेगा वह धन-धान्य, सुख-संपत्ति से युक्त होगा और सब प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर उसके सभी मनोवांछित कार्य सिद्ध होंगे। देवी ने पांडवों को भी आशीर्वाद देते हुए कहा था कि मेरी कृपा प्रसाद से तुम सब पांडवों को विराट नगर में रहते हुए कौरव अथवा वहां के निवासी पहचान नहीं पाएंगे। महाभारत काल के समय धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ विराट नगरी में पहुंच कर सर्वप्रथम इस नगर की कुल देवी और वैष्णवी शक्ति 'दुर्गा' के दर्शन किए और अपनी सुरक्षा की कामना से दुर्गा देवी की स्तुति की थी। महाभारत के विराट पर्व का संस्कृत के 35 श्लोकों में रचित दुर्गास्तोत्र पांडवों के द्वारा उनके अज्ञातवास के समय की गई वैष्णवी शक्ति दुर्गा देवी की ही स्तुति है। कालांतर में इसी बैराठ देवी को स्थानीय मान्यता के अनुसार कत्यूरी राजाओं की कुल देवी या 'अग्नेरी देवी' के रूप में जाना जाने लगा। 2002 में प्रकाशित पुस्तक 'दुनागिरी महिमा' में जन सामान्य की जानकारी के लिए विराट देवी की स्तुति के रूप में इस महाभारत कालीन 'दुर्गास्तोत्र' का भाषानुवाद सहित मूल संस्कृत पाठ परिशिष्ट भाग के रूप में प्रस्तुत किया है। इसके महाभारत कालीन ऐतिहासिक महत्व पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है। महाभारत कालीन इस 'दुर्गास्तोत्र' में धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ देवी दर्शन की कामना से सर्व प्रथम नमन पूर्वक वरदायिनी, कृष्ण स्वरूपा, कुमारी, ब्रह्मचारिणी, सूर्य के समान रक्तवर्णा, पूर्णचंद्र के समान मुख वाली आदि विविध प्रकार के स्तुति वचनों से विराट नगर की कुलदेवी दुर्गा का स्तवन किया था। इस देवी का शक्ति पूजा के उद्भव व विकास के इतिहास की दृष्टि से भी विशेष महत्व है। उत्तरवर्ती काल में ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन त्रिदेवों की शक्तियों का क्रमशः ब्राह्मी, वैष्णवी और शैव (शिवा) शक्तियों के रूपों में स्वतंत्र रूप से विकास हुआ और उनकी रूपाकृति में भी अंतर पाया जाने लगा। किंतु महाभारत कालीन दुर्गा देवी का यह स्तोत्र इस दृष्टि से विलक्षण है कि इसमें महाशक्ति के तीनों स्वरूपों का एक साथ प्रतिनिधित्व होने के कारण इस आराध्य देवी को जहां एक ओर चतुर्भुजी वैष्णवी कहा गया है तो दूसरी ओर दुर्गति से तारने वाली दुर्ग रक्षिका दुर्गा के रूप में भी इसका स्तवन किया गया है। यह देवी आग्नेय कोण में होने के कारण 'अग्नेरी देवी' कहलाती है। पहले इस मंदिर के गर्भगृह में कत्यूरी राजाओं द्वारा काषाय पाषाण से निर्मित दुर्गा देवी की आदमकद मूर्ति विराजमान थी। किंतु 1970 में वह मूर्ति चोरी हो जाने के बाद यहां 1971 में नई मूर्ति की स्थापना की गई।

सुरंगों का रहस्य

1905 में कुमाऊं के संत सीताराम बाबा ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। उस समय कार्तिक पूर्णमासी की रात मंदिर प्रांगण में बहुत बड़ा मेला लगता था। श्रद्धालुजन प्रातः रामगंगा में स्नान के बाद देवी की पूजा अर्चना करते थे। यह भी महत्वपूर्ण जानकारी है कि कत्यूरी राजा परम वैष्णव थे और उनके शासनकाल में यहां पशुबलि नहीं दी जाती थी। किंतु चंद राजाओं के शासनकाल में यहां बलिप्रथा शुरू हुई। उसके बाद यहां हरनारायण स्वामी का पदार्पण हुआ तो उन्होंने बलिप्रथा रोकने के लिए विशेष प्रयास किया। वस्तुतः बैराठ नगरी की राजधानी रही लखनपुर क्षेत्र में पुरातात्विक महत्व की एक अनोखी सुरंग मिली, जिसके अंदर पुरानी सीढ़ियां, रोशनदान, देवी-देवताओं की मूर्तियां एवं पाषाणकाल की दीवार पर कई आकृतियां उकेरी हुई थी। माना जाता है कि यह सुरंग 12वीं शताब्दी में कत्यूरी राजाओं द्वारा निर्मित की गई होगी। तब यहां लखनपुर में उनकी राजधानी हुआ करती थी। इस सुरंग का पता उड़लीखान-आगर मनराल सड़क निर्माण के दौरान लगा था। कहते हैं कि पूर्व में यह सुरंग करीब डेढ़ किलोमीटर लंबी थी, जो सीधे कत्यूरी राजवंशी राजाओं की राजधानी लखनपुर को जोड़ती थी। लेकिन समय बीतने के साथ ही सुरंग का दायरा भी सिमट गया। फिर भी यह सुरंग 40-50 मीटर लंबी अभी भी है। इसके दो मुहाने हैं। स्थानीय लोग बताते हैं कि इस भू-भाग में इस तरह की कई और सुरंगें भी हैं, जो अब बंद हो चुकी हैं। लखनपुर में आठवीं-नौवीं शताब्दी के मंदिरों में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों व खंडहरों के मिलने से पुष्टि होती है कि कत्यूरी शासकों द्वारा अपने शासन काल के दौरान यहां अनेक गुफा बनाई गई होंगी, जिनका सामरिक एवं धार्मिक दृष्टि से भी विशेष महत्व रहा। विशेष बात ये है कि ये गुफाएं पर्वत शिखर से रामगंगा नदी तक पहाड़ खोदकर बनाई गई थीं। राम गंगा नदी के किनारे पूर्व में बनाए गए अनेक मुहाने अब बंद हो चुके हैं।

सुरंगों के अध्ययन की जरूरत

इस क्षेत्र के इतिहासकार, 'लखनपुर के कत्यूर' के लेखक और चौखुटिया के पूर्व ब्लॉक प्रमुख रहे डा. लक्ष्मण सिंह मनराल के अनुसार बैराठ नगरी में कत्यूरी राजाओं की एक शाखा ने दीर्घकाल तक यहां राज किया था और लखनपुर उनकी राजधानी रही। उसके अवशेष आज भी यहां मौजूद हैं। उन्होंने पहाड़ों में कई सुरंगें बनाईं, जिनका उपयोग रामगंगा नदी में स्नान करने और वहां स्थित नौलों और जलाशयों से पानी लाने के लिए किया जाता था। चौखुटिया का इतिहास बताता है कि उड़लीखान गांव के पास 12वीं शताब्दी के आसपास निर्मित ये

- **महाभारत के विराट पर्व में वर्णित 'दुर्गास्तोत्र' दुनागिरि क्षेत्र में शक्ति पूजा के उत्तराखंडीय स्वरूप पर प्रकाश डालने वाला एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य है, इस स्तोत्र से ज्ञात होता है कि देवी के आशीर्वाद से ही पांडवों ने युद्ध में कौरवों को पराजित करके अपने खोए हुए राज्य को पुनः प्राप्त किया था।**
- **यह देवी आग्नेय कोण में होने के कारण 'अग्नेरी देवी' कहलाती है, पहले इस मंदिर के गर्भगृह में कत्यूरी राजाओं द्वारा काषाय पाषाण से निर्मित दुर्गा देवी की आदमकद मूर्ति विराजमान थी, किंतु 1970 में वह मूर्ति चोरी हो जाने के बाद यहां 1971 में नई मूर्ति की स्थापना की गई।**

गुफाएं कई पौराणिक और प्राचीन इतिहास के पहलुओं को समेटे हुए है। इस क्षेत्र में इस प्रकार की और भी कई गुफाएं हैं, जिनमें से कई के मार्ग तो कई के मुहाने बंद हो चुके हैं। क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई अल्मोड़ा के संज्ञान में भी ये गुफाएं हैं। क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा इन गुफाओं के संबंध में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) नई दिल्ली को पत्राचार द्वारा जानकारी भी दी गई किंतु आज तक एएसआई ने इन महत्वपूर्ण अवशेषों के अध्ययन या संरक्षण की दिशा में कोई ठोस प्रयास किया हो इसकी जानकारी नहीं है। अग्नेरी देवी शक्ति पीठ से स्पंदित यह रामगंगा और गेवाड़ घाटी का क्षेत्र रामायण और महाभारत काल से ही प्रसिद्ध राजधानी नगर के रूप में विकसित क्षेत्र रहा है। इन अति प्राचीन सुरंगों का यदि पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन और सर्वेक्षण किया जाए तो कुमाऊं क्षेत्र व कत्यूरी कालीन प्राचीन इतिहास के कई अज्ञात और अनसुलझे पहलुओं से भी पर्दा उठ सकता है। एक बार गेवाड़ घाटी में महामारी का प्रकोप बढ़ गया। इससे मुक्ति के लिए मैया मंदिर की स्थापना की गई। कुछ लोगों का मानना है कि तब यहां कत्यूरी शासकों की कुलदेवी मां भगवती का छोटा मंदिर था। वर्ष 1900 में गेवाड़ घाटी के लोगों की मदद से पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार कर मंदिर को नया स्वरूप दिया गया। मंदिर में अष्टभुजा खड्गधारिणी महिषासुर मर्दनी भगवती माता की मूर्ति स्थापित की गई। जो वर्ष 1970 में चोरी हो गई थी।

भारत में हिंदू हाशिये पर

भारत में विश्व की लगभग 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की लगभग 1.21 अरब जनसंख्या में से 79.08 प्रतिशत हिंदू है तथा 14.2 प्रतिशत जनसंख्या मुस्लिम तथा 2.3 प्रतिशत जनसंख्या ईसाई धर्म को मानने वालों की है।

डॉ.अजीत कुमार दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर, मुरादाबाद

संपूर्ण विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज तथा कानून दोनों के द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। भारत के पूर्ण इतिहास के दौरान धर्म का यहां की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत में विश्व की लगभग 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की लगभग 1.21 अरब जनसंख्या में से 79.08 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू है तथा 14.2 प्रतिशत जनसंख्या मुस्लिम तथा 2.3 प्रतिशत जनसंख्या ईसाई धर्म को मानने वाले लोगों की है। इन आकड़ों का अंतर 2025 तक आते आते काफी बढ़ चुका है। भारत में 1950 से 2015 के बीच हिंदू आबादी 7.82 फीसदी घट गई है। राष्ट्रीय स्तर पर तो हिंदू बहुसंख्यक हैं और अन्य समुदायों को अल्पसंख्यक का दर्जा मिला हुआ है, किंतु ये आंकड़े राज्यों के स्तर पर कुछ और ही कहानी बयां करते हैं। भारत 28 राज्यों एवं 8 कुंद्र शासित प्रदेशों का एक संघ है जिसमें से कई राज्य ऐसे हैं जहां हिंदुओं की जनसंख्या 50 प्रतिशत से भी कम है और कई राज्यों में ये आंकड़े 10 प्रतिशत से भी कम है। अर्थात लगभग एक चैथाई राज्य हिंदुओं के अल्पसंख्यक होने की चपेट में आ चुके हैं। भारत के कई राज्यों, जिनमें अभी हिंदू बहुसंख्यक हैं उनके कई जिलों में या तो हिंदू अल्पसंख्यक हो चुके हैं या होने की बार्डर लाइन पर पहुंच चुके हैं। उत्तर प्रदेश का रामपुर, संभल, मुरादाबाद आदि जिलों में हिंदू अल्पसंख्यक होने के कगार पर पहुंच रहे हैं। कई राज्यों में हिंदुओं की जनसंख्या में वृद्धि ऋणात्मक स्तर पर भी जा चुकी है।

2050 तक भारत सबसे ज्यादा मुस्लिम होंगे

भारत में हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि दर 16.8 प्रतिशत ही है, किंतु मुस्लिम आबादी 24.6 प्रतिशत की दर से लगातार बढ़ रही है। इस हिसाब से 2050 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा (पीआरसी)। देश में इस समय सबसे अधिक हो-हल्ला बहुत तेजी से बढ़ती मुस्लिम आबादी पर किया जा रहा है। किंतु ऐसा अनुभव हो रहा है कि तेजी से बढ़ती मुस्लिम आबादी के साथ हिंदू अल्पसंख्यकता को गुपचुप जो बढ़ा रहा है, वह है मुस्लिम और ईसाई समुदायों, में धर्मातरण। देश में ईसाई आबादी 2.78 धर्मान्तरण का खेलकरोड़ हो गई है, इनकी वृद्धि तो 15.5 प्रतिशत की दर से ही बढ़ रही है। किंतु इनकी आबादी बढ़ने का सबसे बड़ा आधार धर्मान्तरण है। विश्व में लगभग 2.7 मिलियन लोग प्रति वर्ष ईसाई धर्म में कन्वर्ट होते हैं (डब्ल्यूसीई)। भारत में 1991 से 2011 के मध्य औसतन लगभग 1.7 लाख प्रतिवर्ष लोगों का ईसाई धर्म में धर्मान्तरण हुआ है (इंडियन एक्सप्रेस)। भारत में मुस्लिम धर्मान्तरण के सटीक आकड़ें उपलब्ध नहीं हैं किंतु इसकी संख्या अच्छी कल्पना से भी बहुत ज्यादा हो सकती है। सेंट थामस ने केरल में सबसे पहले धर्मान्तरण कराकर, धर्म परिवर्तन की जो ज्वाला भड़काई थी वो आज इतनी भीषण हो चुकी है कि भारत के 5 राज्यों, मिजोरम, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश में ईसाई धर्म बहुसंख्यक हो गया है और केरल में स्थिति तो और भी ज्यादा विकट है। 2011-12 में ईसाई मिशनरियों के भारत में 515 ऐसे संगठन थे जिन्होंने 2003.75 करोड़ रुपये का विदेशी फंड प्राप्त किया था (एमएचए) इतनी बड़ी रकम का प्रयोग वे धर्मान्तरण कराने में करते हैं। क्योंकि भारत की गरीब जनता हो या आदिवासी उनके प्रलोभन का जल्दी शिकार बन जाते हैं। उत्तर पूर्व के राज्यों में ईसाई धर्मान्तरण करने वालों में 90 प्रतिशत से अधिक लोग पैसे या अन्य सुविधाओं के लिए धर्मान्तरण करते हैं।

पश्चिम बंगाल में तो इस समय स्थिति भयावह होती जा रही है, सीमांत राज्य पश्चिम बंगाल में बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं ने तो डेमाग्राफी ही चेंज कर दी है, घुसपैठियों के दम पर पश्चिम बंगाल सरकार चला रही ममता बनर्जी ने भी हिंदुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बना रखा है।

राज्य	हिंदू जनसंख्या 2001	हिंदू जनसंख्या 2011	जनसंख्या में कमी बहुसंख्यकों का धर्म
मिजोरम	3.55	2.75	-0.80 ईसाई
मेघालय	13.27	11.53	-1.74 ईसाई
नागालैण्ड	7.68	8.75	-1.07 ईसाई
लक्षद्वीप	3.66	2.77	-0.89 मुस्लिम
जम्मू कश्मीर	29.63	28.44	-1.19 मुस्लिम
मणिपुर	46.01	41.39	-4.62 ईसाई
अरूणाचल	34.60	29.04	-5.56 ईसाई

जनसंख्या के ये आंकड़े प्रतिशत में है।

धर्मान्तरण के लिए भारतीय संविधान की तमाम कमजोरियां भी जिम्मेदार हैं यदि कोई हिंदू जिसे भारतीय संविधान में विशिष्ट संविधानिक सुविधाएं हासिल हैं वह धर्मान्तरण कर मुस्लिम या ईसाई बन जाता है तो भी उसे वही सुविधाएं मिलती रहती हैं जिससे वह विशिष्ट संविधानिक सुविधाएं तो प्राप्त करते ही हैं साथ में अन्य धर्मों के द्वारा दी जाने वाले लुभावने लाभ भी हासिल करते हैं। इस संबंध में पुनरावलोकन करने की आवश्यकता बलवती हो गई है। संपूर्ण भारतीय परिदृश्य में बढ़ती मुस्लिम आबादी और उनकी तूफानी जनसंख्या वृद्धि दर के साथ उत्तर पूर्व के राज्यों में नगण्य होती हिंदू आबादी, ईसाई धर्मान्तरण, ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जा रहा धार्मिक प्रचार-प्रसार, हिंदू धर्म में वापसी आदि पर भी गंभीर आकृष्टता बनाए जाने की आवश्यकता है। नहीं तो हिंदू अल्पसंख्यकता 7 राज्यों से बढ़कर और अधिक राज्यों तक फैल जाएगी। केरल इसकी चपेट में आ चुका है जहां 2011 की जनगणना के अनुसार हिंदू आबादी मात्र 54.7 प्रतिशत रह गई है। पश्चिम बंगाल में तो इस समय स्थिति भयावह होती जा रही है। सीमांत राज्य पश्चिम बंगाल में बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं ने तो डेमाग्राफी ही चेंज कर दी है। घुसपैठियों के दम पर सरकार चला रही ममता बनर्जी ने भी हिंदुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बना रखा है। हालांकि कई राज्यों में हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देने के लिए कई याचिकाएं सर्वोच्च न्यायालय में लम्बित हैं एवं राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने राज्यों में हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देने के लिए दिसंबर 2017 में तीन सदस्यीय समिति गठित की थी जिसकी अध्यक्षता जार्ज कुरियन कर रहे थे व सदस्य सुलेखा कुम्बारे तथा मनजीत सिंह राय थे। समिति और उसकी सिफारिशें आज तक सोयी हुई हैं। हिंदुओं के साथ सांप्रदायिक हिंसा होना आम बात सी हो गई है जिसका ताजा उदाहरण पश्चिम बंगाल है। जहां नया वक्फ कानून आने के बाद मुर्शिदाबाद में जो हुआ वो दुनिया ने देखा।

हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा

हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा मात्र मिल जाने से समस्या का हल नहीं होने वाला, समस्या का हल देश में शिक्षा एवं आर्थिक स्तर के उन्नयन, देश में सशक्त जनसंख्या नीति बनाने और लागू करने, समान नागरिक संहिता लागू करने, व्यवहारतः धर्मान्तरण रोकने तथा संवैधानिक कमियों को दूर करने आदि से होगा नहीं तो हिंदू धर्म अपने ही आविर्भाव तथा उत्थान के देश में क्षरण तथा समाप्ति की गर्त में विलीन होने की कगार पर पहुंच जाएगा। केंद्र सरकार के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय ने मार्च 2022 में सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर कहा था कि जिन राज्यों में हिंदुओं की संख्या कम है वहां की सरकारें उन्हें अल्पसंख्यक घोषित कर सकती हैं। जिसके बाद सवाल उठने लगे कि हिंदू बहुल भारत में क्या

- **हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा मिल जाने से समस्या का हल नहीं होने वाला, समस्या का हल देश में शिक्षा, आर्थिक स्तर के उन्नयन, देश में सशक्त जनसंख्या नीति लागू करने, समान नागरिक संहिता लागू करने, धर्मान्तरण रोकने तथा संवैधानिक कमियों को दूर करने आदि से होगा।**
- **हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि दर 16.8 प्रतिशत ही है, किंतु मुस्लिम आबादी 24.6 प्रतिशत की दर से लगातार बढ़ रही है, इस हिसाब से 2050 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा (पीआरसी)।**

हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा मिल सकता है? अगर राज्य सरकारें हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देती हैं तो उसका आधार क्या होगा और इससे हिंदुओं को क्या फायदा होगा? ये हलफनामा केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय की जनहित याचिका के बाद दायर किया था। याचिका में अश्विनी कुमार उपाध्याय ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग की वैधता को चुनौती दी थी। अश्विनी कुमार उपाध्याय का कहना था कि 2002 में सुप्रीम कोर्ट की 11 जजों की बेंच ने कहा था कि राष्ट्रीय स्तर पर भाषा और धर्म के आधार पर अल्पसंख्यक का दर्जा नहीं दिया जा सकता। दोनों की पहचान राज्य स्तर पर की जाएगी, लेकिन अभी तक राज्य स्तर पर गाइडलाइन क्यों तैयार नहीं की गई है जिससे अल्पसंख्यक समुदाय की पहचान की जा सके इसका जवाब देने के लिए न तो राज्य तैयार हैं और न ही केंद्र सरकार कुछ बता रही है। भारत में अभी तक राष्ट्रीय स्तर पर 6 धर्मों को अल्पसंख्यक का दर्जा मिला हुआ है। इसमें मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, पारसी और जैन धर्म शामिल है। केंद्र सरकार ने जैन धर्म को 2014 में और अन्य को 1993 में अल्पसंख्यक का दर्जा दिया था। फिलहाल इस मामले को लटकाने, अटकाने और भटकाने वाली नीति का शिकार बना दिया गया है।

किस्सा कश्मीर का

बड़े पर्दे पर कश्मीर का बैकड्रॉप एक हिट फॉर्मूला रहा है, 50-60 और 70-80 के दशक की रोमांटिक फिल्में हों या कि आतंकवाद के बढ़ने के बाद की फिल्में-कश्मीर की हर कहानी ब्लॉकबस्टर रही है, कुल मिलाकर सिल्वर स्क्रीन के लिए कश्मीर एक अहम स्थान रहा है।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

1965 में आई फिल्म 'जब जब फूल खिले' का नाम आज की पीढ़ी ने तो सुना भी नहीं होगा, लेकिन जिस पीढी ने यह फिल्म देखी उसे कश्मीर की खूबसूरत वादियां जरूर याद होंगी। इस फिल्म में शशि कपूर और नंदा की यादगार भूमिका और उनके ऊपर फिल्माए गए कई गीतों को 60-70 के दशक के लोग आज भी गुनगुना लेते हैं। इस फिल्म में नंदा एक पर्यटक थी, कश्मीर घूमने जाती हैं, जिसे झील में शिकारा चलाने वाले शशि कपूर से धीरे-धीरे मोहब्बत हो जाती है। इसी फिल्म के गीत हैं- 'एक था गुल और एक थी बुलबुल, दोनों चमन थे...।' 'है ये कहानी बिल्कुल सच्ची, मेरे नाना कहते थे...।' लेकिन आज के हालात बताते हैं कि अब वहां ना तो वो गुल है और ना ही वो बुलबुल। खूनी दरिंदों ने नाना-नानी की सुहानी कहानियों का गला घोंट दिया है। आतंकी पर्यटकों को गोलियों से भून रहे हैं और कश्मीर की खूबसूरत वादियां खूनी मंजर पर आंसू बहा रही हैं। जो जगह कभी गुल, गुलशन और गुलफाम के लिए मशहूर थी, आज वहां आतंकियों ने खूनी वादियां बना रखी हैं। वादियों में कहकशां नहीं, कोहराम मचा हुआ है। कल तक जिन वादियों में 'जब-जब फूल खिले' जैसी फिल्म बना करती थी उन्हीं वादियों में अब 'जब जब गोली चले पर्यटकों को खून गिरे...' जैसी लाइन कायर आतंकी और अलगाववादी गुनगुना रहे हैं।

अब कुदरत का कलेजा भी चीख उठा

22 अप्रैल को पहलगाम से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर खूबसूरत बैसरन घाटी में पाक परस्त कायर आतंकवादियों ने टारगेट किलिंग कर 27 निहत्थे पर्यटकों की निर्मम हत्या की तो कुदरत का कलेजा भी चीख उठा होगा। वो सैकड़ों पर्यटक जो कश्मीर के मिनी स्विटजरलैंड कहे जाने वाली बैसरन घाटी में जब अपनी आंखों और मोबाइल में यादगार लम्हों को कैद कर रहे थे तभी कायर आतंकियों ने उन्हें गोलियों से भून दिया। तब इन पर्यटकों को कश्मीर की ये जन्नत कितनी बदसूरत लगी होगी, इसे सहज ही बयां किया जा सकता है। हालांकि इसमें कोई हैरत करने वाली बात नहीं है कि बॉलीवुड की फिल्मों की कहानियों में भी पहले कश्मीर को स्वर्ग से सुंदर रोमांटिक डेस्टिनेशन के तौर पर दिखाया जाता रहा। लेकिन आतंकवाद ने जिस तरह घाटी में सब कुछ तहस-नहस किया, उससे तो फिल्मी कहानियों के मंजर भी खौफनाक दिखाए जाने लगे। हालांकि जम्मू-कश्मीर भारत का वो डेस्टिनशन है जहां की खूबसूरती ने ना सिर्फ देश बल्कि दुनिया भर के सैलाानियों और फिल्म निर्माता-निर्देशकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा था। पर्दे पर कश्मीर का बैकड्रॉप एक हिट फॉर्मूला रहा है। 50-60 और 70-80 के दशक की रोमांटिक फिल्में हों या कि आतंकवाद के बढ़ने के बाद की फिल्में-कश्मीर की हर कहानी ब्लॉकबस्टर रही है। सिल्वर स्क्रीन के लिए कश्मीर एक अहम डेस्टिनेशन रहा है। आजादी के बाद से ही तमाम बड़े निर्माता-निर्देशक यहां के कुदरती नजारों से आकर्षित व प्रभावित हुए और फिल्मों में प्रमुखता से दिखाया। कश्मीर घाटी को फिल्म निमार्ताओं ने हमेशा मिनी स्विटजरलैंड का विकल्प समझा। एक दौर में घाटी की पृष्ठभूमि पर 'बरसात', 'कश्मीर की कली' या फिर 'जब जब फूल खिले' जैसी फिल्में बनीं और ये फिल्मे सुपर हिट तक रही। ऐसी तमाम रोमांटिक फिल्मों ने उस जमाने के दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। लेकिन 1990 के खूनी दशक के बाद कश्मीर के खौफनाक मंजर वाले बैकग्राउंड में सिनेमा बदलने लगा।

घाटी को बर्बाद करने की कोशिश

1990 में कश्मीर में कश्मीरी पंडितों के नरसंहार और हिंदू महिलाओं के साथ अत्याचार के बाद 1992 में आई मणिरत्म की बहुचर्चित फिल्म 'रोजा' ने बाद बॉलीवुड फिल्म 'रोजा' में आतंकियों के साथ नए सिरे से संघर्ष की कहानीखूबसूरत कश्मीर की कहानी पलट दी। नेशनल अवॉर्ड पाने वाली फिल्म में भी आतंकवादी तमिलनाडु की एक महिला के पति का अपहरण कर लेते हैं। इसके शुरू हो जाती है। 'रोजा' को राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ाने वाली फिल्म के तौर पर देश और विदेश में सराहा गया। इसके बाद कश्मीर बैकग्राउंड पर 'तहान', 'हैदर', 'फितूर,' 'मिशन कश्मीर','अय्यारी' 'शिकारा', 'फिजां', 'यहां', और 'राजी' जैसी कई फिल्में आई जिनमें आतंकियों के मंसूबों और आतंकवाद का आग में जलते कश्मीर को दिखाया गया। ताज्जुब की बात ये है कि कश्मीर में आतंकवाद पर बनी ये सभी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर कामयाब हुईं। आतंकी वारदातों के बावजूद फिल्मी पर्दे पर कश्मीर की तस्वीर नए जमाने की कई फिल्मों में बदस्तूर आती रही और वहां की आबोहवा से दुनिया को वाकिफ कराती रही। 'जब तक है जान', 'ये जवानी है दीवानी', 'हाइवे', 'बजरंगी भाईजान,' '3 इडियट्स' जैसी अनेक फिल्मों में कश्मीर और लद्दाख की लोकेशन बखूबी दिखाई गई, लेकिन कश्मीर की आबोहवा में सबसे बड़ा बदलाव अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद आया। कश्मीर में विकास और वहां के टूरिज्म इंडस्ट्री को नए सिरे से पंख लगे और घाटी में पर्यटन को पटरी पर लाने का अभियान सफल होता दिखने लगा। कश्मीरियों ने भी कश्मीर में बदलाव को स्वीकार किया और इसका स्वागत किया, लेकिन पाकिस्तान परस्त आतंकियों को कश्मीर की तरक्की बर्दाश्त नहीं हुई। इसलिए घाटी को दहलाने के लिए कायर पाकिस्तान परस्त आतंकियों ने 27 बेकसूर निहत्थे पर्यटकों की हत्या कर दी।

कश्मीर में सबसे बड़ा बदलाव अनुच्छेद 370 की समापित के बाद आया, कश्मीर में विकास और टूरिज्म इंडस्ट्री को नए सिरे से पंख लगे, घाटी में पर्यटन को पटरी लौट रहा था, कश्मीरियों ने बदलाव स्वीकारा और इसका स्वागत किया, लेकिन पाक परस्त आतंकियों को कश्मीर की तरक्की बर्दाश्त नहीं हुई।

सदमे में बॉलीवुड

90 के दशक के बाद से घाटी में आतंकवाद चरम पर था। जिससे एक-एक कर घाटी के सिनेमा हॉल बंद हो गये थे, फिल्मों की शूटिंग खत्म हो गई थी, लेकिन जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और धारा 25 के समाप्त होने के बाद कश्मीर घाटी में पर्यटन को पंख लगने लगे। दशकों से बंद पड़े सिनेमाघरों में रौनक लौट आई थी। श्रीनगर के लाल चौक पर सैलानी दिन में ही नहीं बल्कि देर रात में भी चहलकदमी करते नजर आने लगे। जी-20 सम्मेलन तक घाटी में सकुशल हो गया, फिल्मों की शूटिंग के लिए भी फिल्ममेकर पहुंचने लगे। विवेक अग्निहोत्री ने जब द कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्म बनाई तो घाटी में कश्मीरी पंडितों पर हुए जुल्म की दास्तां से हर कोई वाकिफ हुआ। इस फिल्म को राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाली फिल्म के तौर पर आंका गया और देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में इस फिल्म को भारी संख्या में दर्शक मिले। बॉलीवुड फिल्म आर्टिकल 370 का जिक्र भी जरूरी है, इसमें यामी गौतम ने प्रमुख भूमिका निभाई है। हालांकि यह फिल्म द कश्मीर फाइल्स की तरह दर्शकों को नहीं खींच सकी लेकिन घाटी के बदले हालात को जरूर दर्शाती है। 22 अप्रैल को पहलगाम में पर्यटकों को धर्म पूछ कर नाम पूछ कर जिस तरह कायर आतंकियों गोली मारकर एक बार फिर घाटी में दहशत फैलाने की नाकाम कोशिश की है। पाक परस्त आतंकियों ने टूरिज्म इंडस्ट्री के साथ फिल्म इंडस्ट्री को भी नुकसान पहुंचाकर कश्मीरियों के लिए नई मुसिबत पैदा कर दी है। फिल्म जगत से जुड़े हर शख्स ने पहलगाम में आतंकवादी हमले की घोर निंदा की और इस तरह की कायराना घटना को देश की शांति और विकास के लिए खतरनाक बताया।

कश्मीर के कारोबार पर हमला

जम्मू-कश्मीर के मशहूर पर्यटन स्थल पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने देश और दुनिया को झकझोर दिया है। क्योंकि जो पर्यटक अपने परिवार के साथ यहां छुट्टियां मनाने आए थे, उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि कुछ ही पलों में दहशतगर्द उनकी खुशियां छीन लेंगे। उनकी मांग का सिंदूर मिटाकर जिंदगी भर का गम दे देंगे। इस खूबसूरत और शांत टूरिस्ट डेस्टिनेशन में आतंकी हमला ऐसे समय में हुआ है, जब घाटी में हालात सामान्य हो रहे थे और टूरिज्म इंडस्ट्री एक बार फिर से रफ्तार पकड़ चुकी थी। होटल फुल थे, डल लेक पर शिकारे गुलजार थे। टैक्सियां लाइन में खड़ी थीं और एयरपोर्ट से लेकर पहलगाम तक हर जगह पर्यटकों की चहल-पहल दिख रही थी, लेकिन इस घटना ने एक बार फिर कश्मीर की वादियों में डर और सन्नाटा फैला दिया। पिछले कुछ सालों में जम्मू-कश्मीर के टूरिज्म सेक्टर में बड़ा उछाल देखने को मिला। 2019 में आर्टिकल 370 हटने के बाद घाटी में अस्थिरता का माहौल था, फिर कोविड ने जैसे सब कुछ रोक दिया था, लेकिन 2021 से हालात सुधरने शुरू हुए। जम्मू-कश्मीर टूरिज्म विभाग के आंकड़ों गवाह हैं कि 2021 में 1.13 करोड़ पर्यटक घाटी पहुंचे थे.

- **90 के दशक के बाद घाटी में आतंक चरम पर था, जिससे घाटी के सिनेमा हॉल बंद हो गए थे, फिल्मों की शूटिंग खत्म हो गई थी, लेकिन अनुच्छेद 370 समाप्त होने के बाद कश्मीर घाटी में पर्यटन को पंख लगने लगे, दशकों से बंद पड़े सिनेमाघरों में रौनक लौट आई थी।**
- **पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने देश और दुनिया को झकझोर दिया, क्योंकि जो पर्यटक अपने परिवार के साथ यहां छुट्टियां मनाने आए थे, उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि कुछ ही पलों में दहशतगर्द उनकी खुशियां छीन लेंगे, उनकी मांग का सिंदूर मिटाकर जिंदगी भर का गम दे देंगे।**

2022 में ये आंकड़ा बढ़कर 1.88 करोड़ हुआ और 2023 में यह 2.11 करोड़ तक पहुंच गया। 2024 में रिकॉर्ड 2.36 करोड़ पर्यटक जम्मू-कश्मीर घूमने गए थे। घाटी में होटल की इतनी डिमांड हो गई थी कि कई जगह पर्यटकों को प्राइवेट होमस्टे में ठहराया गया था। गुलमर्ग, सोनमर्ग, पहलगाम जैसे डेस्टिनेशन में फिर से रौनक लोट रही थी। होटल इंडस्ट्री अपना कारोबार बढ़ा रही थी, गुलमर्ग को तो एशिया के टॉप स्की डेस्टिनेशनों में शामिल किया जा चुका था। सरकार की योजना थी कि 2025 तक जम्मू-कश्मीर को भारत का सबसे पसंदीदा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनाया जाए। इसके लिए हर साल 2,000 करोड़ के निवेश का लक्ष्य रखा गया है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य में सिर्फ प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि एडवेंचर टूरिज्म, वेलनेस टूरिज्म, सैफरन टूरिज्म, हॉर्टी-टूरिज्म, हेरिटेज और कल्चरल टूरिज्म को भी तरजीह दी जा रही थी। ट्रेकिंग, स्कीइंग, राफ्टिंग, रॉक क्लाइंबिंग, कैम्पिंग, और पर्वतीय पर्यटन जैसे विकल्पों में पर्यटकों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही थी। घाटी में हजारों परिवार टूरिज्म इंडस्ट्री से जुड़े हुए हैं। शिकारा चलाने वाले, गाइड, टैक्सी ड्राइवर, होटल स्टाफ, रेस्त्रां, कारीगर, हैंडीक्राफ्ट विक्रेता, सबकी आजीविका इसी पर टिकी है। सरकारी अनुमान है कि टूरिज्म सेक्टर हर साल करीब 50,000 नए रोजगार के अवसर पैदा कर रहा है। लेकिन पाकिस्तान परस्त आतंकियों ने पहलगाम में जिस तरह धर्म पूछ कर सैलानियों की हत्या की उससे कहीं ज्यादा कश्मीरियों के सपनों तथा उनके रोजगार की हत्या की है। क्योंकि कश्मीरियों की रोजीरोटी तो पर्यटन पर ही निर्भर है।

मुफ्त की रोटी तोड़ रहा पाक

यदि कोई विदेशी वीजा समाप्त होने के बाद लौटने की सूचना नहीं देता है तो फिर एलआईयू की जिम्मेदारी बनती है कि वो उसके बताए पते पर जाए और विदेशी नागरिक को गिरफ्तार करके डिपोर्ट कराए अथवा अवैध रूप से प्रवास करने के आरोप में उसे जेल भेजने की व्यवस्था करे।

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

भारत में लाखों की संख्या में पाकिस्तानी भारत में मुफ्त के राशन पर पल रहे है और केंद्र व राज्य सरकारें बेखबर रही। अब जब पहलगाम में पाकिस्तान के कायर आतंकियों ने बेकसूर और मासूम 27 हिंदुओं का नरसंहार किया तो पाकिस्तान की एक और जिहादी की परते खुल गई। भारत सरकार ने पाकिस्तानियों के वीजा रद्द किए तो पता चला कि यहां तो लाखों की संख्या में पाकिस्तानी वैध तथा अवैध रूप से रह रहे हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। मुफ्त का राशन खाकर भारत में गजवा-ए-हिंद की साजिश रच रहे हैं। बहुत सारे पाकिस्तानियों ने तो भारत में राशन कार्ड. आधार कार्ड, वोटर आईडी तक बनवा ली है। ऐसी महिलाओं की संख्या एक लाख के करीब है जो सिर्फ भारत में बच्चों को जन्म देने के लिए पाकिस्तान से भारत आती हैं और भारत की आबादी बढ़ाकर लौट जाती हैं। बड़ी संख्या में भारत की लड़कियों ने पाकिस्तानी लड़कों से शादी की है तो पाकिस्तान की लड़कियों ने भारतीय लड़कों से शादी की है, लेकिन शादी के 10 से 20 साल बाद भी इनमें से ज्यादातर ने न तो पाकिस्तान और न ही भारत की नागरिकता ली है। ये सभी वीजा लेकर रह रहे हैं या फिर अवैध प्रवास कर रहे हैं। बड़ी संख्या ऐसे पाकिस्तानियों की भी है जो वीजा लेकर भारत आए तो, लेकिन लौटे नहीं हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि पाकिस्तानियों के साथ 75 वर्षों से यह नरमी क्यों बरती जा रही थी? क्या राज्य सरकार का लोकल इंटेलिजेंस सिस्टम फेल है? क्योंकि किसी भी विदेशी को भारत आने के बाद लोकल इंटेलिजेंस यूनिट (एलआईयू) को सूचना देनी होती है कि वह कितने दिन के वीजा पर आया है, कहां-कहां उसे जाना है और कितने समय तक प्रवास करना है। वीजा की अवधि समाप्त होने पर जब कोई विदेशी अपने वतन लौटता है तो भी उसे एलआईयू को सूचित करना होता है। यदि कोई वीजा समाप्त होने के बाद लौटने की सूचना नहीं देता है तो फिर एलआईयू की जिम्मेदारी बनती है कि वो उसके बताए पते पर जाए और विदेशी नागरिक को गिरफ्तार करके डिपोर्ट कराए अथवा अवैध रूप से प्रवास करने के आरोप में उसे जेल भेजने की व्यवस्था करे।

अस्पतालों के पते पर वीजा लेकर पाकिस्तानी गायब

निराशाजनक और हैरान करने वाली बात ये है कि भारत के विदेश मंत्रालय ने 5200 पाकिस्तानियों को दिल्ली के तमाम अस्पतालों के पतों पर वीजा दे दिया था। अस्पतालों के पते पर वीजा लेकर भारत आए ये पाकिस्तानी अब गायब हैं, इसके विपरीत यदि कोई भारतीय बैंक में एकाउंट खोलने जाता है तो उससे एड्रस प्रूफ मांगा जाता है। कार खरीदते समय या ड्राइविंग लाइसेंस बनवाते समय उससे एड्रेस प्रूफ मांगा जाता है। पासपोर्ट बनवाने के लिए पते का सत्यापन किया जाता है। भारतीय से दफ्तरों के चक्कर लगवाए जाते हैं लेकिन देश-विरोधी गतिविधियों में शामिल होने वाले बहुत सारे संदिग्धों को दिल्ली के अस्पतालों के एड्रेस पर वीजा दे दिया जाता है। अब अस्पतालों के एड्रेस पर वीजा लेने वाला एक भी पाकिस्तानी नहीं मिल रहा है। वो अवैध प्रवासी बनकर भारत में आजाद घूम रहा है। गलती भले ही हमारे सिस्टम की है, लेकिन जब यही पाकिस्तानी घुसपैठिया भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल होता है तो दोष पाकिस्तान को दिया जाता है।

देश विरोधी गतिविधियों में शामिल बहुत से संदिग्धों को दिल्ली के अस्पतालों के एड्रेस पर वीजा लेकर आए, लेकिन अब अस्पतालों के एड्रेस पर वीजा लेने वाला एक भी पाकिस्तानी नहीं मिल रहा है, ये गलती भले ही हमारे सिस्टम की है, लेकिन जब यही पाकिस्तानी भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाया जाता है तो दोष पाकिस्तान को दिया जाता है।

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद जब केंद्र सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया तब यह हैरतअंगेज खुलासा हुआ, कि हजारों पाकिस्तानी नागरिक भारत में वैध और अवैध रूप से रह रहे हैं। इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) ने दिल्ली पुलिस को एक सूची सौंपी है, जिसमें 5200 पाकिस्तानी नागरिकों के नाम शामिल हैं। ये पाकिस्तानी दिल्ली में रह रहे हैं, इनमें से अधिकांश ने अपने पते के रूप में विभिन्न अस्पतालों का एड्रेस दर्ज करा रखा है, विशेष रूप से मध्य दिल्ली, जामिया नगर, मजनू का टीला, और नॉर्थ ईस्ट दिल्ली जैसे क्षेत्रों के अस्पतालों के पतों पर वीजा लिया गया है। इनमें कुछ पाकिस्तानियों ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसे प्रमुख अस्पतालों में मुफ्त इलाज भी कराया है। जबकि अन्य अस्पतालों के पते का उपयोग केवल निवास के रूप में लिखाया गया है। जाहिर है ऐसे हालातों से राष्ट्रीय सुरक्षा, सीमा प्रबंधन और सरकारी नीतियों की गंभीरता पर सवाल उठेंगे ही।

कहां गायब हो गए पाकिस्तानी

बड़ी संख्या में पाकिस्तानी नागरिक अल्पकालिक मेडिकल वीजा पर भारत आए थे, लेकिन वीजा की अवधि समाप्त होने के बाद वे लापता हो गए या स्थानीय मुस्लिम समुदायों में घुलमिल गए। कुछ ने फर्जी दस्तावेजों या भारतीय नागरिकों से शादी कर भारत में अपनी मौजूदगी को वैध बनाने की कोशिश की है। मजनू का टीला में लगभग 900 और सिग्नेचर ब्रिज के पास 600-700 पाकिस्तानी नागरिकों की मौजूदगी दर्ज की गई है। यह स्थिति दर्शाती है कि निगरानी तंत्र यानी लोकल इंटेलिजेंस सिस्टम में गंभीर खामियां थीं, जिसके कारण इतनी बड़ी संख्या में लोग बिना किसी वैध दस्तावेज के दिल्ली में रह रहे हैं। सरकारों की लापरवाही का एक प्रमुख कारण यह रहा कि विभाजन के बाद दोनों देशों के बीच लोगों का आवागमन सामान्य था। पर दोनों देश के बीच संबंध सामान्य कभी नहीं रहे। कई परोक्ष युद्ध हुए और बड़ी संख्या में अपरोक्ष युद्ध लगातार दशकों से चल रहे हैं। इसके बावजूद भारत के राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर और दिल्ली जैसे सीमावर्ती राज्यों व शहरों में पाकिस्तानी नागरिकों की मौजूदगी को तो सामान्य माना जा चुका है। उदाहरण के लिए जैसलमेर में 6,000 से अधिक पाकिस्तानी दीर्घकालिक वीजा पर रह रहे थे। पूरे राजस्थान में यह संख्या 20,000 तक थी। पंजाब में 83,000 पाकिस्तानी हैं। इस तरह की स्थिति को नजरअंदाज करना सरकारों की प्राथमिकता में कमी को दर्शाता है।

भारत की कमजोर वीजा नीति

आम तौर पर माना जाता रहा है कि भारत में वीजा नीतियां, विशेष रूप से पाकिस्तानी नागरिकों के लिए जटिल रही हैं। पर हाल ही में जिस तरह की घटनाएं सामने आ रही हैं, उससे तो यही लगता है कि भारत में राशन कार्ड बनवाने से भी आसान है यहां का वीजा लेना है, इसमें भी पाकिस्तानियों के लिए तो और भी आसान है। क्योंकि उन्हें भारत में आंख मूंदकर वीजा दिया जाता रहा है। वीजा तो दे दिया गया, लेकिन भारत आए पाकिस्तानियों की सख्ती से निगरानी नहीं की गई। उदाहरण के लिए, पाकिस्तानी नागरिक राधा भील अल्पकालिक वीजा पर भारत में रह रही थी। उसने अपने बच्चे को पाकिस्तान में छोड़ दिया था, लेकिन बाद में उसे भी भारत ले आई। यह दर्शाता है कि भारत में वीजा प्रणाली में उचित ट्रैकिंग और फॉलो-अप की गंभीर कमी है। सवाल यह उठता है कि इसके लिए जो जिम्मेदार हैं, क्या उनके खिलाफ कभी कोई कार्रवाई होगी? भारत की खुफिया एजेंसियां और स्थानीय पुलिस आतंकवाद और सीमा सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करती हैं, पर जिस तरह आए दिन पाकिस्तानी भारत में घुसकर आतंकी वारदात को अंजाम देते रहे हैं उससे तो भारतीय खुफिया एजेंसियों पर सवाल उठेंगे ही। जरा सोचिए जब 26-11 में मुंबई हमला, संसद पर हमला, पुलवामा हमला, कश्मीर में सेना के अफसरों पर हमले के बाद भी खुफिया विभाग के कान पर जूं नहीं रेंग रही है तो पाकिस्तानी अवैध प्रवासियों की चिंता कौन करेगा? अवैध प्रवासियों की पहचान और निगरानी तो पूरी दुनिया में सीमित रही है, पर दुनिया का कोई भी देश अपने दुश्मन देश के नागरिकों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करता जैसा भारत में हो रहा है। ये तब है जब देश में कट्टर राष्टवादी पार्टी यानी भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार है। अगर पहलगाम हमला न हुआ होता और मोदी सरकार पाकिस्तानियों को भारत से बेदखल न करती तो पंजाब में 83,000 और दिल्ली में 5,000 पाकिस्तानी नागरिकों की उपस्थिति का पता तक नहीं चलता।

- **आईबी ने दिल्ली पुलिस को 5200 पाकिस्तानियों की सूची सौंपी है, ये पाकिस्तानी दिल्ली में रह रहे हैं, इनमें से अधिकांश ने अपने पते के रूप में विभिन्न अस्पतालों का एड्रेस दर्ज करा रखा है, विशेष रूप से मध्य दिल्ली, जामिया नगर, मजनू का टीला, और नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के अस्पतालों के पतों पर वीजा लिया है।**
- **वीजा रद्द होने के बाद जब सुरक्षा एजेंसियां पाकिस्तानियों द्वारा दर्ज कराए गए पतों पर पहुंचीं, तो ज्यादातर लोग वहां से लापता मिले, स्थानीय संपर्कों से पूछताछ करने पर पता चला कि ये लोग 'घूमने' या 'काम से बाहर' जाने का बहाना बनाकर गायब हो गए और वापस नहीं लौटे, कुछ मामलों में तो पते फर्जी निकले।**

नष्ट किए पाकिस्तानी दस्तावेज

पाकिस्तान भारत के लिए सबसे बड़ी समस्या है। दूसरी बड़ी समस्या भारत में मौजूद पाकिस्तानियों की है। पहलगाम में हिंदू नरसंहार के बाद जब मोदी सरकार ने पाकिस्तान के लोगों को भारत छोड़ने का फरमान सुनाया तो पाकिस्तानियों ने एक नई चाल चल दी। भारत में अवैध रूप प्रवास कर रहे पाकिस्तानियों ने अपने पासपोर्ट और दस्तावेज फाड़कर एक नया संकट खड़ा कर दिया। इस हरकत ने उनकी वापसी की प्रक्रिया को और जटिल बना दिया है, क्योंकि बिना दस्तावेजों के पाकिस्तानी अधिकारी इन्हें स्वीकार करने से इनकार कर रहे हैं। पाकिस्तानी दस्तावेज फाड़ने वाले लोग पाकिस्तान वापस नहीं जाना चाहते, क्योंकि वहां 'न खाने को अनाज है, न रहने को जगह।' कुछ लोगों ने तो पाकिस्तान की बदहाल अर्थव्यवस्था और अस्थिरता का हवाला देकर भारत में ही रहने की गुहार लगाई। यह स्थिति भारत के लिए न सिर्फ प्रशासनिक, बल्कि सुरक्षा के लिहाज से भी गंभीर चुनौती है। फिर भी सुरक्षा एजेंसियां अवैध प्रवासियों की तलाश में पूरे देश में छापेमारी कर रही हैं, जिसमें चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। वीजा रद्द होने के बाद जब सुरक्षा एजेंसियां पाकिस्तानियों द्वारा दर्ज कराए गए पतों पर पहुंचीं, तो ज्यादातर लोग वहां से लापता मिले। स्थानीय संपर्कों से पूछताछ करने पर पता चला कि ये लोग 'घूमने' या 'काम से बाहर' जाने का बहाना बनाकर गायब हो गए और वापस नहीं लौटे। कुछ मामलों में तो पते फर्जी निकले, जिससे सुरक्षा एजेंसियों की मुश्किलें और बढ़ गईं। अब भारत सरकार के सामने सवाल यह है कि इन लोगों को कहां खोजा जाए। पाकिस्तान से भारत आने वाले नागरिकों में से अब तक केवल 1,000 के आसपास ही वापस पाक भेजे जा सके हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि पकड़े गए पाकिस्तानी लोगों में से कई ने अपने पाकिस्तानी पासपोर्ट और अन्य जरूरी दस्तावेज नष्ट कर दिए हैं। लिहाजा वाघा-अटारी बॉर्डर पर पाकिस्तानी अधिकारी इन्हें लेने से मना कर रहे हैं।

अभी तीन पापी बाकी

भारत ने पाक में तीन टारगेट बाकी हैं, इसमें सबसे टॉप पर आफिज सईद है जो लश्कर-ए-तैयबा का संस्थापक है, दूसरा जैश-ए-मोहम्मद का सरगना मसूद अजहर है जो पुलवामा हमले का मास्टरमाइंड है, तीसरा सैयद सलाउद्दीन हिजबुल मुजाहिदीन का सरगना है।

कृष्ण कुमार चौहान

पहलगाम में पाकिस्तान परस्त कायर आतंकियों ने धर्म पूछकर 27 हिंदुओं का नरसंहार किया जिससे भारत में जहां बदले की ज्वाला भड़क रही है वहीं पाकिस्तान हुक्मरानों और पाक सेना के पैर कांप रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिना पाकिस्तान का नाम लिए कहा था कि जिन्होंने 27 लोगों का नरसंहार किया है उन्हें और उनके सरपरस्तों को कल्पना से बड़ी सजा दी जाएगी। इसके बाद से पाकिस्तान थर-थर कांप रहा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर नरेंद्र मोदी क्या सजा देने वाले हैं? इसके बाद 27 हिंदू सैलानियों की हत्या की जिम्मेदारी लेकर बहादुरी दिखा रहे आतंकी संगठन टीआरएफ की भी हेकड़ी निकल गई और वो हिंदुओं के नरसंहार से मुकर गया। टीआरएफ ने दावा किया कि उसका सोशल मीडिया अकाउंट हैक कर हमले की जिम्मेदारी लेने संबंधी पोस्ट डाली गई है। खैर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, एनएसए अजीत ढोभाल, सीडीएस अनिल चौहान, आर्मी चीफ उपेंद्र द्विवेदी, वायुसेना अध्यक्ष, नौसेना अध्यक्ष ने लगातार बैठकें कर आतंक की बीमारी को जड़ समाप्त करने की रणनीति बनाई। आतंकियों और उसके मददगारों से निपटने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को खुली छूट दी। आतंक की बीमारी को जड़ से खत्म करने के कई मायने निकाले जा रहे हैं। रक्षा विशेषज्ञ मान रहे हैं कि अब पहलगाम में हमला करने वालों के साथ उनके मददगारों को भी समाप्त करने का समय आ गया है। मेजर जनरल (रिटायर) केके सिन्हा, सेवानिवृत्त मेजर जनरल जीडी बख्शी जैसे पूर्व सेना अधिकारी कह रहे हैं कि इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कुछ ऐसा करने वाले हैं जिससे पाकिस्तान में आतंक की फैक्टरी पर ही ताला लग जाएगा। किंतु भारत के तीन टारगेट अभी बाकी हैं। इसलिए आपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं किया गया है।

टारगेट पर सईद, मसूद और सलाउद्दीन

पाकिस्तान थ्री अ पर चलता है, पहला अल्लाह, दूसरा आर्मी, तीसरा आतंकवाद, इसलिए आतंक के तीन टारगेट में सबसे टॉप पर हाफिज सईद है। लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद को 2008 मुंबई हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है जिसे संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक आतंकी घोषित कर रखा है। हाफिज और लश्कर का हेडक्लार्टर भारतीय सेना के निशाने पर था। लश्कर का हेडक्वार्टर पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुरिदके में था। लेकिन लाहौर में हाफिज सईद के गुप्त ठिकानों का पता चलने के बाद हलचल बढ़ गई है। पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने अपनी सैन्य कार्रवाई में हाफिज सईद के ठिकानों पर हमला किया। क्योंकि हाफिज सईद और लश्कर-ए-तैयबा भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा है। वो कश्मीर और देश के अन्य हिस्सों में आतंकी गतिविधियों को प्रायोजित करता रहा है। भारत के टारगेट पर आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद का सरगना मौलाना मसूद अजहर भी है। मसूद अजहर 2019 के पुलवामा हमले और अन्य आतंकी गतिविधियों का मास्टरमाइंड है। 14 फरवरी 2019 को जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षा कर्मियों को ले जाने वाले सीआरपीएफ के वाहनों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ था, जिसमें 40 भारतीय सुरक्षा कर्मियों की जान गई थी। इसलिए मसूद अजहर भी संयुक्त राष्ट्र का वैश्विक आतंकवादी है। पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई में भारतीय सेना ने मसूद अजहर और उसके जैश-ए-मोहम्मद के ट्रेनिंग कैंप को ध्वस्त कर दिया है। जैश-ए-मोहम्मद के ट्रेनिंग कैंप पीओके और पंजाब के बहावलपुर में था। पीओके में रावलकोट और कोटली जैसे क्षेत्रों में जैश के कई लॉन्च पैड और ट्रेनिंग कैंप हैं। जैश-ए-मोहम्मद ने कश्मीर में कई आतंकी हमलों को अंजाम दिया है। 2019 में भारतीय सेना ने बालाकोट एयर स्ट्राइक कर जैश के ट्रेनिंग कैंप को नष्ट कर दिया था। यही कैंप भारत की सुरक्षा के लिए खतरा था। तीसरे नंबर हिजबुल मुजाहिदीन का सरगना सैय्यद सलाउद्दीन है जो जम्मू-कश्मीर में आतंक फैलाता रहा है। ये तीन टारगेट भारत के लिए अभी भी हैं। इनके अलावा खुफिया एजेंसियों द्वारा 12 और आतंकी ठिकानों को पाकिस्तान में चिह्नित किया है।

पांच आतंकियों की पहचान

ऑपरेशन सिंदूर में मारे गए पांच खुंखार आतंकियों की पहचान हो गई है। इनमें मुदस्सर खादियन खास उर्फ मुदस्सर उर्फ अबू जुंदाल लश्कर-ए-तैयबा का आंतकी है और मुदस्सर खाडियान खास मरकज तैबा, मुरिदके का प्रमुख था। दूसरा हाफिज मुहम्मद जमील हाफिज जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी था। यह मौलाना मसूद अजहर का साला था। यही मरकज सुब्हान अल्लाह, बहावलपुर का प्रभारी था। मुस्लिम युवाओं को कट्टरपंथी बनाने और फंडिंग में सक्रिय भूमिका निभाता था। तीसरा मोहम्मद यूसुफ अजहर उर्फ उस्ताद जी उर्फ मोहम्मद सलीम उर्फ घोसी साहब जैश-ए-मोहम्मद से जुड़ा आतंकी था। यह मौलाना मसूद अजहर का भाई था और आतंकियों को हथियारों की ट्रेनिंग देता था। जम्मू-कश्मीर में कई आतंकी हमलों में शामिल रहा। आईसी-814 विमान अपहरण मामले में भारत का मोस्टवांटेड था। चौथा खालिद उर्फ अबू अकाशा लश्कर-ए-तैयबा का आतंकी था जो जम्मू-कश्मीर में कई आतंकी हमलों में शामिल रहा। यह अफगानिस्तान से हथियारों की तस्करी करता था। पांचवां मोहम्मद हसन खान जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी ऑपरेशनल कमांडर मुफ्ती असगर खान कश्मीरी का बेटा था। जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमलों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था

मुनीर के खिलाफ मार्च 2025 में जूनियर अधिकारियों ने खुला पत्र लिखकर उनके इस्तीफे की मांग की थी, जिसमें सेना को राजनीतिक उत्पीड़न का हथियार बनाने का आरोप लगा था, इसलिए पाकिस्तान में आसीम मुनीर के खिलाफ विद्रोह हो सकता है, इस विद्रोह में पाकिस्तानी सेना के साथ जनता भी आगे आ सकती है।

पहलगाम का प्लान रावलपिंडी में बना

पाकिस्तानी आर्मी चीफ असीम मुनीर के खिलाफ सिर्फ भारत में ही ज्वाला नहीं भड़क रही बल्कि पाकिस्तान के राजनीतिक दलों में भी जबरदस्त गुस्सा है। पाक के पूर्व पीएम इमरान खान तो सेना के खिलाफ बोलने के लिए जाने जाते रहे हैं। वो असीम मुनीर की व्यक्तिगत आलोचना भी करते रहे हैं। उनकी पार्टी के फवाद खान, उमर अयूब खान, महमूद खान अचकई आदि गाहे बगाहे असीम मुनीर को टारगेट करते रहे हैं। पर मौलाना फजलुर रहमान का मुनीर को टारगेट करना महत्वपूर्ण माना जा रहा है। फजलुर रहमान ने सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर के कश्मीर और हिंदू-मुस्लिम विभाजन पर दिए बयान को गुलामी वाली सोच करार दिया और कहा कि इससे भारत-पाक तनाव बढ़ा है। रहमान जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम का प्रमुख और पाकिस्तान का धार्मिक व राजनीतिक नेता हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के समय रहमान का पाकिस्तानी सरकार और सेना की नीतियों की तीखी आलोचना बहुत मायने रखती है। रहमान ने बलूचिस्तान में सेना की कार्रवाइयों को लेकर 1971 जैसे हालात की चेतावनी दी, जब पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर बांग्लादेश बना था। पाकिस्तानी सेना के पूर्व अधिकारी आदिल राजा की आलोचना भी मायने रखती है। आदिल राजा ने दावा किया कि पहलगाम हमला जनरल असीम मुनीर के इशारे पर हुआ, ताकि उनके खिलाफ चल रहे भ्रष्टाचार और नीतिगत विफलताओं के मामलों से ध्यान हटाया जा सके। उन्होंने दावा किया कि पहलगाम हमले की साजिश रावलपिंडी में रची गई थी। पहलगाम हमले के बाद सोशल मीडिया पर पाक आर्मी चीफ आसीम मुनीर के लापता होने या रावलपिंडी के बंकर में छिपने की अफवाहें उड़ीं। मुनीर के कश्मीर और हिंदू-मुस्लिम विभाजन पर बयान को उन्मादी और नफरत फैलाने वाला बताया गया। मुनीर के खिलाफ मार्च 2025 में जूनियर अधिकारियों ने खुला पत्र लिखकर उनके इस्तीफे की मांग की थी। जिसमें उन पर सेना को राजनीतिक उत्पीड़न का हथियार बनाने का आरोप लगा था। इसलिए पाकिस्तान में आसीम मुनीर के खिलाफ विद्रोह हो सकता है। इस विद्रोह में पाकिस्तानी सेना के साथ जनता भी आगे आ सकती है।

पाकिस्तान के खोजी पत्रकार एजाज सईद का दावा है कि जिनका अतीत में दहशतगर्दी से ताल्लुक रहा है उन सभी की जान को खतरा है, इनमें लशकर-ए-तैयबा चीफ हाफिज सईद, जैश-ए-मोहममद सरगना मसूद अजहर, मसूद अजहर का भाई मुफ्ती अब्दुल रऊफ, उमर सईद शेख और मौलाना फजलुर रहमान खलील का नाम भी शामिल है।

पाक में कड़ी सुरक्षा में दहशतगर्द

भारतीय खुफिया एजेंसियों को जानकारी मिली है कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने हाफिज सईद को एबटाबाद स्थित अपने सैन्य सेफ हाउस में रखा है। ये वो एबटाबाद है जहां एक समय अल-कायदा प्रमुख ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान ने छिपा कर रखा था, जो 2011 में अमेरिकी एयर स्ट्राइक में मारा गया था। अब इस सुरक्षित एबटाबाद इलाके में हाफिज सईद को छिपाया गया है, ताकि भारत के कहर से उसे बचाया जा सके। हाफिज सईद को 27 अप्रैल को मुरीदके में एक बड़े जलसे में शामिल होना था, लेकिन यह जलसा अचानक रद्द कर दिया गया। पाकिस्तान इसकी वजह यह बता रहा है कि भारतीय फौज उसके ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक या टारगेटेड अटैक कर सकती है। हाफिज सईद ही नहीं पाकिस्तान की फौज ने जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मसूद अजहर को भी सेफ जोन में पहुंचा दिया है। खुफिया जानकारी है कि मसूद अजहर को गुप्त स्थान पर छिपाया गया है। आईएसआई ने उसकी सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए हैं। यानी मसूद अजहर पूरी तरह अंडरग्राउंड हो चुका है। पाकिस्तान में खौफ का आलम ये है कि पीओके में कुछ लॉन्चिंग पैड भी खाली करा दिए हैं। यानी सभी आतंकियों को पाकिस्तान फौज अथवा सुरक्षित ठिकानों में शिफ्ट कर दिया है।

दो साल में 20 ठोके, 16 टारगेट पर

पाकिस्तान में खौफ इसलिए भी है कि पिछ्ले 2 सालों में पाकिस्तान में चुन-चुनकर भारत के मोस्ट वांटेड आतंकवादियों को ठिकाने लगाया जा चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि कम से कम भारत के 20 मोस्ट वांटेड आतंकवादियों की पाकिस्तान में अज्ञात हमलावरों ने 72 हूरों के पास पहुंचा दिया है। ये सभी आतंकी भारत में वांटेड थे और आतंकी संगठन चलाने वालों के करीबी रिश्तेदार या खास थे। पाकिस्तान के मशहूर खोजी पत्रकार एजाज सईद ने पाकिस्तान के पत्रकार आसिफ बशीर चौधरी के साथ यूट्यूब चैनल पर दावा किया कि कम से कम पाकिस्तान में 16 और ऐसे लोग हैं, जिनकी जान को खतरा है। एजाज सईद आईएसआई की आलोचना के लिए भी जाने जाते हैं। एजाज सईद को पाकिस्तान की सरकार की आलोचना करने और खुफिया रिपोर्ट्स को उजागर करने के लिए भी जाना जाता है। उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों का दावा है कि पाकिस्तान में हो रही इन हत्याओं के पीछे भारत की खुफिया एजेंसी रॉ का हाथ है। एजाज सईद का दावा है कि ऐसे लोग, जिनका अतीत में दहशतगर्दी से ताल्लुक रहा है उन सभी की जान को खतरा है। इनमें लशकर-ए-तैयबा चीफ हाफिज सईद, जैश-ए-मोहममद सरगना मसूद अजहर, मसूद अजहर का भाई मुफ्ती अब्दुल रऊफ, उमर सईद शेख और मौलाना फजलुर रहमान खलील का नाम शामिल है। 16 लोगों की लिस्ट में ये 4 वो नाम हैं, जिन्हें लोग जानते हैं। लेकिन बाकी नाम ऐसे हैं, जिनके नाम ज्यादा लोग नहीं जानते हैं, लेकिन उनके किसी ना किसी तरह से भारत में दहशतगर्दी से संबंध रहे हैं इसलिए उनकी जान को खतरा है। एजाज सईद का दावा है कि असल में जितने दहशतगर्द मारे गए उनका आंकड़ा हकीकत में कहीं ज्यादा है। एजाज सईद ने दावा किया कि हाफिज सईद को मारने की पहले भी कोशिश की गई थी। लेकिन उसकी जान बच गई थी। हाफिज सईद के ऊपर खतरनाक हमला किया गया था लेकिन गाड़ी फंसने की वजह से हमला कामयाब नहीं हो पाया था।

फिल्म

जग्गू दादा से जैकी श्रॉफ तक

जैकी को करियर का पहला ऑफर बस स्टैंड पर मिला था, नौकरी की तलाश में भटकने के बाद एक दिन जैकी बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रहे थे, वहां खड़े एक शख्स ने उनकी हाइट देखकर पूछा, 'क्या आप मॉडलिंग में दिलचस्पी लेंगे?' जवाब में जैकी ने कहा, 'क्या आप पैसे देंगे?' बस यहीं से जैकी श्रॉफ की अभिनय पारी शुरू हो गई।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

बॉलीवुड इंडस्ट्री में जैकी श्रॉफ या 'जग्गू दादा' वो नाम है, जो अपनी मेहनत के दम पर बॉलीवुड की बहुत बड़ी हस्ती बना है। जैकी की खुद की कहानी भी किसी फिल्म से कम नहीं है। एक गरीब परिवार में पैदा हुए जैकी श्रॉफ अब मुंबई के पॉश इलाके में शानदार बंगले में रहते हैं। जैकी श्रॉफ बड़े दिल वाले शख्स हैं। सामाजिक कार्यों में जैकी हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। मुंबई में कई गरीब परिवार तो ऐसे हैं जिनके मुश्किल वक्त में जैकी श्रॉफ हमेशा उनके साथ खड़े रहे हैं। कई गरीब बच्चों की शिक्षा का खर्च और कई बुजुर्गों व बीमारों के इलाज का जिम्मा भी जैकी श्रॉफ ही उठाते हैं। यही वजह है कि 1 फरवरी 1957 को वालकेश्वर, मुंबई के तीन बत्ती एरिया में जन्मे जैकी श्रॉफ मुंबई के गरीब तबके के बीच बहुत ज्यादा पॉप्युलर हैं। उनके पिता गुजराती और मां कजाकिस्तान की थीं। करीब नौ भाषाओं के जानकार जैकी का असली नाम जयकिशन काकुभाई श्रॉफ है। जैकी का जन्म गरीब परिवार में हुआ था। कहा जाता है कि जैकी हमेशा अपने चॉल के लोगों की मदद करते थे, इसलिए उनका नाम 'जग्गू दादा' पड़ गया। चॉल में सभी उन्हें इसी नाम से बुलाते थे। गरीबी के कारण जैकी ने 11वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी और नौकरी की तलाश करने लगे। उन्हें खाना बनाने का बहुत शौक था, इसलिए वे नौकरी के लिए ताज होटल गए, लेकिन उन्हें वहां नौकरी नहीं मिली। टपोरी नाम से मशहूर एक्टर जैकी श्रॉफ यूं तो होटल ताज में कुक बनना चाहते थे, पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था और वह बॉलीवुड पहुंच गए। उन्होंने एक से बढ़कर एक हिट फिल्में दीं। शानदार अभिनय के लिए उन्हें कई पुरस्कार भी मिले। कहते हैं कि किस्मत कब बदल जाए इसका पता नहीं, जैकी के साथ भी ऐसा ही हुआ था। फिल्मों में आने से पहले उन्होंने होटल ताज में शेफ अपरेंटिस की नौकरी के लिए कोशिश की थी, लेकिन होटल मैनेजमेंट की अनिवार्य डिग्री ना होने की वजह से होटल ताज ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया था। बाद में जैकी ने फ्लाइट अटेंडेंट की पोस्ट के लिए एयर इंडिया में अपनी किस्मत आजमाई, लेकिन कम पढ़ाई के कारण उन्हें वहां भी रिजेक्ट कर दिया गया। फिर एक दिन जैकी श्रॉफ बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रहे थे। इस दौरान वहां एक शख्स आया और उनसे पूछा कि 'मॉडलिंग करोगे।' जैकी जो उस समय एक भी रूपया नहीं कमा रहे थे। उन्होंने उस शख्स से कहा 'पैसे मिलेंगे।' इसके बाद जैकी श्रॉफ की किस्मत ने एकदम से करवट ली। जैकी ने उसके बाद लंबे समय तक मॉडलिंग की। अभिनेता के तौर पर जैकी की डेब्यू 1983 में आई फिल्म 'हीरो' को माना जाता है, लेकिन इस फिल्म से पहले उन्होंने देव आनंद की फिल्मों में भी काम किया था। वह देव आनंद की फिल्म 'हीरा-पन्ना' और 'स्वामी दादा' में छोटे से रोल में नजर आए थे।

फिल्म 'हीरा पन्ना' ने बनाया हीरो

जैकी श्रॉफ ने अपने करियर में करीब 250 फिल्मों में काम किया है। उन्हें करियर का पहला ऑफर बस स्टैंड पर मिला था। क्योंकि कई दिनों से नौकरी की तलाश में भटकने के बाद एक दिन जैकी बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रहे थे, वहां खड़े एक शख्स ने उनकी हाइट देखकर पूछा, 'क्या आप मॉडलिंग में दिलचस्पी लेंगे?' जवाब में जैकी ने कहा, 'क्या आप पैसे देंगे?' बस यहीं से जैकी श्रॉफ की अभिनय पारी शुरू हो गई। जैकी ने 1973 में फिल्म 'हीरा पन्ना' से इंडस्ट्री में कदम रखा। इसमें उनका नेगेटिव रोल था। इसके बाद उनकी फिल्म 'स्वामी दादा' आई। लेकिन जैकी श्रॉफ की किस्मत बदली सुभाष घई की फिल्म 'हीरो' के बाद। काफी संघर्ष के बाद जैकी श्रॉफ को सुभाष घई की फिल्म 'हीरो' में काम करने का मौका मिला। फिल्म जबर्दस्त हिट रही और इसके बाद जैकी श्रॉफ को पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। 80 के दशक में अपने एक्शन से वे दर्शकों के दिलों में इस कदर उतरे कि हर निर्माता-निर्देशक उन्हें अपनी फिल्म में लेने को उतवाले रहने लगे। उनके घर निर्देशकों की कतार लगने लगी और घर कौन सा था? एक चॉल में छोटा सा ठीया। यहीं से शुरू हुई थी जैकी श्रॉफ के हीरो बनने की कहानी, जो किसी फिल्मी स्क्रिप्ट जैसी ही लगती है। जैकी श्रॉफ ने काफी संघर्ष के बाद बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाई। उनका बचपन मुंबई के चॉल में गुजरा। जहां से निकल कर उन्होंने एक्शन हीरो के रूप में खुद को इंडस्ट्री में स्थापित किया। रोमांटिक हीरो के रूप में भी जैकी को खूब पसंद किया गया। जिससे दुनियाभर में जैकी की पहचान बनी। कहा जाता है कि जैकी श्रॉफ की दीवानगी का उस दौर में आलम यह था कि अगर वे टॉयलेट में होते थे तो निर्माता-निर्देशक टॉयलेट के बाहर खड़े होकर भी अभिनेता को अपनी फिल्म में लेने के लिए इंतजार करते थे। जैकी श्रॉफ गरीबी और तंगहाली से उठकर फिल्मों की दुनिया में आए थे और वो इसकी कीमत बखूबी जानते थे। शायद यही वजह थी कि फिल्म 'हीरो' हिट होने के बाद भी जैकी ने चॉल में रहना नहीं छोड़ा था। वे सालों तक यही रहते रहे। जैकी श्रॉफ की कुछ फिल्मों को उसी चॉल में शूट भी किया गया था, जहां वे रहते थे। जैकी श्रॉफ ने 1987 में आयशा से लव मैरिज की। उनके दो बच्चे टाइगर श्रॉफ और कृष्णा श्रॉफ है।

फिल्मों में आने से पहले जैकी ने होटल ताज में शेफ अपरेंटिस की नौकरी की कोशिश की थी, लेकिन होटल मैनेजमेंट की डिग्री ना होने से होटल ताज ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया, जैकी ने फ्लाइट अटेंडेंट के लिए एयर इंडिया में किस्मत आजमाई, लेकिन कम पढ़ाई के कारण उन्हें वहां भी रिजेक्ट कर दिया था।

गर्लफ्रेंड से झूठ बोला

स्कूल में जैकी का एडमिशन कराने के लिए उनकी मां और उनके पिता के बीच काफी झगड़ा हुआ था। दरअसल जैकी के पिता चाहते थे कि उनका दाखिला किसी अच्छे स्कूल में कराया जाए। जबकि मां जैकी को अपने से दूर नहीं भेजना चाहती थी। वो कहती थी कि स्कूल में उनका बेटा बिगड़ जाएगा। इस बात को लेकर जैकी के माता-पिता के बीच खूब झगड़ा होता था। मां किसी भी हाल में जैकी को स्कूल में नहीं भेजना चाहती थी। लेकिन पिता जैकी को स्कूल भेजने की जिद पर अड़े थे। फाइनली वो लड़ाई जैकी के पिता ने जीती और उनका दाखिला एक किंडरगार्टन स्कूल में कराया गया। जैकी की मां खुद उन्हें स्कूल लेकर जाती थी और स्कूल से वापस लाती थी। जयकिशन काकूभाई श्रॉफ का नाम जैकी कैसे पड़ा, ये बात भी जानने लायक है। ये उन दिनों की बात है जब जैकी आठवीं क्लास में थे। एक दिन पूरी क्लास, टीचर के इंतजार में बैठी थी। तभी एक लंबा सा लड़का क्लास में आया। क्लास को लगा कि ये लड़का ही टीचर है। सो पूरी क्लास उसे गुड मॉर्निंग विश करने के लिए खड़ी हो गई। वो लड़का बिना कुछ बोले जयकिशन श्रॉफ के पास जाकर बैठ गया और बताया कि वो टीचर नहीं, स्टूडेंट है। उस दिन सारी क्लास का हंस-हंसकर पेट दर्द हो गया था। उस लड़के के साथ जयकिशन की बढ़िया दोस्ती हो गई थी। वक्त के साथ उसी लड़के ने उन्हें जैकी कहना शुरू कर दिया। इस तरह जयकिशन श्रॉफ, जैकी श्रॉफ बन गए। स्कूल के दिनों में जैकी श्रॉफ की एक गर्लफ्रेंड भी हुआ करती थी। जैकी ने उसे बता रखा था कि वो मालाबार हिल में रहते हैं। मालाबार हिल एक पॉश इलाका था। जैकी की गर्लफ्रेंड को लगता था कि जैकी किसी अमीर परिवार से ताल्लुक रखते हैं। जबकि सच ये था कि जैकी मालाबार हिल के पास की चॉल में अपने माता-पिता के साथ रहते थे। एक दिन जैकी की गलफ्रेंड उनसे जिद करने लगी कि वो उनके घर जाना चाहती है। काफी देर तक तो जैकी उसे टालते रहे। लेकिन जब वो नहीं मानी तो जैकी ने उससे झूठ बोला कि अब मैं घर पर नहीं बल्कि एक चॉल में अकेला किराए पर रूम लेकर रहता हूं। जैकी की गर्लफ्रेंड ने उनका वो रूम देखने की जिद की। जैकी ने उसे अपनी चॉल का एड्रेस दिया और अगले दिन आने के लिए बोला। फिर घर जाकर जैकी ने अपनी मां को सारी बात बताई और उनसे रिक्वेस्ट की कि आप तब तक नीचे पड़ोसी के घर में बैठ जाना जब तक कि वो यहां रहेगी। ये सुनकर मां को बहुत गुस्सा आया। लेकिन बेटे की हालत समझते हुए आखिरकार मां ऐसा करने के लिए मान गई। कुछ देर बाद जब जैकी की गर्लफ्रेंड चली गई तो मां ने जैकी को समझाया कि अगर वो तुझसे प्यार करती है तो तुम जैसे हो वैसे ही प्यार करेगी। तुम्हें झूठ बोलने की कोई जरूरत नहीं है।

जैकी को सुभाष घई की फिल्म 'हीरो' में काम करने का मौका मिला, फिल्म जबर्दस्त हिट रही, इसके बाद जैकी श्रॉफ ने पीछे मुड़कर नहीं देखा, 80 के दशक में अपने एक्शन से वे दर्शकों के दिलों में इस कदर उतरे कि हर निर्माता-निर्देशक उन्हें अपनी फिल्म में लेने को उतवाले रहने लगे।

गर्लफ्रेंड ने नाता तोड़ा

जैकी ने आयशा से शादी की है। दोनों की शादी से जैकी के माता-पिता को तो कोई परेशानी नहीं थी। लेकिन आयशा की मां जरूर इस शादी के खिलाफ थी। जैकी एक मामूली सी चॉल के रहने वाले थे। जबकि आयशा एक पॉश इलाके में एक शानदार फ्लैट में रहती थी। आयशा ने जब अपनी मां को जैकी के बारे में बताया तो वो काफी नाराज हुई। आयशा जब शादी करके जैकी की चॉल में आई तो उनकी मां और ज्यादा भड़क गई। लेकिन शादी के कुछ सालों बाद आखिरकार आयशा की मां को भी जैकी को दामाद के तौर पर स्वीकारना पड़ा। हालांकि जैकी की पहली गर्लफ्रेंड कोई कोर्स करने यूएस चली गई थी। वो जैकी से वादा करके गई थी कि जब वो वापस आएगी तो शादी जरूर करेगी। लेकिन इसी दौरान जैकी और आयशा के बीच रिलेशन शुरू हो गया। जैकी ने जब आयशा को अपनी पहली गर्लफ्रेंड के बारे में बताया तो आयशा ने जैकी की पहली गर्लफ्रेंड को एक चिट्ठी लिखी। उस चिट्ठी में आयशा ने लिखा कि मैं भी जैकी से प्यार करती हूं और जैकी भी मुझसे प्यार करते हैं। लेकिन मैं तुम्हारे साथ कुछ गलत नहीं होने देना चाहती। इसलिए जब तुम भारत वापस आ जाओगी तो हम दोनों जैकी से शादी करेंगे और एक साथ बहनों की तरह रहेंगे। जैकी की पहली गर्लफ्रेंड ने इसके बाद जैकी से अपना रिश्ता हमेशा के लिए खत्म कर लिया था।

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष-

इस माह अतिआक्रामकता से बचिए, वाणी पर संयम अति आवश्यक है। साहस और पराक्रम निरंतर बनाए रखिए, यात्राओं से लाभ मिलेगा मित्रों से समागम के अवसर उपलब्ध होंगे। शत्रु निराश हैं और निराश ही रहेंगे, भागीदारी के कार्यों में सफलता हाथ लगेगी। अविवाहितों को विवाह के प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में स्थानांतरण के योग हैं। पुरानी बीमारी में आराम मिलेगा।

वृषभः-

इस माह क्रोध करने से काम बिगड़ सकते हैं, पैरों में किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। मध्य माह में परिणाम अनुकूल होंगे। ऋण लेने का मार्ग सुगम होने जा रहा है। बुद्धि कौशल दिखाने का अवसर प्राप्त हो सकता है। आपके अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होगी पुराने रोग के उभरने की संभावना है। धन के लेन देन में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अनिर्णय की स्थिति निर्मित होगी।

मिथुनः-

इस माह रक्तदान का अवसर मिल सकता है, पुण्य के इस मौके का लाभ अवश्य लीजिए। जीवनसाथी से तालमेल बनाने का प्रयास कीजिए। मित्रों के साथ घूमने जा सकते हैं। घर में कोई सदस्य बढ़ सकता है। माता के स्वास्थ्य के प्रति आपकी चिंता कम होगी। ननिहाल के किसी व्यक्ति से मुलाकात संभव है। विरोधियों की खुराफातें बढ़ सकती हैं। जलीय रोगों के होने की संभावना प्रबल है।

कर्कः-

इस माह सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, प्रमोशन होने की प्रबल संभावना है। आर्थिक लाभ का प्रचुर अवसर उपलब्ध होगा। सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। मेहनत का फल आपको जरूर मिलेगा धैर्य से काम लीजिए। संचार माध्यम से कोई आनंददायक सूचना मिलेगी। अनावश्यक क्रोध आपके बनते हुए काम बिगाड़ सकता है। असत्य भाषण से बचने का प्रयास कीजिए। गुमराह होने से बचें।

सिंहः-

इस माह अचानक कोई धार्मिक यात्रा हो सकती है। भाग्य प्रबल रहेगा, सम्मान बढ़ेगा। नई नौकरी की तलाश पूरी होगी। सहयोगियों की संख्या में वृद्धि होगी। मन पसंद भोजन की प्राप्ति होगी। परिवार के लोगों से मेल मिलाप के अवसर प्राप्त होंगे। अकारण क्रोध को टालें वरना आपके बनते काम बिगड़ सकते हैं। वाणी संयमित रखने से आपके रुके काम बनने का योग प्रबल है।

कन्याः-

इस माह लम्बी दूरी की यात्रा होगी, खर्च में अचानक वृद्धि होगी। सीने का पुराना रोग की उभरने की संभावना बन रही है। पड़ोसियों से संबंधों में सुधार होगा। मान सम्मान में वृद्धि के अवसर हैं। आलस्य से काम बिगड़ सकते हैं किसी कारण से अस्पताल जाने की संभावना है। लाभ के प्रचुर अवसर मिलेंगे मनपसंद नौकरी मिलेगी। जीवनसाथी से तालमेल बनाए रखना आवश्यक है।

तुलाः-

इस माह ललित कलाओं में अचानक रुझान बढ़ेगा, जीवनसाथी से तालमेल बैठाए रखना कठिन होगा। मनपसंद उपहार की प्राप्ति संभव है। मेडिटेशन कर सकते हैं। मनमुताबिक परिणाम मिलने में संदेह रहेगा। घर से दूर यात्रा पर जाना पड़ सकता है। ज्यादा ठंडा पेय पदार्थ का उपयोग न करें तकलीफ बढ़ सकती है, आप मेहनती हैं और अपनी मेहनत के बल पर सब कुछ पा सकेंगे।

वृश्चिकः-

इस माह अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना होगा, ज्यादा व्यसन आपकी सेहत के लिए हानिकारक रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। पीठ की तकलीफ बढ़ सकती है। खरीददारी के लिए बाहर जा सकते हैं। आय के स्रोत में वृद्धि होगी। आपकी मनोकामना की पूर्ति संभव है, किसी कारण से अस्पताल जाने की संभावना है। लड़ाई झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करें।

धनुः-

इस माह आप जिस मानसिक बिखराव के दौर से गुजर रहे हैं उससे निकलने में अभी कुछ समय और लगेगा। स्वाभाविक परिवर्तन आपके लिए आगे चलकर सुखद होगा। बड़े भाइयों से सहयोग मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। पिता व भाई से किसी प्रकार की मदद मिल सकती है। व्यापार और व्यवसाय में सफलता मिलेगी। आलस्य बढ़ने की संभावना है जो हानि के योग बनाएगा।

मकरः-

इस माह अनिर्णय की स्थिति रहेगी, संभल कर चलिए, मुंह के बल गिर सकते हैं। खर्चों से पार पाना मुश्किल होगा। समाज में मान सम्मान बढ़ेगा। किसी धर्म गुरु से मुलाकात होने की संभावना है। ससुराल के लोगों से मुलाकात हो सकती है। किसी गलत विधि से धन आपके हाथ में आएगा। न्यायालय में विचाराधीन किसी प्रकरण में विजय मिलने के योग प्रबल हो रहे हैं। सावधानी बरतें।

कुंभः-

इस माह धन लाभ के अत्याधिक अवसर प्राप्त होंगे। बड़े भाई के सहयोग से रुके हुए कार्य बनेंगे जिससे हिम्मत बढेगी, संचार माध्यम से धन अर्जित करेंगे। धार्मिक यात्रा होगी। ससुराल के लोगों से मुलाकात हो सकती है। अकस्मात धन की प्राप्ति हो सकती है। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है। मास के अंत से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

मीनः-

इस माह रुका हुआ धन प्राप्त होने के अवसर मिलेंगे। बैंक बैलेंस बढ़ेगा, वाणी पर संयम रखें। यात्रा की प्रबल संभावना है। यात्रा में अपने सामान का ध्यान जरूर रखें। रोमांटिक मूड में रहेंगे एवं घूमने फिरने जा सकते हैं। भाग्य की वजह से कई रुके काम बन सकते हैं। कोई शत्रु अनायास ही सामने आ सकता है। वाहन आदि का प्रयोग सावधानी से करें। दुर्घटना में चोट आदि का भय रहेगा।